RNI No. BIHHIN/2007/22741

राष्ट्रीय मासिक पत्रिका

मूल्य: ₹15/-

उभरता बिहार

सच्चाई, ऊर्जा, सकारात्मक विचार

वर्ष : 14, अंक : 01, जुलाई 2021

www.ubhartabihar.com | Email : ubhartabihar@gmail.com

कोरोना की दूसरी लहर

भारत पर क्यों बरपा इतना कहर?

LAVANYA
ESTATE PRIVATE LIMITED

Most Trusted & Fastest Growing Real Estate Company

WASIF ALI

Director

Shop No. 59-60, 1st Floor, Adharsheela Complex, Near R.B.I
South Gandhi Maidan, Patna, Bihar, Mob: 7545066929, 7488100729

उभरता बिहार

वर्ष : 14, अंक : 1, जुलाई 2021

RNI No. BIHHIN/2007/22741

संपादक

राजीव रंजन

छायाकार

विनोद राज

विधि सलाहकार

उपेन्द्र प्रसाद

चंद्र नारायण जायसवाल

साज-सज्जा

मयंक शर्मा

प्रशासनिक कार्यालय

सी-49 हाऊसिंग कॉलोनी, लोहियानगर

कंकड़बाग, पटना - 800020

फोन : 7004721818

Email : ubhartabihar@gmail.com

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक व संपादक राजीव रंजन द्वारा कृत्या पब्लिकेशन, लंगरटोली, बिहार से मुद्रित एवं सी-49 हाऊसिंग कॉलोनी, लोहियानगर, कंकड़बाग, पटना - 800020 से प्रकाशित।

संपादक: राजीव रंजन

सभी कानूनी विवाद पटना न्यायिक क्षेत्राधिकार के अन्तर्गत निपटाये जायेंगे। लेखकों द्वारा व्यक्त विचार उनके अपने है। इसकी जिम्मेदारी उनकी है एवं इसके लिये संपादक, प्रकाशक की सहमति अनिवार्य नही है। सामग्री की वापसी की जिम्मेवारी उभरता बिहार की नहीं होगी। इस अंक में प्रकाशित सभी रचनाओं के सर्वाधिकार सुरक्षित है। कुछ छाया चित्र और लेख इंटरनेट, एजेंसी एवं पत्र-पत्रिकाओं से साभार। उपरोक्त सभी पद अस्थायी एवं अवैतनिक है। किसी भी आलेख पर आपत्ति हो तो 15 दिनों के अंदर खंडन करें।

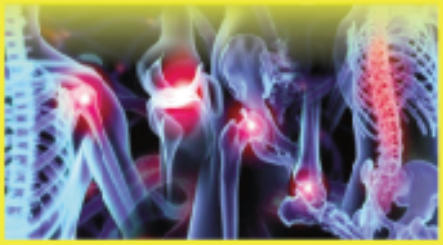

नोट : किसी भी रिपोर्टर द्वारा अनैतिक ढंग से लेन-देन के जिम्मेवार वे स्वयं होंगे।

संरक्षक

डॉ. संतोष कुमार

अखिलेश कुमार जायसवाल

प्रभात कुमार चौधरी

डॉ. राकेश कुमार

रहस्यमय है तिरुपति बालाजी का भगवान वेंकटेश्वर मंदिर 11

भारत में वयस्क मताधिकार की कहानी 15

इतिहास और वर्तमान के... 16

राजीव रंजन
संपादक
rradvocate@gmail.com

पटना जंक्शन स्थित महावीर मन्दिर द्वारा नवम्बर, 2019 में रामलला के पक्ष में सुप्रीम कोर्ट का फैसला आने के बाद अयोध्या में राम रसोई चलाई जा रही है।

भारत सरकार के ट्रेड मार्क निबंधन विभाग ने राम-रसोई को ट्रेड मार्क सर्टिफिकेट निर्गत किया है। अब ट्रेड मार्क मिलने से भारत में राम रसोई नाम का उपयोग कोई नहीं कर सकेगा। यह बिहार के लिए प्रसन्नता की बात है।

अयोध्या के इतिहास में पहली बार महावीर मन्दिर, पटना ने बाहर से आनेवाले सभी तीर्थयात्रियों के लिए अन्नक्षेत्र प्रारंभ किया और अयोध्या में राम-रसोई इतनी प्रसिद्ध हो गयी है कि पटना के महावीर मन्दिर का प्रचार-प्रसार देश के गाँव-गाँव में हो रहा है।

अयोध्या स्थित अमावा राम मन्दिर परिसर में राम-रसोई में भोजन के पहले महावीर जी का जयकारा लगया जाता है और लोगों को अवगत कराया जाता है कि यह निःशुल्क अन्न क्षेत्र पटना के महावीर मन्दिर की ओर से चलाया जा रहा है।

राम-रसाई में प्रतिदिन औसतन एक हजार से दो हजार लोगों को निःशुल्क भोजन, जिसमें में जीरा राइस, कचौड़ी, आलू दम, मिक्स सब्जी, अरहर दाल, पापड़, तिलौरी, चटनी और गाय का घी पड़ोसा जा रहा है। बिहारी शैली में प्रेम से सभी से पूछ-पूछकर भोजन कराया जा रहा है।

कोरोना की दूसरी लहर, भारत पर क्यों बरपा इतना कहर?

राकेश कुमार

रैलियों की भीड़ और क्रिकेट के जश्न ने बिगाड़ा खेल

इस साल मार्च की शुरूआत में स्वास्थ्य मंत्री हर्षवर्धन ने एलान किया था कि भारत में कोविड-19 महामारी 'अब खात्मे की ओर' बढ़ रही है। स्वास्थ्य मंत्री ने इस एलान के साथ ही प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व की तारीफ करते हुए कहा था कि "इसने दुनिया के सामने अंतरराष्ट्रीय सहयोग की एक नजीर पेश की है"। भारत ने जनवरी से ही अपनी बहुप्रचारित 'वैक्सीन डिप्लोमेसी' के तहत दूसरे देशों को वैक्सीन की सप्लाई शुरू कर दी थी।

हर्षवर्धन अगर देश में कोरोना संक्रमण के खात्मे के प्रति इतने अधिक उम्मीद भरे नजर आ रहे थे, तो इसकी वजह थी। दरअसल, सितंबर के मध्य में देश में दैनिक कोरोना संक्रमण की रफ़्तार उच्चतम स्तर पर पहुँच गई थी। उन दिनों यह हर दिन 93 हजार के स्तर पर पहुँच गई थी। लेकिन इसके बाद इसमें तेज गिरावट देखने को मिली।

फरवरी के मध्य तक हर दिन सिर्फ. 11 हजार मामले आ रहे थे। हर दिन मरने वालों का साप्ताहिक औसत भी घट कर 100 के नीचे पहुँच गया था।

इस तरह पिछले साल के अंत से ही कोरोना वायरस को खत्म करने का जश्न मनाना शुरू हो गया था। राजनेताओं से लेकर नीति-निमार्ताओं और मीडिया के एक हिस्से ने सचमुच यह मान लिया था कि भारत अब इस मुश्किल से निकल चुका है।

दिसंबर में रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया के अधिकारियों ने भी कहा था कि भारत अब "कोरोना संक्रमण के खात्मे" की ओर बढ़ रहा है। कविताओं में इस्तेमाल किए जाने वाले रूपकों का सहारा लेते हुए इन अधिकारियों ने कहा, "इस बात के सबूत मिलने लगे हैं कि भारतीय अर्थव्यवस्था अब जाड़े के मौसम की लंबी छाया से निकल कर चमचमाते रोशन दिनों की ओर बढ़ रही है।"

“हर्षवर्धन अगर देश में कोरोना संक्रमण के खात्मे के प्रति इतने अधिक उम्मीद भरे नजर आ रहे थे, तो इसकी वजह थी। दरअसल, सितंबर के मध्य में देश में दैनिक कोरोना संक्रमण की रफ़्तार उच्चतम स्तर पर पहुँच गई थी। उन दिनों यह हर दिन 93 हजार के स्तर पर पहुँच गई थी। लेकिन इसके बाद इसमें तेज गिरावट देखने को मिली। फरवरी के मध्य तक हर दिन सिर्फ.11 हजार मामले आ रहे थे। हर दिन मरने वालों का साप्ताहिक औसत भी घट कर 100 के नीचे पहुँच गया था।

उस दौरान पीएम नरेंद्र मोदी को "वैक्सीन गुरु" तक कहा गया।

फरवरी के आखिर में चुनाव आयोग ने पाँच राज्यों में विधानसभा चुनावों का ऐलान कर दिया। इन राज्यों की 824 सीटों पर खड़े उम्मीदवारों को चुनने वाले वोटरों की संख्या 18.60 करोड़ है।

27 मार्च से शुरू हुई वोटिंग को एक महीने से भी अधिक समय तक चलना था। पश्चिम बंगाल में आठ चरणों में चुनाव का एलान किया गया। इसके बाद चुनाव प्रचार पूरे जोर-शोर से शुरू हो गए।

इन चुनाव क्षेत्रों में न तो कोई सेफ़्टी प्रोटोकॉल अपनाया जा रहा था और न सोशल डिस्टेंसिंग का पालन हो रहा था।

इस बीच, मध्य मार्च में गुजरात के नरेंद्र मोदी स्टेडियम में भारत और इंग्लैंड के बीच दो अंतरराष्ट्रीय एक दिवसीय मैचों को देखने के लिए एक लाख 30 हजार दर्शकों को इजाजत दे दी गई। इनमें से ज्यादातर बगैर मास्क पहने आए थे।

और फिर इसके एक महीने के अंदर मुसीबतों का सिलसिला शुरू हो गया। भारत एक बार फिर कोरोना संक्रमण की गिरफ़्त में आ गया। कोरोना संक्रमण की यह दूसरी लहर बहुत ज्यादा खतरनाक साबित हो रही थी और इसने भारत के शहरों को बुरी तरह जकड़ लिया था।

कोरोना की इस दूसरी लहर में मध्य अप्रैल तक हर दिन संक्रमण के लगभग एक लाख मामले आने लगे। रविवार को भारत में कोरोना संक्रमण के 2,70,000 केस दर्ज किए गए थे और 1600 से ज्यादा लोगों की मौत हो चुकी थी। एक दिन में यह संक्रमण और मौतों का सबसे बड़ा रिकॉर्ड था।

भारत दूसरी लहर में पूरी तरह पब्लिक हेल्थ इमरजेंसी की गिरफ़्त में था। सोशल मीडिया कोविड की वजह से मारे गए लोगों के अंतिम संस्कार के फोटो और वीडियो से भरा पड़ा है। इन तस्वीरों में भीड़ भरे शमशान और कब्रगाह दिख रहे थे।

अस्पतालों के बाहर मृतकों के रोते-बिलखते परिवार दिखाई पड़ रहे थे, बेहाल मरीजों से लदे एंबुलेंसों की कतारें थी, मुर्दाघरों में लाशों के लिए जगह नहीं थी। कई बार एक बेड पर दो मरीजों को लिटाने की जरूरत पड़ रही थी।

अस्पतालों के कॉरिडोर और लॉबी में भी मरीजों का इलाज किया जा रहा था। अस्पताल के बेड, कोविड की दवाइयों, ऑक्सीजन, जीवनरक्षक दवाइयों और टेस्ट के लिए हाहाकार मचा हुआ था। दवाइयाँ ब्लैक मार्केट में बेची जा रही थी और टेस्ट रिजल्ट में आने में कई दिन लग रहे थे।

कोविड की पहली लहर के बाद देश में टीकाकरण के विशाल अभियान की शुरूआत हुई थी, लेकिन दूसरी लहर में इसे भी झटके लग रहे थे।

पहली बार जब टीके बाजार में आने शुरू हुए, तो यहाँ इसके असर को लेकर भी विवाद हुआ। लेकिन पिछले सप्ताह तक वैक्सीन की दस करोड़ डोज दिए जाने के बावजूद बड़े पैमाने पर इसकी कि ल्लत की खबरें आ रही थी।

देश और दुनिया की सबसे बड़ी वैक्सीन मेकर कंपनी सीरम इंस्टीट्यूट ऑफ इंडिया जून से पहले टीकों की सप्लाई बढ़ाने में कामयाब नहीं हो सकी, क्योंकि इसके पास प्रोडक्शन तेज करने के लिए पैसा नहीं था। वैक्सीन की कि ल्लत दूर करने के लिए भारत ने ऑक्सफोर्ड-एस्ट्राजेनेका की कोरोना

“फरवरी के आखिर में चुनाव आयोग ने पाँच राज्यों में विधानसभा चुनावों का ऐलान कर दिया। इन राज्यों की 824 सीटों पर खड़े उम्मीदवारों को चुनने वाले वोटरों की संख्या 18.60 करोड़ है। 27 मार्च से शुरू हुई वोटिंग को एक महीने से भी अधिक समय तक चलना था। पश्चिम बंगाल में आठ चरणों में चुनाव का एलान किया गया। इसके बाद चुनाव प्रचार पूरे जोर-शोर से शुरू हो गए।

वैक्सीन के निर्यात पर पूरी तरह पाबंदी लगा दी है।

देश में जिस तेज गति से संक्रमण फैल रहा था, उससे यहाँ वैक्सीन की माँग बेहद बढ़ गई थी।

लेकिन मौत और मायूसियों के साथ ही एक समांतर दुनिया चल रही थी। हर शाम बिना दर्शकों के दुनिया के सबसे अमीर टूनार्मेंट के तहत क्रिकेट मैच खेले जा रहे थे।

हजारों लोग नेताओं की चुनावी रैलियों में इकट्ठा हो रहे हैं। कुंभ स्नान के लिए भी नदियों के किनारे मेला लग रहा है।

समाजशास्त्र के प्रोफेसर शिव विश्वनाथ कहते हैं, "जो हो रहा है उस पर यकीन करना मुश्किल है।"

विशेषज्ञों की मानें, तो ऐसा लगता है कि सरकार ने कोरोना की इस दूसरी लहर को रोकने में कोई मुस्तैदी नहीं दिखाई। उसके इस रवैए की वजह से यह संक्रमण चारों ओर बड़ी तेजी से फैल गया।

महाराष्ट्र के कोरोना संक्रमित एक ज़िले के सिविल सर्जन डॉ. श्यामसुंदर निकम ने उस समय कहा था, "हमें सचमुच पता नहीं है कि कोरोना संक्रमण की इस तूफानी रफ़्तार की वजह क्या है, लेकिन सबसे बड़ी चिंता की बात यह है कि दूसरी लहर में पूरे के पूरे परिवार संक्रमण की चपेट में आ रहे थे।

अब विशेषज्ञ कह रहे हैं कि कोविड को 'हराने' की भारत की अनोखी क्षमताओं को लेकर बड़ा शोर हुआ, कहा गया कि यहाँ युवा आबादी है। ज्यादातर लोग गाँवों में रहते हैं। देशवासियों के भीतर एक स्वाभाविक प्रतिरोधी क्षमता है इसलिए कोरोना हार गया लेकिन इतनी जल्दी कोरोना से जीत का ऐलान काफी भारी पड़ा।

देश में कोरोना लहर का दूसरा संक्रमण उन लोगों की वजह से फैला, जो बिल्कुल लापरवाह हो गए। ये लोग शादियों, पारिवारिक और सामाजिक समारोहों में खुल कर जाने लगे। सरकार ने रैलियों और धार्मिक समारोहों को मंजूरी दे दी और इसमें बड़ी संख्या में लोग जुटने लगे। पहली लहर के बाद जब संक्रमितों की संख्या घटने लगी, तो लोगों ने टीका लगवाना भी कम कर दिया, बहुत कम लोग उस दौरान टीका लगवा रहे थे।

जुलाई के आखिर तक 25 करोड़ लोगों को टीका लगाने का लक्ष्य था, लेकिन लोगों के इस रुख से टीकाकरण अभियान भी सुस्त पड़ गया।

फरवरी के मध्य में मिशिगन यूनिवर्सिटी के बायो स्टेटिसियन भ्रमर मुखर्जी ने ट्वीट कर कहा था, "भले ही भारत में अब कोरोना संक्रमण के केस कम हो गए हों, फिर भी इसे टीकाकरण अभियान तेज कर देना चाहिए। लेकिन इस पर किसी ने ध्यान नहीं दिया।"

फिर जन-स्वास्थ्य के इस इतने बड़े संकट के सबक क्या हैं? पहली बात तो यह है कि भारत को इस वायरस पर समय से पहले जीत के ऐलान से परहेज करना सीखना होगा। यह जो जीत की भावना है, इस पर रोक लगानी होगी। आगे अगर संक्रमण में तेजी आती है, तो लोगों को छोटे और स्थानीय लॉकडाउन के साथ जीना सीखना होगा।

ज्यादातर महामारी विशेषज्ञों का कहना है कि कोरोना संक्रमण की अभी और लहरें आ सकती हैं, क्योंकि भारत अभी हर्ड इम्यूनिटी हासिल करने से काफी दूर है। और यहाँ टीकाकरण की दर भी कम है। हम ज़िंदगी को जहाँ के तहाँ तो नहीं रोक सकते लेकिन अगर हम भीड़ भरे शहरों में एक दूसरे से पर्याप्त शारीरिक दूरी न रख पाएँ, तो कम से कम यह तो पक्का कर लें कि हर कोई सही मास्क पहने। साथ ही मास्क को सही ढंग से पहनना भी जरूरी है। लोगों से की जाने वाली यह कोई बड़ी अपेक्षा तो नहीं ही है।

“हजारों लोग नेताओं की चुनावी रैलियों में इकट्ठा हो रहे हैं। कुंभ स्नान के लिए भी नदियों के किनारे मेला लग रहा है।

समाजशास्त्र के प्रोफेसर शिव विश्वनाथ कहते हैं, "जो हो रहा है उस पर यकीन करना मुश्किल है। विशेषज्ञों की मानें, तो ऐसा लगता है कि सरकार ने कोरोना की इस दूसरी लहर को रोकने में कोई मुस्तैदी नहीं दिखाई। उसके इस रवैए की वजह से यह संक्रमण चारों ओर बड़ी तेजी से फैल गया।

पंचायत चुनाव की तैयारी शुरू

जितेन्द्र कुमार सिन्हा, पटना

बिहार में पंचायत चुनाव दस चरणों में कराने की तैयारी राज्य सरकार ने शुरू कर दी है। यह चुनाव 03 अगस्त, 2021 से 03 नवम्बर तक समपन्न होने की सम्भावना है। सूत्रों की माने तो चुनाव के लिए कई राज्यों से दो लाख ईवीएम मंगाने के लिए राज्य निर्वाचन आयोग ने पदाधिकारियों को नामित कर दिया है। निर्वाचन आयोग ने निर्वाचन विभाग से तीन पदाधिकारियों (जिसमें हिलसा के अवर निर्वाचन पदाधिकारी प्रेम प्रकाश एवं डुमराव के अनिल पटेल शामिल हैं) की प्रतिनियुक्ति आयोग में करने के लिए पत्र लिखा है। जनसंख्या नियंत्रण को लेकर बिहार सरकार अब सख्त कदम उठाने की कोशिशों में जुट गई है। पंचायती राज विभाग त्रिस्तरीय पंचायत और ग्राम कचहरियों के चुनाव के लिए प्रारूप तैयार कर रही है, जिसमें दो या उससे अधिक बच्चे वालों को अयोग्य घोषित करने और चुनाव लड़ने से प्रतिबंधित करने का प्रावधान किया जा रहा है। सूत्रों के अनुसार सम्भवतः वर्ष 2021 में होने वाले पंचायत चुनाव, इस प्रावधान में, शामिल न हो सके, परन्तु भविष्य में यानि इसके बाद के चुनाव में यह प्रावधान लागू हो जायेगा।

राज्य निर्वाचन आयोग ने वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से सभी जिला पदाधिकारी को अगस्त से चुनाव की प्रक्रिया शुरू किए जाने के निर्देश दिए हैं और जिलों से, चुनाव से जुड़ी तैयारियों की रिपोर्ट भी मांगी है। सूत्रों का कहना है कि सम्भव है कि चुनाव के पहला चरण में 03 अगस्त को अधिसूचना जारी किया जायेगा, 27 अगस्त को मतदान होगी और 29 एवं 30 अगस्त को मतगणना सम्पन्न होगी।

दूसरा चरण में 06 अगस्त को अधिसूचना जारी किया जायेगा, 31 अगस्त को मतदान होगी और 02 एवं 03 सितम्बर को मतगणना सम्पन्न होगी। तीसरा चरण में 16 अगस्त को अधिसूचना जारी किया जायेगा, 10 सितम्बर को मतदान होगी और 12 एवं 13 सितम्बर को मतगणना सम्पन्न होगी। चौथा चरण में 20 अगस्त को अधिसूचना जारी किया जायेगा, 14 सितम्बर को मतदान होगी और 16 एवं 17 सितम्बर को मतगणना सम्पन्न होगी। पांचवा चरण में 01 सितम्बर को अधिसूचना जारी किया जायेगा, 24 सितम्बर को मतदान होगी और 26 एवं 27 सितम्बर को मतगणना सम्पन्न होगी। छठ्ठा चरण में 06 सितम्बर को अधिसूचना जारी किया जायेगा, 30 सितम्बर को मतदान होगी और 02 एवं 03 अक्तूबर को मतगणना सम्पन्न होगी। सातवां चरण में 13 सितम्बर को अधिसूचना जारी किया जायेगा, 08 अक्तूबर को मतदान होगी और 10 एवं 11 अक्तूबर को मतगणना सम्पन्न होगी। आठवां चरण में 24 सितम्बर को अधिसूचना जारी किया जायेगा, 18 अक्तूबर को मतदान होगी और 20 एवं 21 अक्तूबर को मतगणना सम्पन्न होगी। नौवां चरण में 29 अक्तूबर को अधिसूचना जारी किया जायेगा, 22 अक्तूबर को मतदान होगी और 24 एवं 25 अक्तूबर को मतगणना सम्पन्न होगी। अंतिम और दसवां चरण में 04 अक्तूबर को अधिसूचना जारी किया जायेगा, 31 अक्तूबर को मतदान होगी और 02 एवं 03 नवम्बर को मतगणना सम्पन्न होगी।

बिहार में पंचायत चुनाव के दौरान पंच एवं सरपंच के पदों के लिए चुनाव बैलेट पेपर से हो सकता है। सूत्रों ने बताया कि राज्य निर्वाचन आयोग इस प्रस्ताव पर मंथन करना शुरू कर दिया है और सभी जिलाधिकारियों से सुझाव मांगे हैं। राज्य में चार पदों मुखिया, जिला परिषद सदस्य, वार्ड सदस्य एवं पंचायत समिति सदस्य का चुनाव ईवीएम से और दो पदों पंच और सरपंच का चुनाव वैलेट पेपर से कराया जा सकता है।

सूत्रों के अनुसार ओडिसा से ईवीएम सीवान एवं गया को, हैदराबाद से भोजपुर को, तेलंगाना से मधेपुरा, जमुई एवं नवादा को, केरल से सारण, गोपालगंज, पटना बेगूसराय एवं मुंगेर को, राजस्थान से मधुबनी, मुजफ्फरपुर, दरभंगा, पूर्वी चम्पारण, पश्चिमी चम्पारण एवं वैशाली को, तमिलनाडू से शेखपुरा को, त्रिपुरा से षिवहर को, नागालैण्ड से पूर्णियाँ को,उत्तर प्रदेश से कैमूर को, गुजरात से बांका को, अरूणाचल प्रदेश से भागलपुर को, महाराष्ट्र और गोवा से अररिया को, मध्यप्रदेश से बक्सर को, हिमाचल प्रदेश से नालन्दा को, जम्मू-कश्मीर से झारखण्ड को, उत्तर-पूर्वी राज्यों से किशनगंज को और बंगलुरू से समस्तीपुर को मिलने की संभावना है। बिहार पंचायत चुनाव एम-2 मॉडल ईवीएम से कराया जाएगा। उम-2 मॉडल ईवीएम दूसरे राज्यों से जिलों में मंगाए जाने के बाद उसकी फस्ट लेवल जाँच (एफएलसी) के लिए भारत निर्वाचन आयोग से संबंधित कंपनियों के इंजीनियरों को भेजने का अनुरोध किया गया है। सभी मंगाए जाने वाले ईवीएम की जाँच के बाद ही जिलों को चुनाव कराने के लिए सौंपा जाएगा। इस ईवीएम को बनाने वाली कंपनियों के इंजीनियर बैलेट यूनिट एवंकंट्रोल यूनिट को जोड़कर चुनाव के लिए तैयार करेंगे।

> “दूसरा चरण में 06 अगस्त को अधिसूचना जारी किया जायेगा, 31 अगस्त को मतदान होगी और 02 एवं 03 सितम्बर को मतगणना सम्पन्न होगी। तीसरा चरण में 16 अगस्त को अधिसूचना जारी किया जायेगा, 10 सितम्बर को मतदान होगी और 12 एवं 13 सितम्बर को मतगणना सम्पन्न होगी। चौथा चरण में 20 अगस्त को अधिसूचना जारी किया जायेगा, 14 सितम्बर को मतदान होगी और 16 एवं 17 सितम्बर को मतगणना सम्पन्न होगी। पांचवा चरण में 01 सितम्बर को अधिसूचना जारी किया जायेगा।

सरकारी योजनाओं से गरीब हो रहे हैं लाभान्वित

आभा सिन्हा, पटना

राज्य के छोटे-छोटे रोजगार-धंधा करने वाले गरीब लोगों से जब मेरी गुफ्तगु हुई तो अधिकांश लोगों ने सरकार की योजनाओं से लाभान्वित होने की बात कही। कुछ लोगों ने लाभ नही मिलने की भी बात कहा। जबकि सरकार द्वारा गरीबो के उत्थान के लिए कई तरह की योजनाएं चल रही है, जिसमें प्रधानमंत्री उज्जवला योजना, वृद्धा पेंशन योजना, विधवा पेंशन योजना, विकलांग पेंशन योजना, पतित्यकत/तलाकशुदा मुस्लिम महिला योजना, परवरिश योजना, प्रधानमंत्री श्रमयोगी मानधन पेंशन योजना, एल.पी.जी. गैस सिलेण्डर दुर्घटना इन्स्योरेंस योजना, एटीएम दुर्घटना बीमा योजना, सड़क दुर्घटना सहायता योजना, आपदा अनुग्रह दुर्घटना मृत्यु अनुदान योजना, प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना, प्रधानमंत्री फ्री सिलाई मशीन योजना, प्रधानमंत्री स्वनिधि योजना, प्रधानमंत्री निक्षय पोषण योजना, प्रधानमंत्री शादी शगुन योजना, प्रधानमंत्री मातृ वंदना योजना, पारिवारिक लाभ योजना, बिहार शताब्दी योजना, बिहार शताब्दी कामगारएवं शिल्पकार समाजिक सुरक्षा योजना-2011, दाह संस्कार हेतु आर्थिक सहायता योजना, निबंधित कामगार को मृत्यु अनुदान लाभ, विवाह सहायता अनुदान योजना, मातृत्व लाभ, पितृत्व लाभ, विकलांगता पेंशन, चिकित्सा लाभ, शिक्षा के लिए वित्तीय सहायता योजना, नकद पुरस्कार योजना, सायकिल अनुदान योजना, भवन मरम्मति अनुदान योजना, औजार क्रय अनुदान योजना, पेंशन योजना, नया राशन कार्ड और पारिवारिक पेंशन योजना प्रमुख है।

बी.पी.एल.परिवार को निःशुल्क गैस कनेक्शन उपलब्ध कराने के उद्देश्य से प्रधानमंत्री उज्जवला योजना लागू की है। उसी प्रकार 60 वर्षों से अधिक उम्र वालों के लिए वृद्धा पेंशन योजना और विधवा पेंशन योजना लागू है।

अनाथ बच्चों को आर्थिक सहायता उपलब्ध कराने के उद्देश्य से सरकार ने परवरिश योजना लागू की है, जिसके तहत प्रतिमाह 1000 रुपये सहायता अनुदान दिया जाता है।

प्रधानमंत्री श्रमयोगी मानधन पेंशन योजना के तहत 18 वर्ष से 40 वर्ष तक के लोग आच्छादित होते है। इस योजना में 60 वर्ष पूरा होने पर प्रतिवर्ष 36000 रुपये पेंशन वार्षिक दिया जाता है।

एल.पी.जी. गैस सिलेण्डर दुर्घटना इन्स्योरेंस योजना के तहत प्रत्येक गैस कनेक्शन पर 40 लाख से 50 लाख रुपये तक की बीमा राशि कवर होती है और घर के सभी सदस्यों का बीमा होता है। सड़क दुर्घटना सहायता योजना के तहत 4 लाख रुपये सहायता अनुदान दी जाती है।

सरकार द्वारा सीमांत कृषक जिनकों 2 हेक्टेयर तक या कम से कम 10 डिसमिल जमीन कृषि भूमि हो उसके लिए प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना लागू है और इसके तहत कृषक को प्रति वर्ष 6000 रुपये बैंक खाता के माध्यम से सीधे भुगतान किया जाता है।

"बी.पी.एल.परिवार को निःशुल्क गैस कनेक्शन उपलब्ध कराने के उद्देश्य से प्रधानमंत्री उज्जवला योजना लागू की है। उसी प्रकार 60 वर्षों से अधिक उम्र वालों के लिए वृद्धा पेंशन योजना और विधवा पेंशन योजना लागू है। अनाथ बच्चों को आर्थिक सहायता उपलब्ध कराने के उद्देश्य से सरकार ने परवरिश योजना लागू की है, जिसके तहत प्रतिमाह 1000 रुपये सहायता अनुदान दिया जाता है। प्रधानमंत्री श्रमयोगी मानधन पेंशन योजना के तहत 18 वर्ष से 40 वर्ष तक के लोग आच्छादित होते है। इस योजना में 60 वर्ष पूरा होने पर प्रतिवर्ष 36000 रुपये पेंशन वार्षिक दिया जाता है।

अत्यंत गरीब महिला श्रमिक, विधवा, विकलांग, पतित्यक्त, घरेलु कामवाली बाई इत्यादि के लिए मुफ्त में रोजी-रोटी चलाने के लिए सिलाई मशीन उपलब्ध कराने हेतु प्रधानमंत्री फ्री सिलाई मशीन योजना लागू है।

उसी प्रकार फूटपाथी दुकानदारों, रेहड़ी, ठेला वाले दुकानदारों के लिए 10 हजार रुपये का आत्मनिर्भर एक विशेष माइक्रो क्रेडिट योजना चलाई जा रही है। इसमें ऋण प्राप्त करने के लिए नगर पंचायत/नगर परिषद/नगर पालिका/नगर निगम में पंजीकृत होना आवश्यक होता है। इस योजना को प्रधानमंत्री स्वनिधि योजना के नाम से जाना जाता है।

प्रधानमंत्री निक्षय पोषण योजना के तहत टी.बी. के मरीजों को 500 रुपये प्रतिमाह सहायता राशि दी जाती है। इसके लिए स्वास्थ्य केन्द्रों में पंजीकरण होना अनिवार्य होता है।

मुस्लिम समाज की ग्रेजुएट लड़कियों के लिए आर्थिक सहायता उपहार के रूप में देने के लिए प्रधानमंत्री शादी शगुन योजना लागू है। इस योजना के तहत 51 हजार रुपये सहायता राशि दी जाती है। इसके लिए आवेदक को दस्तावेज के रूप में आवेदन के साथ ग्रेजुएट का शिक्षण प्रमाण पत्र, अल्पसंख्यक प्रमाण पत्र, आधार कार्ड, शादी विवाह प्रमाण पत्र और मोबाईल नम्बर संलग्न करना होता है।

गर्भवती महिलाओं के पोषाहार हेतु प्रधानमंत्री मातृ वंदना योजना लागू है। इस योजना के तहत गर्भवती महिलाओं को बच्चे के प्रथम जन्म पर पंजीकरण फार्म भरना होता है और आशा कार्यकर्ता के माध्यम से आंगनवाड़ी सेन्टर पर आवेदन करना होता है। आवेदक को इस योजना के तहत 6000 रुपये दिया जाता है।

परिवार के मुखिया की मृत्यु के उपरांत 18 से 59 वर्ष के लोगों के लिए आर्थिक सहायता प्रदान करने के लिए पारिवारिक लाभ योजना लागू है। इस योजना के तहत 20 हजार रुपये की सहायता प्रदान की जाती है।

असंगठित क्षेत्रों के श्रमिकों को कार्य के दौरान दुर्घटना में पूर्णकालिक/अंशकालिक विकलांग होने पर आर्थिक सहायता देने के उद्देश्य से 18 वर्ष से अधिक एवं 65 वर्ष से कम उम्र के लोगों को पूर्णकालिक 75 हजार रुपये एवं एक हजार रुपये मासिक पेंशन और अंशकालिक 37,500 रुपये देने का प्रावधान बिहार शताब्दी योजना के तहत किया गया है।

इसी तरह बिहार शताब्दी कामगार एवं शिल्पकार समाजिक सुरक्षा योजना-2011 के तहत असंगठित क्षेत्रों के श्रमिकों को मृत्यु अनुदान के रूप में से 18 वर्ष से अधिक एवं 65 वर्ष से कम उम्र वालों के लिए सामान्य मृत्यु होने पर 30 हजार और दुर्घटना मृत्यु होने पर एक लाख रुपये आर्थिक सहायता उपलब्ध कराने का प्रावधान है।

दाह संस्कार हेतु आर्थिक सहायता योजना के तहत केवल बिहार भवन एवं अन्य सन्निर्माण कर्मकार कल्याण बोर्ड में पंजीकृत कामगारों/श्रमिकों के लिए 5000 रुपये अनुदान देने का प्रावधन है। उसी प्रकार निबंधित कामगार के लिए मृत्यु अनुदान लाभ योजना के तहत स्वाभाविक मृत्यु होने पर दो लाख और दुर्घटना मृत्यु होने पर चार लाख रुपये अनुदान देने का भी प्रावधान है। निबंधित श्रमिकों के दो पुत्रियों की शादी करने के बाद 50 हजार प्रति के हिसाब से विवाह सहायता अनुदान योजना के तहत आर्थिक सहायता दी जाती है। महिला श्रमिक रेजा को प्रसवोपरांत आर्थिक सहायता उपलब्ध कराने के उद्देश्य से अकुशल कामगार को न्यूनतम मजदूरी 90 दिनों के समतुल्य करीब 25 हजार रुपये के लगभग मातृत्व लाभ योजना के तहत दी जाती है। उसी तरह निबंधित श्रमिक को पत्नी के प्रसवोपरांत 6000 रुपये पितृत्व लाभ योजना के तहत भी अनुदान दिया जाता है।

शिक्षा के लिए वित्तीय सहायता योजना के तहत आईआईटी/डिप्लोमा कार्स/सरकारी आईटीआई में दाखिला हेतु/आईआईएक/एएमएस/बी.टेक/नर्सिंग कोर्स के लिए 25 हजार रुपये अनुदान दिया जाता है।

नगद पुरस्कार योजना के तहत एक वर्ष की सदस्यता पूर्ण करने पर दसवीं एवं बारहवीं में पहली क्लास पास होने पर 80 प्रतिशत से अधिक अंक लाने वालों को 25 हजार रुपए, 70 प्रतिशत से अधिक अंक लाने वाले को 15 हजार और 60 प्रतिशत से उपर अंक लाने वाले को 10 हजार रुपये दिया जाता है।

सायकिल अनुदान योजना के तहत केवल निबंधित श्रमिकों के सायकिल हेतु एक साल की सदस्यता पर 3500 रुपये सहायता अनुदान दी जाती है।

भवन मरम्मति अनुदान योजना के तहत तीन साल की सदस्यता पर 20 हजार रुपये सहायता अनुदान देय है।

उसी तरह औजार क्रय अनुदान योजना के तहत निबंधित एवं प्रशिक्षित श्रमिकों 15 हजार रुपये अनुदान सहायता दी जाती है। पेंशन योजना के तहत निबंधित श्रमिकों को प्रतिमाह 1000 रुपये पेंशन अनुमान्य है। पति के मृत्यु के उपरांत 50 प्रतिशत पेंशन पारिवारिक पेंशन योजना के तहत अनुमान्य है।

“ उसी प्रकार फूटपाथी दुकानदारों, रेहड़ी, ठेला वाले दुकानदारों के लिए 10 हजार रुपये का आत्मनिर्भर एक विशेष माइक्रो क्रेडिट योजना चलाई जा रही है। इसमें ऋण प्राप्त करने के लिए नगर पंचायत/नगर परिषद/नगर पालिका/नगर निगम में पंजीकृत होना आवश्यक होता है। इस योजना को प्रधानमंत्री स्वनिधि योजना के नाम से जाना जाता है। प्रधानमंत्री निक्षय पोषण योजना के तहत टी.बी. के मरीजों को 500 रुपये प्रतिमाह सहायता राशि दी जाती है।

रहस्यमय है तिरुपति बालाजी का भगवान वेंकटेश्वर मंदिर

जितेन्द्र कुमार सिन्हा, पटना

आंध्र प्रदेश के चित्तूर जिले में स्थित भारत के सबसे प्रसिद्ध तीर्थस्थलों में से एक प्रसिद्ध हिन्दू तीर्थ स्थल है तिरुपति, जहाँ तिरुपति वेंकटेश्वर मन्दिर स्थित है। यहाँ देश के कोने-कोने से प्रतिवर्ष लाखों की संख्या में दर्शनार्थी आते हैं। इस मंदिर में भगवान वेंकटेश्वर स्वामी जी की मूर्ति विराजमान है जिसे भगवान विष्णु का अवतार माना जाता है।

यह मंदिर समुद्र तल से 3200 फीट ऊंचाई पर स्थित तिरुमला की पहाड़ियों पर बना हुआ है। कई शताब्दी पूर्व बना यह मंदिर, दक्षिण भारतीय वास्तुकला और शिल्प कला का अदभूत समावेश हैं। तिरुपति बालाजी के कुछ रहस्य भी है जिसे जानकर लोग अचंभित होते हैं।

तिरुपति बालाजी मंदिर से करीब 23 किलोमीटर दूर स्थित एक गाँव है, जहाँ लोग काफी पुरानी जीवन शैली का उपयोग करते हैं। कहा जाता है कि इसी गांव से तिरुपति बालाजी मंदिर के लिए फूल, फल, घी आदि सामग्री जाता है। यह भी बताया जाता है कि इस गांव में किसी बाहरी व्यक्ति का प्रवेश प्रतिबंधित है।

एक खास तरह का कपूर होता है परचई कपूर। इस कपूर को यदि पत्थर पर लगा दिया जाय तो वह पत्थर कुछ समय के बाद दरक (चटक) जाता है, लेकिन परचई कपूर को भगवान की मूर्ति पर लगाने से कपूर का मूर्ति पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

यह भी काफी विचित्र बात है कि भगवान वेंकटेश्वर के मूर्ति के कानों के पास अगर ध्यान से सुना जाए, तो समुद्र की लहरों की आवाज आती है और मूर्ति को अगर गर्भगृह के बाहर से देखेंगे तो मूर्ति दाई ओर दिखाई देगी और गर्भगृह के अंदर से देखेंगे तो मूर्ति मध्य में दिखेगी। मंदिर का गर्भगृह को ठंडा रखने के बावजूद रहस्यमय बात यह है कि मूर्ति का तापमान 110 फॉरेनहाइट रहता है और मूर्ति को पसीना भी आता है जिसे समय-समय पर पुजारी पोछते रहते हैं। वैज्ञानिकों के पास भी यह जवाब नहीं है कि भगवान वेंकटेश्वर स्वामी के मूर्ति पर लगे बाल कभी नहीं उलझते और वह हमेशा मुलायम रहते हैं ऐसा क्यों होता है।

एक रहस्यमय बात यह भी है कि मंदिर के गर्भगृह में एक दीपक जलता रहता है और यह दीपक हजारों सालों से ऐसे ही जल रहा है वह भी बिना तेल के। यह बात काफी ज्यादा हैरान करने वाली है ऐसा क्यों हो रहा है इसका जवाब आज तक किसी ने नहीं दे सका है।

> “अक्सर सरकारें मानवीयता एवं श्रेष्ठता के अवमूल्यन की शिकार रही है, क्योंकि जब सरकारों एवं उनका नेतृत्व करने वाले शीर्ष नेताओं की समझ सही नहीं होती, विचारों में प्रौढ़ता एवं मानवीयता नहीं उतरती, व्यवहार एवं शासन-प्रक्रिया में संवेदनशीलता नहीं प्रकटती, कर्म एवं योजनाएं की दिशाएं लक्ष्य नहीं पकड़ती, सोच में कौशल नहीं होता।

तकनीकी छलांग : मोबिलिटी का भविष्य शेयर्ड, कनेक्टेड और इलेक्ट्रिक

अमिताभ कांत

चेतक, स्पेक्ट्रा, बुलेट, यज्दी, लूना, राजदूत - ये नाम दशकों से भारतीय परिवारों का एक अभिन्न हिस्साप रहे हैं। हिमाचल प्रदेश के पहाड़ी इलाकों से लेकर केरल के हरे-भरे मेड़ तक, सर्व-उद्देश्यीय दोपहिया वाहन एक सर्वव्यापी सांस्कृतिक का प्रतीक रहा है। आवागमन के एक आसान और द्रुतगामी साधन के रूप में इसने सामाजिक संपर्क को सुविधाजनक बनाया। यह 80 और 90 के दशक के दौरान भारत का सर्वोत्कृष्ट पारिवारिक वाहन रहा है। सहस्राब्दी के मोड़ पर धीरे-धीरे दोपहिया वाहन लड़कियों और लड़कों द्वारा समान रूप से व्यक्तिगत स्वतंत्रता को व्यक्त करने का एक साधन बन गए जो एक उज्ज्वल, समझदार और आगे की ओर बढ़ते हुए देश की छवि को दशार्ता है। ओला द्वारा हाल ही में तमिलनाडु के कृष्णागिरी जिले में दुनिया के सबसे बड़े ई-स्कूटर विनिर्माण संयंत्र का उद्घाटन करने की घोषणा पिछले कुछ वर्षों के दौरान दोपहिया वाहनों के प्रति भारत की भावना को दशार्ती है। भारतीय मोबिलिटी क्षेत्र में दोपहिया वाहनों का वर्चस्व रहा है जो वाहनों की कुल बिक्री में लगभग 80 प्रतिशत का योगदान करते हैं। साथ ही, भारत दुनिया में दोपहिया वाहनों का सबसे बड़ा विनिमार्ता और दोपहिया वाहनों के सबसे बड़े निर्यातकों में से एक है।

तेजी से बदल रही इस दुनिया में परिवहन एवं मोबिलिटी परिवेश में भी बदलाव आवश्यक है। भारत मोबिलिटी क्षेत्र में वैश्विक बदलाव को रफ्तार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने के लिए तैयार है। धुआं छोड़ने वाले पारंपरिक मोटर वाहनों ने शेयर्ड, कनेक्टेभड और शून्ये उत्सरर्जन वाली इलेक्ट्रिक मोबिलिटी के लिए मार्ग प्रशस्तव किया है। फेम 2 की हालिया रीमॉडलिंग परिवहन के लिए एक किफायती, सुलभ एवं न्यायसंगत भविष्य तैयार करने की दिशा में उठाया गया एक ऐतिहासिक कदम है। इससे जीवनयापन की सुगमता और उत्पादकता के स्तर में वृद्धि होगी। मोबिलिटी क्षेत्र में विकास की प्रासंगिकता को आईआईटी-दिल्ली द्वारा मान्यता दी गई है जिसने इलेक्ट्रिक मोबिलिटी में दो साल का एमटेक पाठ्यक्रम शुरू किया है। दोपहिया और तिपहिया वाहन भारत में इलेक्ट्रिक वाहनों को अपनाने के शुरूआती चरण का पथ प्रदर्शक होने जा रहे हैं। इसलिए नई फेम 2 योजना के तहत उनके विद्युतीकरण पर अधिक जोर दिया गया है।

भारत की एक सबसे अच्छी रैपिड ट्रांजिट प्रणाली अहमदाबाद बीआरटीएस पर यात्री अब शून्यत उत्सदर्जन वाली बसों में सवारी का लाभ उठा सकते हैं जिसे इको लाइफ बस नाम दिया गया है। हाल में इस शहर ने ग्रीन ट्रांजिट को समर्थ बनाने के लिए अत्या धुनिक चार्जिंग बुनियादी ढांचे के साथ जेबीएम ऑटो से 50 नई इलेक्ट्रिक बसें हासिल की हैं। अहमदाबाद से महज तीन घंटे की दूरी पर केवड़िया में केवल इलेक्ट्रिक वाहन वाले भारत के पहले शहर का विकास किया जा रहा है। गुजरात की ही तरह करीब 18 राज्यह इस परिवर्तनकारी मोबिलिटी को रफ्तार देने के लिए अगले मोर्चे पर तैनात हैं। इन राज्योंव ने ई-मोबिलिटी परिवेश की मदद के लिए राज्यस्तरीय ई-वाहन नीतियां तैयार की हैं। साइकिल रिक्शा, ऑटो रिक्शा, छोटी-बड़ी बसें आदि सभी भारत की सार्वजनिक परिवहन

> “तेजी से बदल रही इस दुनिया में परिवहन एवं मोबिलिटी परिवेश में भी बदलाव आवश्यक है। भारत मोबिलिटी क्षेत्र में वैश्विक बदलाव को रफ्तार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने के लिए तैयार है। धुआं छोड़ने वाले पारंपरिक मोटर वाहनों ने शेयर्ड, कनेक्टेभड और शून्ये उत्सरर्जन वाली इलेक्ट्रिक मोबिलिटी के लिए मार्ग प्रशस्तव किया है।

प्रणाली के बहुउपयोगी एवं जीवंत परिदृश्य का निर्माण करती हैं। इनका विद्युतीकरण आवागमन के इन स्थायी साधनों को चुनने वाले लोगों को इलेक्ट्रिक मोबिलिटी की ओर अग्रसर करने में बुनियादी तौर पर समर्थ करेगा। एनर्जी एफिशिएंसी सर्विसेज लिमिटेड (ईईएसएल) की पहचान ई-मोबिलिटी को रफ्तार देने लिए एक प्रमुख वाहक के रूप में की गई है। यह विभिन्नि उपयोगकर्ता श्रेणियों के लिए उच्च गुणवत्ता वाले 3 लाख इलेक्ट्रिक तिपहिया वाहन खरीदेगी और 9 शहरों में 40 लाख सार्वजनिक परिवहन उपयोगकताओं को लक्षित करेगी।

सार्वजनिक परिवहन भारत के शहरीकरण की दिशा में एक महत्वपूर्ण उत्प्रेरक साबित होगा। कुछ साल पहले पुणे के कुछ कॉलेज छात्रों ने अपने उन सहपाठियों के लिए परिवहन समाधान पर विचार करना शुरू किया जो कैब का खर्च वहन नहीं कर सकते थे। उनके विचार-मंथन का परिणाम ई-मोटरैड नामक एक ओईएम के रूप में सामने आया जो यात्रियों के लिए ई-साइकिल बनाती है। उनकी साइकिल दैनिक आवागमन के लिए पर्यावरण के अनुकूल समाधान प्रदान करती है और अब 58 देशों में उनका उपयोग किया जाता है।

भारत के 17 शहर वर्ष 2035 तक सबसे तेजी से उभरने वाले दुनिया के शीर्ष 20 शहरों में शामिल होने के लिए तैयार हैं और इसलिए शहरीकरण की रफ्तार तेजी से बढ़ने की उम्मीद है। भारतीय शहर वायु प्रदूषण की जबरदस्तए चुनौती से भी जूझ रहे हैं जो सार्वजनिक स्वास्थ्य के लिए हमारे समय की एक सबसे बड़ी आपात स्थिति है। इससे एक ऐसी सार्वजनिक परिवहन प्रणाली तैयार करने के लिए जबरदस्तप अवसर पैदा होता है जो किफायती एवं पर्यावरण के अनुकूल तरीके से शहरों के भीतर आवाजाही के लिए अत्याधुनिक, स्वच्छ एवं सुविधाजनक हो।

जल्दा ही शहरों, कस्बों और गांवों को कम लागत वाले इलेक्ट्रिक वाहन (ईवी) चार्जिंग पॉइंट का लाभ मिलेगा जिससे इलेक्ट्रिक दोपहिया और तिपहिया को अपनाने में तेजी आएगी। आगामी भारतीय मानक ईवी चार्जिंग बुनियादी ढांचे को तेजी से बढ़ाने का मार्ग प्रशस्तु करेगा जिसकी देश में काफी आवश्यकता है। स्मार्टफोन से संचालित एक स्मार्ट एसी चार्जिंग पॉइंट के लिए 3,500 रुपये (50 डॉलर) से कम का लक्षित मूल्य देश में कम लागत वाले ईवी चार्जिंग बुनियादी ढांचा स्थामपित करने में जबरदस्तल सफलता हासिल करेगा।

भारत में शेयर्ड मोबिलिटी और सार्वजनिक परिवहन का समृद्ध इतिहास रहा है। इनमें से कई परिवहन साधन तो लोकप्रिय संस्कृति की पहचान बन गए हैं, जैसे- कोलकाता में ट्राम, मुंबई में लोकल ट्रेन और हाल में दिल्ली मेट्रो रेल। सार्वजनिक परिवहन एवं शेयर्ड मोबिलिटी के लिए भारतीय यात्रियों की व्यवहार संबंधी प्राथमिकता इलेक्ट्रिक वाहनों को रफ्तार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी। संशोधित फेम 2 के तहत मुंबई, दिल्ली, बेंगलूरु, हैदराबाद, अहमदाबाद, चेन्नई, कोलकाता, सूरत और पुणे जैसे भारतीय शहरों में अधिकतम विद्युतीकरण हासिल करने पर ध्यान केंद्रित किया गया है। इससे न केवल बड़े पैमाने पर ई-बसों का

“सार्वजनिक परिवहन भारत के शहरीकरण की दिशा में एक महत्वपूर्ण उत्प्रेरक साबित होगा। कुछ साल पहले पुणे के कुछ कॉलेज छात्रों ने अपने उन सहपाठियों के लिए परिवहन समाधान पर विचार करना शुरू किया जो कैब का खर्च वहन नहीं कर सकते थे। उनके विचार-मंथन का परिणाम ई-मोटरैड नामक एक ओईएम के रूप में सामने आया जो यात्रियों के लिए ई-साइकिल बनाती है।

विद्युतीकरण होगा बल्कि अन्य शहरों में उसे दोहराने के लिए एक खाका भी तैयार होगा।

भारतीय शहरों में तिपहिया वाहनों का व्याहपक प्रसार देखा गया है क्योंकि ये दूरदराज के इलाकों के लिए किफायती और पॉइंट-टु-पॉइंट कनेक्टिविटी प्रदान करते हैं। इसके अलावा ये कई लोगों के लिए आजीविका के अवसर पैदा भी करते हैं। भारतीय सड़कों पर 20 लाख से अधिक इलेक्ट्रिक रिक्शा चल रहे हैं जो प्रतिदिन 6 करोड़ से अधिक लोगों को परिवहन सुविधा प्रदान करते हैं। ई-3डब्यूया की बड़े पैमाने पर खरीद से कीमतों में भारी कमी आएगी और इसका लाभ भारत के दूर-दराज के इलाकों तक भी पहुंचेगा।

अक्टूबर 2013 में प्रतिष्ठित आईआईटी मद्रास में दो पूर्व छात्रों की वापसी हुई जिन्होंने लीथियम आयन बैटरी पैक विकसित करने का निर्णय लिया। दोनों पूर्व छात्रों ने भारत का पहला स्मार्ट इलेक्ट्रिक स्कूटर एथर एस340 बनाया। उसके आठ साल बाद एथर एनर्जी प्रतिदिन सौ से अधिक स्मार्ट इलेक्ट्रिक स्कूटर का निर्माण कर रही है और संशोधित प्रावधानों को लागू करने वाली पहली कुछ फर्मों में शामिल है। नई फेम 2 योजना के नियमों के तहत इलेक्ट्रिक दोपहिया के लिए सब्सिडी को 10,000 प्रति किलोवॉट ऑवर से बढ़ाकर 15,000 रुपये प्रति किलोवॉट ऑवर कर दिया गया है। जबकि इंसेंटिव की सीमा को पहले के 20 प्रतिशत से बढ़ाकर 40 प्रतिशत कर दिया गया है।

बाजार में अपनी अग्रणी स्थिति को बनाए रखने और वैश्विक बाजारों में बढ़ने के लिए भारत को इलेक्ट्रिक दोपहिया (ई-2डब्यूं) के लिए बदलाव को अवश्यय अपनाना चाहिए। ई-2डब्यूलेक विद्युतीकरण के लिए सबसे आसान है क्योंकि इस श्रेणी में बैटरी का आकार छोटा है और इसमें स्वहचालन एवं बिजली इलेक्ट्रॉनिक्स कम है। ऐसे में उसका विनिर्माण अपेक्षाकृत आसान है। जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है कि हाल में ओला जैसे उद्योग द्वारा की गई पहल इस दिशा में उठाए गए महत्वपूर्ण कदम हैं। ओला ने 33 करोड़ डॉलर के निवेश से एक मेगा-फैक्ट्री स्थाठपित करने की योजना बनाई है जहां 2022 से 1 करोड़ से अधिक इलेक्ट्रिक वाहनों का उत्पादन होगा।

साथ ही, फेम 2 में हालिया बदलावों का जमीनी स्तकर पर प्रभाव पहले से ही देखा जा रहा है। इसी क्रम में रिवोल्ट मोटर्स ने 2 घंटे से भी कम समय में 50 करोड़ रुपये मूल्यस की बाइकों की बिक्री की। स्मार्ट इलेक्ट्रिक मोबिलिटी को अपनाने से भारत की अन्य देशों पर ऊर्जा निर्भरता भी कम होगी। ई-2डब्ल्यू की सफलता निस्संदेह भारत को आत्मनिर्भरता की ओर ले जाएगी और इसे दुनिया का निर्यात केंद्र बनाएगी।

इलेक्ट्रिक वाहनों के विकास का अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रों पर व्यापक प्रभाव पड़ेगा जिसमें बैटरी भंडारण प्रमुख क्षेत्रों में से एक होगा। बैटरी इलेक्ट्रिक वाहन की रीढ़ है जो उसकी लागत का 40-50 प्रतिशत हिस्सां है। भारत को इलेक्ट्रिक वाहनों, उपभोक्ता इलेक्ट्रॉनिक्स और भंडारण में उपयोग के लिए लगभग 1,200 जीडब्यू एच बैटरी की आवश्यकता है। हाल में भारत सरकार ने 2030 तक 31,600 करोड़ रुपये के परिव्यय के साथ एडवांस्ड सेल केमिस्ट्री (एसीसी) बैटरी के विनिर्माण के लिए उत्पादन से जुड़ी प्रोत्साहन (पीएलआई) योजना भी शुरू की है।

पीएलआई योजना के साथ मिलकर फेम 2 की हालिया रीमॉडलिंग देश में बैटरी परिवेश को बेहतर करने के लिए अवसर प्रदान करेगी।

कोविड-19 वैश्विक महामारी ने दुनिया को शून्ये अपशिष्ट वाली स्थीायी जीवन शैली के प्रति बढ़ती जागरूकता के साथ एक क्रांति के शिखर पर ला दिया है। भारत परिवहन के शून्य उत्सर्जन वाले साधनों को आगे बढ़ाने और उस बदलाव का नेतृत्व करने के लिए अच्छी स्थित में है। फेम 2 योजना की हालिया रीमॉडलिंग से इस लक्ष्य को प्राप्त करने में काफी प्रोत्साहन मिलेगा। ये प्रोत्साहन भारत भर में स्वच्छ मोबिलिटी के भविष्य का मार्ग प्रशस्त करेंगे, भारत की परिवहन प्रणाली को समृद्ध करेंगे और भारतीयों द्वारा परिवहन विकल्पत के चयन पर एक अमिट छाप छोड़ेंगे।

लेखक नीति आयोग के सीईओ हैं। ये उनके व्यक्तिगत विचार हैं।

> “भारतीय शहरों में तिपहिया वाहनों का व्याहपक प्रसार देखा गया है क्योंकि ये दूरदराज के इलाकों के लिए किफायती और पॉइंट-टु-पॉइंट कनेक्टिविटी प्रदान करते हैं। इसके अलावा ये कई लोगों के लिए आजीविका के अवसर पैदा भी करते हैं। भारतीय सड़कों पर 20 लाख से अधिक इलेक्ट्रिक रिक्शा चल रहे हैं जो प्रतिदिन 6 करोड़ से अधिक लोगों को परिवहन सुविधा प्रदान करते हैं।

भारत में वयस्क मताधिकार की कहानी

सलिल सरोज

यह बहुत से लोगों को ज्ञात नहीं है कि प्राचीन भारत के कई हिस्सों में सरकार के गणराज्य के स्वरूप मौजूद थे और बौद्ध साहित्य में कई उदाहरण हैं। चौथी शताब्दी ईसा पूर्व में, क्षुद्रक-मल्ला संघ के रूप में जाना जाने वाला एक गणतंत्र संघ था, जिसने सिकंदर महान को मजबूत प्रतिरोध की पेशकश की थी। यूनानियों ने भारत में कई अन्य गणतांत्रिक राज्यों का विवरण छोड़ा है, जिनमें से कुछ को उनके द्वारा शुद्ध लोकतंत्र के रूप में वर्णित किया गया था जबकि अन्य को "कुलीन गणराज्य" कहा गया था।

वोट को "छंद" के रूप में जाना जाता था जिसका शाब्दिक अर्थ है "इच्छा"। इस अभिव्यक्ति का उपयोग इस विचार को व्यक्त करने के लिए किया गया था कि एक सदस्य को वोट देकर, व्यक्ति अपनी स्वतंत्र इच्छा और पसंद व्यक्त कर रहा था। सभा की बैठक में उपस्थित नहीं हो सकने वाले नागरिकों के मतों की गणना के तरीकों के भी प्रमाण हैं। विधानसभा में मतदान के प्रयोजनों के लिए, बहु-रंगीन टिकट होते थे, जिन्हें "शलाका" (पिन) कहा जाता था। ये सदस्यों को तब वितरित किए जाते थे जब एक डिवीजन को बुलाया जाता था और विधानसभा के एक विशेष अधिकारी द्वारा एकत्र किया जाता था, जिसे "शालाकस ग्राहक" (पिनों का संग्रहकर्ता) के रूप में जाना जाता था। इस अधिकारी को विधानसभा की ओर से एक स्वर में तैनात किया जाता था। वोट लेना उसका काम था जो गुप्त या अगोपनीय हो सकता है। अतः इतिहास के संदर्भ में संविधान द्वारा वयस्क मताधिकार के आधार पर देश में लोकतांत्रिक और संसदीय शासन प्रणाली की स्थापना उस ऐतिहासिक धागे के फिर से जुड़ने के समान थी जिसे विदेशी शासन ने तोड़ दिया था। उदार पैमाने पर मताधिकार प्राचीन भारत के विभिन्न हिस्सों में आम था, और सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार प्रदान करके, देश ने साहसपूर्वक राष्ट्रीय आधार पर अपनी चुनावी आकांक्षाओं को पूरा किया।

ब्रिटिश भारत में प्रतिबंधित मताधिकार पर हुए चुनाव ने पूर्ण और सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार के लिए देश की इच्छा को और तेज किया। तब संपत्ति के आधार पर एवं योग्यता, करों के भुगतान आदि के आधार पर मताधिकार के अधिकार पर लगाए गए प्रतिबंधों को मनमाना, अप्राकृतिक और प्रतिगामी माना गया था। 1928 में, भारत के लिए संविधान के सिद्धांतों को निर्धारित करने के लिए सर्वदलीय सम्मेलन द्वारा नियुक्त नेहरू समिति ने इसके पक्ष और विपक्ष में विभिन्न तर्कों पर सावधानीपूर्वक विचार करने के बाद वयस्क मताधिकार को अपनाने की सिफारिश की। निस्संदेह, सामने बेहद दुरूह कठिनाइयाँ थीं और भारत की संविधान सभा को देश के संविधान का मसौदा तैयार करने के लिए इसका सामना करना पड़ा था। लोकतंत्र की सच्ची भावना में, संविधान सभा ने इसमें शामिल कठिनाइयों के पूर्ण ज्ञान के साथ वयस्क मताधिकार के सिद्धांत को बिना किसी हिचकिचाहट के अपनाया। यह वास्तव में भारत के आम आदमी और उसके व्यावहारिक सामान्य ज्ञान में आस्था-विश्वास का एक कार्य था। इस निर्णय ने अपनी भव्यता और जटिलताओं में दुनिया में एक अनूठा और अनोखा प्रयोग शुरू किया। इस अभूतपूर्व प्रयोग ने दुनिया भर का ध्यान आकर्षित किया और कई विदेशी देशों से पत्रकार, राजनेता और अन्य पर्यवेक्षक इसके काम का अध्ययन करने के लिए आए। नेपाल और इंडोनेशिया की सरकारों ने प्रशासनिक और कानूनी दृष्टिकोण से चुनावों के गहन अध्ययन के लिए अधिकारियों को भेजा क्योंकि ये देश भी वयस्क मताधिकार पर सरकार के लोकतांत्रिक स्वरूप की स्थापना के लिए प्रतिबद्ध थे और उनकी भी भारत के समान समस्याएं थीं।

अनुभव बताता है कि वयस्क मताधिकार के सफल संचालन के लिए शिक्षा, हालांकि वांछनीय है, एक आवश्यक शर्त नहीं है। तथापि, यह आवश्यक है कि वयस्क मताधिकार कार्य निष्पक्ष और सुचारू रूप से करने के लिए, दो अन्य शर्तों को ध्यान में रखा जाना चाहिए- चुनाव का संचालन सख्ती से गैर-पक्षपातपूर्ण होना चाहिए और कार्यकारी सरकार को स्वतंत्र और निष्पक्ष चुनाव ईमानदारी और सही इरादे से कराना चाहिए।

> “वोट को 'छंद' के रूप में जाना जाता था जिसका शाब्दिक अर्थ है 'इच्छा'। इस अभिव्यक्ति का उपयोग इस विचार को व्यक्त करने के लिए किया गया था कि एक सदस्य को वोट देकर, व्यक्ति अपनी स्वतंत्र इच्छा और पसंद व्यक्त कर रहा था। सभा की बैठक में उपस्थित नहीं हो सकने वाले नागरिकों के मतों की गणना के तरीकों के भी प्रमाण हैं। विधानसभा में मतदान के प्रयोजनों के लिए, बहु-रंगीन टिकट होते थे।

इतिहास और वर्तमान के साथ जीवन दर्शन

मृत्युंजय कु सिंह

अध्यक्ष बिहार पुलिस एसोसिएशन

इस संसार में जिस इंसान में हिम्मत नहीं है तो उसे विजय नहीं मिलती है और वह जीवन सफर में संघर्ष नहीं किया है तो उसे पहचान और प्रगति नहीं मिलती है। आज इंसान के जीवन सफर में पग - पग पर कठिनाई को देखते हुए कह सकते है कि जीवन एक भीषण संघर्ष है और उस संघर्षरूपी रण क्षेत्र में समाज के शेरदिल मित्र और शुभचिंतक ही सारथी होते आए है। धर्मग्रंथ और इतिहास के पन्ने साक्षी है कि कभी कभी संसार रूपी बगीचे में फूलों और कांटो के बीच एक संघर्षपूर्ण जिंदगी इंसान को फौलाद बनाती है। इंसान के जीवन में कठिनाइयाँ उसे नष्ट करने के लिए नहीं आती बल्कि इंसान में छिपी हुई क्षमता को महसूस कराने के लिए आती हैं।इंसान के मन मस्तिष्क पर बैठा क्षमता रूपी शक्ति या भ्रम की समीक्षा संघर्ष कराती रहती है। उस संघर्ष के वक्त जीवन में धैर्य के साथ प्रतीक्षा करना निर्बलता का नहीं बल्कि इंसान के प्रबलता का द्योतक है जो इंसान के साहस, वीरता और संस्कार के प्रदर्शन को परिलक्षित करता है।वह बिन बताये बुद्धिजीवियों के लिये संदेश के समान है। जीवन सफर में यह एक शक्ति है जो साधारणतया सभी मनुष्यों में पाया जाता है पर पूरे जीवन में कुछ इंसान ही इसका उपयोग कर इस विद्या का प्रदर्शन कर पाते हैं। उस वक्त जो इंसान धैर्य के साथ प्रतीक्षा कर सकता है वह जीवन में कुछ भी ग्रहण करने के लायक होता है और यही उसकी सबसे बड़ी योग्यता होती है।उस वक्त परिणाम जो भी सामने आए वह स्वीकार कर निरंतरता के साथ आगे बढ़ता है। महाभारत साक्षी के रूप में प्रमाणित करता है कि सत्य के साथ न्याय की लड़ाई में निमन्त्रण नहीं भेजे जाते। जिनका जमीर जिन्दा होता है वे खुद समर्थन में आ जाते हैं और यह संसार में दृष्टिगोचर भी होते आया है। संसार में यह भी सत्य है कि वीर योद्धा सदेव वीर इंसान के साथ खड़े होते है। सृष्टि में ईश्वर अवतरित एवं इतिहास महापुरूषों का वंशज कभी घावों से नहीं डरा है।

आज इतिहास के पन्नो में बुद्ध को पढ़ कर वर्तमान में उनके ज्ञान को पिरोकर समझने की जरूरत है। बुद्ध से जुड़े आज संसार में कई उद्धरण कौतूहल भरा सोध का विषय है। संसार में आज भी बुद्ध बहुत सरल दिखते हैं। उनके तन पर एक मात्र वस्त्र हाथ में एक मात्र भिक्षापात्र है पर ऐसी क्या बात उन्मे है कि आज भी असंख्य लोग उनकी वंदना करते हैं। असंख्य लोग उनके पथ का अभ्यास करते हैं। ऐसी क्या बात उनमें थी कि बिम्बिसार, अजातशत्रु, प्रसेनजीत जैसे महान सम्राट बुद्ध की शरण में गए। ऐसी क्या बात उनमें थी कि चक्रवर्ती महान सम्राट अशोक बुद्ध की शरण में गए। ऐसी क्या बात उनमें थी कि बुद्ध काल के 61 दर्शन बुद्ध से संमोहित हो गए। ऐसी क्या बात उनमें थी कि चक्रवर्ती महान सम्राट अशोक और अन्य राजाओं के प्रचार से श्रीलंका थाईलैंड लाओस चीन तिब्बत भूटान मंगोलिया कोरिया म्यांमार जापान जैसे कई देश बौद्ध हो गए।

> “ इंसान के जीवन में कठिनाइयाँ उसे नष्ट करने के लिए नहीं आती बल्कि इंसान में छिपी हुई क्षमता को महसूस कराने के लिए आती हैं।इंसान के मन मस्तिष्क पर बैठा क्षमता रूपी शक्ति या भ्रम की समीक्षा संघर्ष कराती रहती है। उस संघर्ष के वक्त जीवन में धैर्य के साथ प्रतीक्षा करना निर्बलता का नहीं बल्कि इंसान के प्रबलता का द्योतक है ।

ऐसी क्या बात उनमें थी कि भारत ने राष्ट्रपति भवन में एकमात्र गौतम बुद्ध की एतिहासिक प्रतिमा लगाना उचित समझा।ऐसी क्या बात उनमें थी कि भारत ने भारतीय ध्वज में धम्मचक्र को विशेष स्थान दिया।ऐसी क्या बात उनमें थी कि नालंदा विक्रमशिला ओदंतपुरी सोमपुरा सिरपुर जैसे महान विश्वविद्यालय उनके ज्ञान की नींव पर बनें। अपने अंतर्मन के ज्ञान चक्षु से देखने पर सारे प्रश्नों का उतर यह हैं कि बुद्ध उसे कहते है जो पूर्णतः जाग गया हो जिसकी तृष्णा, द्वेष , ईर्ष्या, खत्म हो गई हो, जो पूर्णतः मुक्त हो जिसके सारे संभ्रम, शंकाए खत्म हो गए हो अर्थात जो वह किसी फूल के खिलने को भी उसी प्रकार देखता हो जैसे किसी बच्चे के जन्म को और जो किसी पत्ते के झड़ने को भी वैसे ही देखता हो जैसे अपने शरीर के घाव को जो सुंदर - असुंदर को एक सा देखता हो, जो पूर्णतः संतुलित भावना में आ गया हो जिसकी करुणा सभी जीव - निर्जीव के लिए बराबर हो। सरल शब्दों में कहा जाए तो उन्होंने सत्य को कड़वा नही बल्कि मीठा बताया यानी जस का तस बताया। बुद्ध ने ये बताया कि संसार संघर्ष और पीड़ा से भरा पड़ा है। पर यह भी बताया कि इस संघर्ष और पीड़ा को समाप्त किया जा सकता है। उन्होंने ये भी बताया कि कैसे दो भाइयों के बीच सुलह की जाए और ये भी बताया कि कैसे दो देशों के बीच सुलह की जाए। उन्होनें एक गरीब का भी दुख समझा और एक अमीर का भी दुःख को समझा। आज भी संसार में बुद्ध का मार्ग सभी अंतर और संघर्ष को खत्म करने वाला है। बुद्ध का मार्ग संसार में इंसान के लिए दुःखमुक्ति और शांति का है।इसलिए यह आज भी प्रासंगिक है। बुद्ध दर्शन अनुभूति पर टिका हुआ है जिसे बुद्ध कलाम सुत्त कहते हैं। उसमें बुद्ध कहते है कि किसी बात को इसलिए मत मान लो कि वो किसी पवित्र पुस्तक में लिखी है या उसे बहुत लोग मानते हैं या उसे कोई गुरु कह रहें हैं और नही इसलिए कि स्वयं "बुद्ध" उसे कह रहे हैं।बुद्ध बोले इंसान तुम स्वयं जांचों परखो और उसका अनुभव करो। जब स्वंय के लिए और संसार के लिए वह प्रासंगिक हो तब उसे तुम मानो। वर्तमान संसार के हर खंड में अनेको प्रकार के संघर्षो में जल रही धरती , इंसान के अंदर मौजूद अहंकार को समाप्त करने लिए युद्ध नही बुद्ध की जरूरत है ।बुद्ध कहते हैं तुम स्वयं की शरण में जाना किसी और के शरण में नही जाना और में से अधिकतर तुम्हें शान्ति और समाधान के बदले पीड़ा ही देंगे। आज संसार में इंसान को अपने अंदर बुद्ध को जागृत करने की जरूरत है।मेरा दावा है कि जिस दिन इंसान के अंदर के बुद्ध जग गए धरती पर प्रेम भाईचारे , शान्ति और सुख - समृद्धि का दिपक हर दिशाओं में जलने लगेगा।

> “ सरल शब्दों में कहा जाए तो उन्होंने सत्य को कड़वा नही बल्कि मीठा बताया यानी जस का तस बताया। बुद्ध ने ये बताया कि संसार संघर्ष और पीड़ा से भरा पड़ा है। पर यह भी बताया कि इस संघर्ष और पीड़ा को समाप्त किया जा सकता है। उन्होंने ये भी बताया कि कैसे दो भाइयों के बीच सुलह की जाए और ये भी बताया कि कैसे दो देशों के बीच सुलह की जाए। उन्होनें एक गरीब का भी दुख समझा और एक अमीर का भी दुःख को समझा।

कोरोनाकाल में और भी बढ़ा योग की महत्ता

कोविड-19 के कारण पूरी दुनिया मानो रुक सी गई है। अवसाद और तनाव जैसी विकृतियों ने आमजन की जिंदगी में मजबूती से पकड़ बना ली है। लोगों को तनाव मुक्त रखने के लिए योग ने एक अनोखा तरीका निजात किया है। मतलब साफ है यदि आप अपने मन और शरीर से थक गए हैं लेकिन अपने स्वास्थ्य से प्यार करते हैं तो योग का महत्व समझें। जीवन में योग का बहुत महत्व है। शरीर, मन और आत्मा को नियंत्रित करने में योग मदद करता है। शरीर और मन को शांत करने के लिए यह शारीरिक और मानसिक अनुशासन का एक संतुलन बनाता है। यह तनाव और चिंता को दूर करने में भी सहायता करता है और आपको आराम से रहने में मदद करता है। योगासन शक्ति, शरीर में लचीलेपन और आत्मविश्वास विकसित करने के लिए जानी जाती है। योग न सिर्फ किशोरावस्था में बल्कि उम्र के हर पड़ाव में मददगार साबित हो रहा है। इसलिए योग को अपने जीवन में अपनाने की जरुरत है

सुरेश गांधी

मानव मन आज जितना सशंकित वह भयभीत है, उतना कभी नहीं था। विश्व भर में मची उथल-पुथल और संघर्षों से विचलित मनुष्य सोच रहा है कि जिस दुष्चक्र में यह संसार आज फस गया उससे निकलने में योग कारगर

> योग एक प्राचीन भारतीय जीवन-पद्धति है, जिसकी मदद से शरीर, मन और आत्मा को एक साथ लाने का काम किया जाता है। शरीर, मन और मस्तिष्क को पूर्ण रूप से स्वस्थ रखने में भी यह सहायक है। योग के माध्यम से न सिर्फ बीमारियों का दूर किया जा सकता है, बल्कि शारीरिक एवं मानसिक तकलीफों का भी ईलाज किया जा सकता है।

साबित हुआ है। प्राचीन ग्रंथों के अनुसार नियमित योग करने से व्यक्ति की चेतना ब्रह्मांड की चेतना से जुड़ जाती है, जो मन एवं शरीर मानव एवं प्रकृति के बीच संबंध स्थापित करता है। योग एक प्राचीन भारतीय जीवन-पद्धति है, जिसकी मदद से शरीर, मन और आत्मा को एक साथ लाने का काम किया जाता है। शरीर, मन और मस्तिष्क को पूर्ण रूप से स्वस्थ रखने में भी यह सहायक है। योग के माध्यम से न सिर्फ बीमारियों का दूर किया जा सकता है, बल्कि शारीरिक एवं मानसिक तकलीफों का भी ईलाज किया जा सकता है। योग शरीर की प्रतिरोधक क्षमता को मजबूत बनाकर जीवन में नव-ऊर्जा का संचार करता है। यह विचारों पर संयम रखने का भी साधन है। साथ ही योग की आसन और मुद्राएं तन एवं मन दोनों को क्रियाशील बनाये रखती हैं। या यूं कहे फिजिकली और मेंटली कनेक्टिविटी है योग। योगाभ्यास से ठीक होता है मेटाबॉलिज्म। सांस का अभ्यास करने से शरीर में पर्याप्त मात्रा में ऑक्सीजन पहुंचता है। प्रत्येक अंग स्वस्थ होता है। कोरोनाकाल में जो संक्रमित हुए उन्हें योग से काफी लाभ हुआ, 25-30 दिन के योगाभ्यास से स्वस्थ होने में मदद मिली। फेफड़ों से जुड़े मरीजों को योग से फायदा हुआ। क्योंकि इसके अभ्यास से फेफड़ों को मजबूती मिलती है। शरीर पर्याप्त मात्रा में ऑक्सीजन की मात्रा पहुंचती है। यही वजह है कि अनिश्चितता के इस दौर में योग ने लोगों का विश्वास जीता। उन्हें न सिर्फ शारीरिक व मानसिक रूप से मजबूत बनाया, बल्कि इम्युनिटी पावर भी बढ़ाया।

डब्ल्यूएचओ ने भी स्वस्थ स्वास्थ्य में सुधार के लिए योग की सिफारिश की। डॉक्टरों ने भी कोरोना संक्रमित मरीजों को दवा के साथ योग करने की भी सलाह दी। इस बार भी अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस 21 जून को मनाया जाएगा। यह दिन साल में सबसे बड़ा होता है। योग दिवस मनाने का लक्ष्य लोगों को सबसे लंबे दिन की तरह लंबी और स्वस्थ जिंदगी जीने के लिए प्रेरित करना भी है। कोरोना संकट को देखते हुए इस साल भी लोगों से घरों पर रहकर ही योगासन करने की अपील की गई है। आज की तारीख में इंसान स्वार्थ, क्रोध, ईर्ष्या, घृणा आदि मानवीय विकारों से ग्रस्त है, लेकिन इनपर योग की मदद से काबू पाया जा सकता है और लोग योग के जरिये ऐसा करने में सफल भी हो रहे हैं। जीवन में नियमित आसन और प्राणायाम शरीर एवं मन को निरोगी बनाता है। सच कहा जाये तो योग नियमों के पालन से हमारा जीवन अनुशासित हो जाता है। आज योग से बच्चे, जवान और बूढ़े सभी लाभान्वित हो रहे हैं। कुछ लोग तो इसके आध्यात्मिक पक्ष को अपने जीवन में उतार कर सम्पूर्ण जीवन का आनंद ले रहे हैं। वैसे भी नियमित तौर पर योग करने से शरीर के हर हिस्से को मजबूती मिलती है। ह्रास्वस्थ शरीर में स्वस्थ मन का निवासह्न होता है। इसकी वजह से रोग और दूसरी तकलीफें भी दूर होती हैं। खास बात यह है योग करने से तन-मन में सकारात्मक भाव का संचार भी होता है।

कोरोना काल ने लोगों को बेहतर स्वास्थ्य को लेकर गंभीर किया है। शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता यानी इम्यूनिटी सिस्टम बढ़े, इसके लिए व्यायाम और योग को दैनिक जीवन में शामिल करने की बात कही गयी। क्योंकि योग से रोग तो दूर होता ही है, इसे अपना कर आत्मनिर्भर भी बना जा सकता है। चिकित्सकों का कहना है कि जो मरीज कोरोनाकाल में ग्रसित हुए उन्हें हाई पावर दवा और इंजेक्शन की वजह से बीमारी तो ठीक हुई, पर फेफड़ा सिकुड़ गया। इसे योग के जरिये उन्होंने ठीक किया। निरंतर नारी शोधन प्राणायाम, भ्रामरी प्राणायाम, पवन मुक्तासन समेत अन्य आसन करने से उनकी समस्या दूर हो गयी। कुंजल क्रिया और जल नीति क्रिया से दमा जैसी बीमारी को ठीक किया गया। सूर्य नमस्कार, सर्वांग आसन, मत्यासन, शशांक आसन, मकरासन, भस्त्रीका प्राणायाम, नारी शोधन प्राणायाम, कपाल भारती, भ्रामरी, योग निद्रा और शवासन कराने से मरीजों को काफी राहत मिली। उनके कोलेस्ट्रॉल और शुगर लेवल को ठीक किया गया। कहा जा सकता है आज की भागमभाग जीवनशैली में तन और मन की एकाग्रता के लिए योग संजीवनी का कार्य करता है। मन, वचन और कर्म के नियंत्रण हेतु योग बहुत ही लाभकारी है। योग के माध्यम से जीवन में खुशहाली लायी जा सकती है। इसके अलावा कई ऐसे गंभीर बीमारियां हैं जो योग करने से बिल्कुल ठीक हो जाती हैं। आयुर्वेद में ऐसा कहा गया है कि योग कई गंभीर बीमारियों को जड़ से खत्म करता है। कैंसर जैसी गंभीर बीमारी से लेकर एलर्जी तक हर बीमारी का इलाज योग में है। दावा है कि योग करने से एक दो नहीं कई बीमारियों से

“डब्ल्यूएचओ ने भी स्वस्थ स्वास्थ्य में सुधार के लिए योग की सिफारिश की। डॉक्टरों ने भी कोरोना संक्रमित मरीजों को दवा के साथ योग करने की भी सलाह दी। इस बार भी अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस 21 जून को मनाया जाएगा। यह दिन साल में सबसे बड़ा होता है। योग दिवस मनाने का लक्ष्य लोगों को सबसे लंबे दिन की तरह लंबी और स्वस्थ जिंदगी जीने के लिए प्रेरित करना भी है। कोरोना संकट को देखते हुए इस साल भी लोगों से घरों पर रहकर ही योगासन करने की अपील की गई है।

छुटकारा मिलता है। हलासन करने से पीठ और कमर का दर्द सही रहता है। अगर आपको भी पीठ या कमर के दर्द की परेशानी है तो आप हलासन करें। इससे रीढ़ की हड्डी लचीली हो जाएगी। कैंसर जैसी गंभीर बीमारी का पता अगर शुरूआती अवस्था में पता चल जाता है तो प्राणायाम करने से आप उससे निजात पा सकते हैं। गौर करने वाली बात यह है कि भले ही अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस का आगाज 21 जून 2015 को किया गया। लेकिन भारत में इसका इतिहास 10,000 सालों से भी अधिक पुराना है। योग का जिक्र ऋग्वेद में भी किया गया है। सिंधु घाटी सभ्यता के समय के पशुपति की मुहर ;सिक्काद्ध में भी योग की मुद्रा में आकृतियाँ विराजमान पाई गई हैं। उपनिषद में भी योग से मिलते जुलते शाररिक आसनों या अभ्यासों का उल्लेख मिलता है। य

ोग के मौजूदा स्वरूप का वर्णन कठोपनिषद में किया गया है। भगवद गीता के साथ साथ महाभारत के शांतिपर्व में भी योग के विवरण मिलते हैं। महर्षि पंतजलि को योग का पिता माना गया है। महर्षि पतंजली योगदर्शन को सार्वभौम एवं भारतीय संस्कृति का मूलमंत्र मानते थे। उनके द्वारा लिखे योग सूत्र को योग का सार माना गया है। इन सूत्रों में योग की उत्पत्ति एवं उद्देश्य अंतर्निहित हैं। योग को 3 भागों पहला ज्ञान योग या दर्शनशास्त्र, दूसरा भक्ति योग या भक्ति आनंद का पथ और तीसरा कर्म योग या सुखमय कर्म पथ में बांटा गया है। संस्कृत धातु युज से योग शब्द की उत्पत्ति हुई है, जिसका अर्थ है आत्मा का परमात्मा में मिलन। वैसे आमजन के लिये यह शारीरिक व्यायाम का ही पर्याय है। जबकि वास्तविकता में यह व्यायाम के साथ-साथ भावनात्मक व आध्यात्मिक समेकन का भी प्रतीक है। देखा जाये तो स्वस्थ रहने के लिये योग से बेहतर कोई दूसरा विकल्प नहीं है। इसके बहुआयामी फायदे हैं, लेकिन इसके लिये नियमित रूप से योग करने की जरुरत है।

एक शोध के मुताबिक योग में महिलाओं की भागीदारी का ट्रेंड सभी रिकॉर्ड को पीछे छोड़ने वाला है। चाहे पारंपरिक भारतीय योग क्लास हो या अमरीका में मौजूद शानदार मॉर्डन योग स्टूडियो। योगनियों (महिला योग प्रशिक्षक) का राज हर जगह है। योग कपड़े का बाजार हो या इन्स्टाग्राम पोस्ट, महिलाएं फैन्सी योग पोज में पुरुष फिटनेस को चैलेंज देती नजर आती हैं। दरअसल योग ने महिलाओं की दुनिया बदल दी है, इसलिए नहीं कि योग का ट्रेंड चल पड़ा है, बल्कि महिलाओं के अंदर हो रही सभी तरह की शारीरिक, मानसिक, हॉर्मोनल और मूड बदलाव में योग सबसे भरोसेमंद सहयोगी बनकर सामने आया है। महिलाओं की शारीरिक संरचना, उनके रोग और तकलीफें पुरुषों से अलग होती हैं। यही वजह है कि महिलाएं बालकासन, अधोमुख श्वान आसन, सेतुबंधासन, सुप्त बद्धकोणासन, उपविस्ट कोणासन, विपरीत करणी, प्राणायाम के जरिए शरीर को स्वस्थ रखने में सफल होती है। जलनेति, जो नासिकाओं को साफ करती है। त्राटक- आंखों और ऑप्टिक नसों की रक्षा करने के लिए। इस दौरान कपाल भाति का अभ्यास सर्वोत्तम है।

हस्तपादांगुष्ठासन, पवनमुक्तासन और यष्टिकासन महत्वपूर्ण अंगों में रक्त प्रवाह में सुधार करेंगे। जैसे-जैसे रक्त परिसंचरण बढ़ता है, संक्रमण से लड़ने वाली कोशिकाओं का प्रवाह तेज होगा, जो इस प्रकार आपकी रोग प्रतिरोधक प्रणाली को बढ़ावा देता है। योग में ध्यान सबसे महत्वपूर्ण अंग है और यह योग के उद्देश्य को परिपूर्ण करता है। यह शरीर, मस्तिष्क और आत्मा की औषधि है। ध्यान एक आत्मक्रिया है, जो स्वयं को बेहतर करने के लिए की जाती है। यह माना जाता है कि एक मुद्रा में बैठना ही ध्यान है, लेकिन आंतरिक स्थिरता का क्या? आसान शब्दों में कहें, तो ध्यान वह प्रक्रिया है, जो मस्तिष्क को ज्यादा शांत, केंद्रित और जागरूक बनाती है। ध्यान मस्तिष्क के लिए वही काम करता है, जो व्यायाम शरीर के लिए करता है।

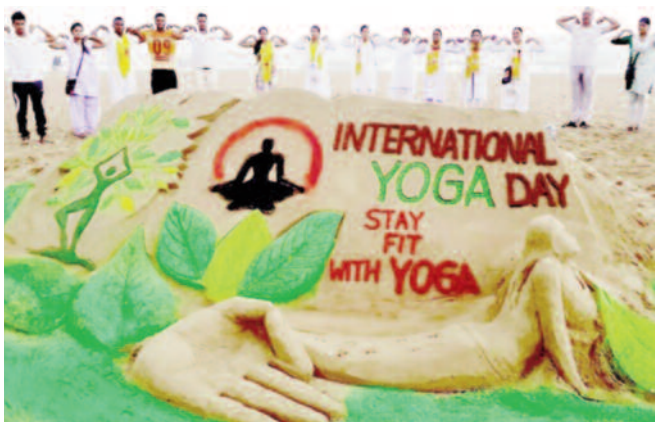

स्वयं को जानने की कला है योग

योग केवल व्यायाम मात्र नहीं, बल्कि स्वयं को जानने और प्रकृति को पहचानने की भी कला है। इन दोनों को यदि समझ लिया जाय तो संसार से नकारात्मक को निकाल सकारात्मकता का संचार किया जा सकता है। भारत योग की जन्मभूमि है। आज इसका डंका पूरे विश्व में बज रहा है। दुनिया के हर देश में योग की चर्चा है।

बता दें, भारतीय संस्कृति दुनिया की सबसे पुरानी संस्कृतियों में से एक है। भाारत ने दुनिया को बहुत कुछ दिया है और इन्हीं में से एक योग भी है। आज योग सिर्फ भारत की सीमाओं तक ही सीमित नहीं है बल्कि अब इसे अंतरराष्ट्रीय ख्याति मिल चुकी है। इसे योग की महिमा ही कहा जाएगा कि आज दुनिया भर के लोग इसे अपनी जीवनशैली का हिस्सा बना रहे हैं। या यूं कहे स्वस्थ जीवन जीने की कला को योग कहते हैं। योग शब्द संस्कृत भाषा के युज (लनर) से लिया गया है जिसका अर्थ है एक साथ जुड़ना। यानी मन-मस्तिष्क एवं शरीर पर नियंत्रण रखने एवं खुशहाल जीवन के लिए योग काफी लोकप्रिय है। काया को स्वस्थ और निरोगी बनाए रखने के लिए योग से बेहतर कुछ नहीं। यही नहीं योग आपके जीवन में सकारात्मक ऊर्जा भी लेकर आता है। यही वजह है कि हाल के दिनों में अगर सबसे ज्यादा क्रेज किसी का देखा गया है तो वह योग है।

इस दिन सबसे बड़ा दिन

अब योग ने पश्चिमी दुनिया में भी अपना रास्ता खोज लिया है। अब भारत से बाहर दूसरी संस्कृतियों ने भी योग को अपना लिया है। 21 जून वही तिथि है जब उत्तरी गोलार्ध में साल का सबसे लंबा दिन है, इसका दुनिया के कई हिस्सों में खास महत्व है। इस दिन ग्रीष्मकालीन संक्रांति का दिन होता है, इस दिन उत्तरी गोलार्ध में किसी ग्रह के अक्ष का झुकाव उस तारे की ओर सबसे अधिक झुका होता है जिसकी वह परिक्रमा करता है। भारत में यह पृथ्वी और सूर्य पर लागू होता है। इसके अलावा 21 जून को वर्ष का सबसे लंबा दिन माना जाता है जिसमें सूर्य जल्दी उगता है और सबसे देर में सूर्यास्त होता है। भारतीय पौराणिक कथाओं में भी इसे खास दिन माना जाता है।

इससे एक ऐसी घटना जुड़ी मानी जाती है जिसे योगिक विज्ञान की शुरूआत माना जा सकता है। एक पौराणिक कथा के अनुसार सात लोग आदि योगी के पास आत्मज्ञान के लिए गए। लेकिन वे अपने शरीर में उपस्थित नहीं थे, इसलिए वे चले गए। फिर ये लोग शिव के पास गए और आदि योगी से सीखने की जिद पर अड़े रहे लेकिन शिव ने यह कहकर मना कर दिया कि इसके लिए लंबी तैयारी चाहिए। वहां से निकलकर इन सात लोगों ने फिर 84 साल की साधना की। इस दौरान शिव का उन पर ध्यान गया, यह ग्रीष्मकालीन संक्रांति का दिन था। उसके 28 दिनों के बाद अगली पूर्णिमा पर आदि योगी ने खुद को आदि गुरु में बदल दिया और अपने शिष्यों को योग विज्ञान सिखाना शुरू कर दिया। योग दिवस के दिन लोग योग कर लंबे जीवन का संकल्प लेते हैं।

> अब योग ने पश्चिमी दुनिया में भी अपना रास्ता खोज लिया है। अब भारत से बाहर दूसरी संस्कृतियों ने भी योग को अपना लिया है। 21 जून वही तिथि है जब उत्तरी गोलार्ध में साल का सबसे लंबा दिन है, इसका दुनिया के कई हिस्सों में खास महत्व है। इस दिन ग्रीष्मकालीन संक्रांति का दिन होता है, इस दिन उत्तरी गोलार्ध में किसी ग्रह के अक्ष का झुकाव उस तारे की ओर सबसे अधिक झुका होता है।

देश में बेरोजगारी दर बढ़ी..!

आनन्द चौधरी/ नई दिल्ली

कोविड-19 महामारी की दूसरी लहर और उसकी रोकथाम के लिये स्थानीय स्तर पर लगाये गये ह्यलॉकडाउन' और अन्य पाबंदियों की वजह से 75 लाख से अधिक लोगों को नौकरियों से हाथ धोना पड़ा है। इससे बेरोजगारी दर उच्चतम स्तर पर पहुंच गयी है।

सेंटर फॉर मॉनिटरिंग इंडियन एकोनॉमी (सीएमआईई) के प्रबंध निदेशक और मुख्य कार्यपालक अधिकारी (सीईओ) महेश व्यास के अनुसार आने वाले समय में भी रोजगार के मोर्चे पर स्थिति चुनौतीपूर्ण बने रहने की आशंका है..? उन्होंने कहा, ह्यमार्च की तुलना में अप्रैल महीने में हमने 75 लाख नौकरियां गंवाई। इसके कारण बेरोजगारी दर बढ़ी है।

पिछले दिनों सेंटर फॉर मॉनिटरिंग इंडियन इकॉनोमी ने लोगों की आमदनी पर सर्वे किया था। जिसके आंकड़े जारी किए गए हैं। जिसमें बताया गया है कि मई के महीने में भारत की बेरोजगारी दर 11.6 फीसदी है। सीएमआईई के आंकड़े बताते हैं कि ग्रामीण भारत के बजाय शहरी क्षेत्रों में बेरोजगारी ज्यादा बढ़ी है। जहां शहरी क्षेत्र में बेरोजगारी दर 13.9 फीसदी है। वहीं ग्रामीण क्षेत्र में यह 10.6 फीसदी है। सर्वे एक लाख पचहत्तर हजार परिवारों पर किया गया था, जिसमे 55 प्रतिशत परिवारों ने कहा कि उनकी आमदनी कम हुई है। केवल 3 प्रतिशत परिवारों ने बताया कि उनकी आमदनी बढ़ी है। जबकि शेष 42 फीसदी परिवारों ने बताया कि उनकी आमदनी न घटी है और न ही बढ़ी है।

जहां तक राज□यों की बात है तो एक समय में औद्योगिक हब कहा जाने वाला हरियाणा आज बेरोजगारी में नंबर एक पर आ गया है। सीएमआई ई की रिपोर्ट के अनुसार सभी राज□यों में हरियाणा बेरोजगारी के मामले में सबसे आगे है। यहां के 35.1 फीसदी लोग आज बेरोजगारी की मार झेल रहे हैं।

वहीं दूसरे राज□यों की बात करें तो बेरोजगारी दर बढ़ने के मामले में दूसरे नंबर पर राजस□थान है। मई के महीने में यहां 28 फीसदी लोग बेरोजगार हो गए हैं। तीसरे नंबर पर देश की राजधानी दिल□ली है। सीएमआईई के अनुसार दिल्ली में बेरोजगारी दर 27.3 फीसदी पर पहुंच गई है। चौथे नंबर पर 25.7 फीसदी बेरोजगारी दर के साथ पर्यटन के लिए मशहूर गोवा है। इनके बाद त्रिपुरा, झारखंड और बिहार में बेरोजगारी दर 10 फीसदी से ऊपर बनी हुई है। जहां तक उत्तर प्रदेश की बात है तो यहां 6.3 फीसदी बेरोजगारी दर देखी गई है। सी एम आई ई के अनुसार देश के 97 प्रतिशत लोगों की आमदनी, वर्तमान आपदा काल के बाद घटी है। जबकि तीन प्रतिशत लोगों की आमदनी में अभूतपूर्व बढ़ोतरी हुई है। आज आम नागरिकों की हालत कैसी है, वो किस तरह अपना खर्च चला रहे हैं, इसका अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि अप्रैल 2020 से लेकर मई 2021 तक साढ़े तीन करोड़ पीएफ खाता धारकों ने अपने भविष्य के लिए सुरक्षित, संरक्षित रकम में से लगभग 1.25 लाख करोड़ रुपए, अपने सेवानिवृति से पहले निकाल लिया है जिसे उन्होंने भविष्य के लिए सुरक्षित रखा था।

पिछले दिनों वित्त मंत्री निर्मला सीतारमन ने एमएसएमई (टरटए) सेक्टर के लिए आर्थिक पैकेज का ऐलान किया। जिसे अर्थव्यवस्था के जानकार लघु व मध्यम उद्योग के लिए कर्ज योजन बता रहे हैं। वित्त मंत्री के अनुसार इस पैकेज से अर्थव्यवस्था में सुधार होगा और उद्योग जगत में नौकरियां पैदा होंगी..? जबकि अर्थव्यवस्था के जानकार बताते हैं कि जब लोगों के जेब में पैसा हीं नहीं होगा.. लोग खर्च नही करेंगे.. व्यापारियों का माल नहीं बिकेगा.. फिर अर्थव्यवस्था का सुधार कैसे होगा..? आज की वास्तविक स्थिति ये है कि देश की आधी से ज्यादा आबादी के पास कोई रोजगार नहीं है। जिसके पास है उनकी आमदनी घटी है। महंगाई अपने उच्चतम स्तर पर पहुंच गया है। जीवन यापन मुश्किल हो चला है। युवाओं में आक्रोश बढ़ रहा है..? अतः सरकार को कुछ ऐसी आर्थिक नीति बनाने की आवश्यकता है जिससे आम आदमी के जेब में कुछ पैसा आये.. बाजार फिर से गुलजार हो सके तभी अर्थव्यवस्था भी सुधरेगी, और रोजगार का भी सृजन हो सकेगा..?

> “उन्होंने बताया कि पर्यावरण में वायु, जल और भूमि पर, पौधे, जीव-जंतु, मानव और इनकी गतिविधियों का समावेश होता है। इसलिए पर्यावरण की सुरक्षा और संरक्षण का ध्यान रखना हमारा परम दायित्व है। सभी लोगों को अपने-अपने स्तर से पर्यावरण बचाने पर, योगदान देना चाहिए, इसके लिए आसपास लगे पेड़ों को जीवित रखना होगा।

प्राकृतिक डाई रस हमारी आंखों को हानिकारक लेजर विकिरण से बचाने में सक्षम

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय

वैज्ञानिकों ने पाया है कि बीन परिवार के पौधे की पत्तियों से निकाली गई प्राकृतिक नील डाई मानव आंखों को हानिकारक लेजर विकिरण से बचाने में सक्षम है। इसका उपयोग संभावित हानिकारक विकिरण को कमजोर करने और मानव आंखों या अन्य संवेदनशील ऑप्टिकल उपकरणों को ऐसे वातावरण में अचानक क्षति से बचाने के लिए उपयोगी ऑप्टिकल लिमिटर विकसित करने के लिए किया जा सकता है जहां ऐसे लेजर उपयोग में हैं।

इंडिगोफेराटिनक्टोरिया या प्रसिद्ध इंडिगो पौधे से निकाली गई नीली डाई का उपयोग वर्षों से कपड़े और कपड़ों की सामग्री को रंगने के लिए किया जाता रहा है। हालांकि, सिंथेटिक इंडिगो डाई अब आम उपयोग के लिए प्राकृतिक किस्म में भी उपलब्ध है। इसे वैज्ञानिक प्रयोगशालाओं में स्टैंडर्ड प्रोटोकॉल का पालन करते हुए पौधे की पत्तियों से निकाला जाता है।

रमन रिसर्च इंस्टीट्यूट (आरआरआई), बेंगलुरु और केंसरी स्कूल एंड कॉलेज, बेंगलुरु के शोधकताओं ने प्राकृतिक इंडिगो डाई के ऑप्टिकल गुणों का अध्ययन किया और पाया कि यह मानव आंखों को हानिकारक लेजर विकिरण से बचाने के लिए एक उपकरण के रूप में कार्य कर सकता है। भारत सरकार के विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग द्वारा वित्त पोषित अध्ययन, 'ऑप्टिकल मैटेरियल्स' पत्रिका में प्रकाशित हुआ था।

शोधकताओं ने डाई को निकाला और इसके प्राकृतिक गुणों को संरक्षित करने के लिए इसे 4◦ सेल्सियस से नीचे के रेफ्रिजरेटर में संग्रहीत किया। इलेक्ट्रोमैग्नेटिक स्पेक्ट्रम के विभिन्न तरंग दैर्ध्य में प्रकाश को कितना अवशोषित करता है, इस पर उनके अध्ययन से पता चला है कि अवशोषण स्पेक्ट्रम के पराबैंगनी क्षेत्र में अधिकतम 288 नैनोमीटर के तरंग दैर्ध्य पर और दृश्य क्षेत्र में 660 नैनोमीटर के करीब होता है। हरी बत्ती के लिए भी अवशोषण तुलनात्मक रूप से अधिक होता है। "आणविक अवशोषण बैंड के कारण इंडिगो प्रकाश को अवशोषित करता है। आरआरआई के प्रोफेसर और अध्ययन के सह-लेखक, रेजी फिलिप ने बताया कि डाई के विलायक और एकाग्रता के आधार पर अधिकतम अवशोषण तरंगदैर्ध्य कई नैनोमीटर से भिन्न हो सकता है। तरंग दैर्ध्य के साथ अवशोषण की भिन्नता ने संकेत दिया कि क्लोरोफिल, एक कार्बनिक यौगिक प्रकाश संश्लेषण में भाग लेता है जो डाई में मौजूद है।

शोधकर्ता यह अध्ययन करना चाहते थे कि क्या इनपुट प्रकाश की तीव्रता अधिक होने पर कार्बनिक डाई ने अतिरिक्त अवशोषण दिखाया है।

टीम ने पाया कि जब वे लेजर पल्स की तीव्रता बढ़ाते हैं, तो डाई अधिक प्रकाश को अवशोषित करता है। अर्थात, यह उच्च तीव्रता वाले प्रकाश के लिए अधिक अपारदर्शी है। वैज्ञानिक ऐसी सामग्री को 'ऑप्टिकल लिमिटर' कहते हैं।

ऑप्टिकल लिमिटर्स शक्तिशाली लेजरों द्वारा उत्सर्जित संभावित हानिकारक विकिरण को कमजोर करने और दोनों आंखों और संवेदनशील ऑप्टिकल उपकरणों की रक्षा करने में उपयोगी होते हैं। रेजी ने बताया, "प्राकृतिक इंडिगो का उपयोग करके एक प्रोटोटाइप ऑप्टिकल लिमिटर बनाना अगला तार्किक कदम है, इसके बाद एक व्यावसायिक जरूरत के ध्यान में रखकर उत्पाद बनाना है।"

> “शोधकताओं ने डाई को निकाला और इसके प्राकृतिक गुणों को संरक्षित करने के लिए इसे 4 सेल्सियस से नीचे के रेफ्रिजरेटर में संग्रहीत किया। इलेक्ट्रोमैग्नेटिक स्पेक्ट्रम के विभिन्न तरंग दैर्ध्य में प्रकाश को कितना अवशोषित करता है, इस पर उनके अध्ययन से पता चला है कि अवशोषण स्पेक्ट्रम के पराबैंगनी क्षेत्र में अधिकतम 288 नैनोमीटर के तरंग दैर्ध्य पर और दृश्य क्षेत्र में 660 नैनोमीटर के करीब होता है।

अनाथों के नाथ है बाबा विश्वनाथ

काशी विश्वनाथ ज्योतिर्लिंग दो भागों में बंटा हुआ है। ज्योतिर्लिंग का दाहिने भाग में शक्ति के रूप में मां भगवती विराजमान हैं तो दूसरी तरफ भगवान शिव वाम रूप (सुंदर) रूप में विराजमान हैं। यही वजह है कि काशी को मुक्ति का धाम कहा जाता है। मंदिर में श्रृंगार के समय सारी मूर्तियां पश्चिम मुखी होती हैं। इस ज्योतिर्लिंग में शिव और शक्ति दोनों एक साथ ही विराजते हैं, जो न सिर्फ बेहद अद्भुत है बल्कि ऐसा दुनिया में कहीं और देखने को नहीं मिलता है। बाबा विश्वनाथ दरबार में गर्भ गृह का शिखर है। इसमें ऊपर की ओर गुंबद श्री यंत्र से मंडित है। तांत्रिक सिद्धि के लिए ये उपयुक्त स्थान माना जाता है। इसे श्री यंत्र-तंत्र साधना के लिए प्रमुख माना जाता है। तंत्र की दृष्टि से चार प्रमुख द्वार इस प्रकार हैं- शांति द्वार, कला द्वार, प्रतिष्ठा द्वार, निवृत्ति द्वार। इन चारों द्वारों का तंत्र में अलग ही स्थान है। पूरी दुनिया में ऐसी कोई जगह नहीं है जहां शिवशक्ति एक साथ विराजमान हों और वहां तंत्र द्वार भी मौजूद हो। बाबा विश्वनाथ काशी में गुरु और राजा के रूप में विराजमान है। वह दिनभर गुरु रूप में काशी में भ्रमण करते हैं। रात्रि नौ बजे जब बाबा का श्रृंगार आरती किया जाता है तो वह राज वेश में होते हैं। यही वजह है कि भगवान शिव को राजराजेश्वर भी कहा जाता है

सुरेश गांधी

वैसे तो ये पूरा जगत शिवमय है। क्योंकि शिव ही इस जगत के आधार हैं। लेकिन काशी के कण-कण में देवत्व की बात कही जाती है। यहां बाबा विश्वनाथ के चमत्कार की ढेरों कहानियां भरी पड़ी हैं। मान्यता है कि जब पृथ्वी का निर्माण हुआ था तब प्रकाश की पहली किरण काशी की ही धरती पर पड़ी थी। तभी से काशी ज्ञान तथा आध्यात्म का केंद्र माना जाता है। धर्मग्रन्थों और पुराणों में भी काशी को मोक्ष की नगरी कहा गया है, जो अनंतकाल से बाबा विश्वनाथ के भक्तों के जयकारों से गूंजती आयी है। कहते हे सावन में यहां आकर भोले भंडारी के दर्शन कर जिसने भी रूद्राभिषेक कर लिया, उसकी सभी मुरादें हो जाती हैं। जीवन धन्य हो जाता है। गंगा में स्नान करने मात्र से सभी पाप धुल जाते हैं। उसके लिए मोक्ष के द्वार खुल

“ मान्यता है कि जब पृथ्वी का निर्माण हुआ था तब प्रकाश की पहली किरण काशी की ही धरती पर पड़ी थी। तभी से काशी ज्ञान तथा आध्यात्म का केंद्र माना जाता है। धर्मग्रन्थों और पुराणों में भी काशी को मोक्ष की नगरी कहा गया है, जो अनंतकाल से बाबा विश्वनाथ के भक्तों के जयकारों से गूंजती आयी है। कहते हे सावन में यहां आकर भोले भंडारी के दर्शन कर जिसने भी रूद्राभिषेक कर लिया।

जाते हैं। यहां आने भर से ही भक्तों की पीड़ा दूर हो जाती है। तन-मन को असीम शांति मिलती है। क्योंकि यहां स्वयं भगवान शिव माता पार्वती संग विराजते हैं

तीनों लोकों में न्यारी, धर्म एवं आस्था से जुड़ा शिव की नगरी काशी पतित पावनी मां गंगा के तट पर देवादिदेव महादेव की त्रिशूल पर बसी है। यहां साक्षात बाबा भोलेनाथ मां पार्वती के साथ वास करते हैं, जिन्हें बाबा विश्वनाथ के नाम से जाना जाता है। इन्हें आनन्दवन, आनन्दकानन, अविमुक्त क्षेत्र तथा काशी आदि अनेक नामों से भी स्मरण किया जाता है। शास्त्रों की मानें तो पूरे दुनिया में काशी मात्र एक स्थल है जहां सावन में शिव के साथ मां पार्वती उदयमान रहते हैं और सबको दर्शन देते हैं। यही कारण है की द्वादश ज्योतिलिंगों में काशी के बाबा विश्वनाथ प्रधान माने गए हैं। देश भर के भक्त मां गंगा का जल लेकर बाबा विश्वनाथ का जलाभिषेक करते हैं। सावन के महीनों में तो एक लोटा जल चढ़ा देने मात्र से मिल जाता है मां पार्वती संग बाबा विश्वनाथ का भी आशीर्वाद। कहते है सावन में भोलेनाथ के यहां जो अपनी इच्छा लेकर आता है, वो खाली हाथ नहीं लौटता। इस मंदिर में स्थापित शिवलिंग 12 ज्योतिलिंगों में सातवां स्थान रखता है। द्वादश ज्योतिलिंगों में काशी विश्वेश्वर (विश्वनाथ) लिंग एक मात्र ऐसा ज्योतिर्लिंग है जिसके दर्शन मात्र से शेष 11 ज्योतिलिंगों के दर्शन का पुण्य भी प्राप्त होता है। इस ज्योर्तिलिंग की दर्शन व गंगा स्नान के साथ ही रोजाना सुबह 4 से 6 बजे के बीच दर्शन-पूजन एवं सायंकाल होने वाली गंगा आरती में शरीक होने मात्र से ही श्रद्धालुओं की हर मनोकामनाएं पूरी हो जाती है। यहां जीवन और मौत के चक्र को खत्म कर मोक्ष प्रदान होता है।

इतना ही नहीं, कहते हैं महादेव अपने इस दर पर किसी भी भक्त खाली नहीं लौटने देते हैं। काशी क्षेत्र में कदम रखते ही शिव की शक्ति का, उनकी ख्याति का एहसास होता है। मंदिर का शिखर देवाधिदेव की महिमा का बखान करता है, जहां अपने भव्य रूप में महादेव भक्तों का कल्याण करते हैं। यही वजह है कि उम्मीदों की खाली झोली लिए श्रद्धालु सुबह से ही बाबा विश्वनाथ के दर्शनों के लिए उमड़ने लगते हैं। यहां आने वाले हर श्रद्धालु के मन में ये अटूट विश्वास होता है कि अब उनकी सारी मुशीबतों का अंत हो जाएगा। यहां कोई अपने पापों के प्रायश्चित के लिए आता है, तो कोई अपने सुहाग की लंबी आयु की मन्नत लेकर बाबा की आराधना करता है, तो कोई अपने नौनिहाल को भगवान के दरबार में इस उम्मीद के साथ लेकर आता कि भगवान से उसे लंबे और निरोगी जीवन का आशीर्वाद मिल सके। देश दुनिया की सीमा से परे हर रोज हजारों श्रद्धालु यहां पहुंचते हैं।

मंदिर में सबसे पहले भक्तों की भेंट भगवान के प्रिय वाहन नंदी से होती है, जिन्हें देखकर ऐसा लगता है मानो नंदी भगवान के हर भक्त की अगुवायी कर रहे हों। मंदिर के अंदर पहुंच कर एक अलग ही दुनिया में होने का एहसास होता है, जिस तरफ भी नजर पड़ती है भगवान के चमत्कार का कोई न कोई रूप नजर आता है। भगवान के अद्भुत रूप के श्रृंगार का साक्षी बनने का मौका कोई भी भक्त गवाना नहीं चाहता। यहां देवों के देव महादेव का सबसे पहले पंचामृत स्नान कराया जाता है। स्नान के बाद बारी आती है उनके भव्य और अलौकिक श्रृंगार की। शिवलिंग पर चदंन से ऊं अंकित किया जाता है और फिर बेलपत्र अर्पित किया जाता है। शिव भक्ति में डूबे भक्त अपने आराध्य का यह अलौकिक रूप देखते ही रह जाते हैं। उन्हें इस बात का एहसास होने लगता है कि यह जीवन धन्य हो गया। बाबा की पूजा के बाद मंदिर के पुजारी भगवान के हर रूप की आराधना करते हैं, जिसे देखना अपने आप में सौभाग्य की बात है। जाते जाते भक्त भगवान के वाहन नंदी जी से अपनी मन्नतें भगवान तक पहुंचाने की सिफारिश करना नहीं भूलते, क्योंकि भक्तों का मानना है कि उनके आराध्य तक उनकी हर गुहार नंदी जी ही पहुंचाते हैं।

मंदिर की बनावट और मंदिर की दीवारों पर की गई शिल्पकारी शिव भक्ति का उत्कृष्ट नमूना है। कहते हैं सृष्टि की रचना के समय भी यह शिवलिंग मौजूद था। ऋग्वेद में भी इसके महत्व का बखान किया गया है। पतित पावनी मां गंगा साक्षात बाबा विश्वनाथ से चंद कदम की दूरी पर बहती हैं। सोमवार का दिन बाबा को बहुत प्रिय है। काशी में मां गंगा के जल से भगवान भोलेनाथ का जलाभिषेक करने से जन्म-जन्मांतर के पापों से मुक्ति मिल जाती है। काशी शिव भक्तों की वो मंजिल है जो सदियों से यहां मोक्ष की तलाश में आते रहे हैं। कहते हैं अगर भक्तों के जीवन में ग्रह दशा के कारण परेशानी आ रही है, ग्रहों की चाल ने जीना दूभर कर दिया है तो यहां आकर दर्शन करने के बाद यदि रुद्राभिषेक करा दिया जाए तो भक्तों को ग्रह बाधा से मुक्ति मिल जाती है। स्कंध पुराण में 15000 श्लोको में काशी विश्वनाथ का गुणगान मिलता है। इससे सिद्ध होता है कि यह मंदिर हजारो वर्ष पुराना है। जो प्रलयकाल में भी लोप नहीं हो सका। कहते है काशी पर जब कोई आपदा आनी होती है तो उस समय भगवान शंकर इसे अपने त्रिशूल पर धारण कर लेते हैं। सृष्टि काल आने पर इसे नीचे उतार देते हैं। इसी स्थान पर भगवान विष्णु ने सृष्टि उत्पन्न करने का कामना से तपस्या करके आशुतोष को

“मंदिर की बनावट और मंदिर की दीवारों पर की गई शिल्पकारी शिव भक्ति का उत्कृष्ट नमूना है। कहते हैं सृष्टि की रचना के समय भी यह शिवलिंग मौजूद था। ऋग्वेद में भी इसके महत्व का बखान किया गया है। पतित पावनी मां गंगा साक्षात बाबा विश्वनाथ से चंद कदम की दूरी पर बहती हैं। सोमवार का दिन बाबा को बहुत प्रिय है। काशी में मां गंगा के जल से भगवान भोलेनाथ का जलाभिषेक करने से जन्म-जन्मांतर के पापों से मुक्ति मिल जाती है।

प्रसन्न किया था और फिर उनके शयन करने पर उनके नाभि-कमल से ब्रह्मा उत्पन्न हुए, जिन्होने सृष्टि की रचना की। अगस्त्य मुनि ने भी विश्वेश्वर की बड़ी आराधना की थी और इन्हीं की अर्चना से श्री वशिष्ठजी तीनों लोकों में पुजित हुए तथा राजर्षि विश्वामित्र ब्रह्मर्षि कहलाये।

दो रुपों में होता है बाबा का दर्शन

काशी ही एक ऐसा तीर्थस्थल है जहां महादेव के दो रूपों का दर्शन होता है। खासियत यह है कि महादेव के दोनों रुपों को बाबा विश्वनाथ के नाम से पुकारा जाता है। पहला दिव्य मंदिर मां गंगा किनारे स्थापित है तो दुसरा काशी हिन्दू विश्व विद्यालय परिसर में। मान्यता है कि अगर कोई भक्त बाबा विश्वनाथ के दरबार में हाजिरी लगाता है तो उसे जन्म-जन्मांतर के चक्र से मुक्ति मिल जाती है। बाबा का आशीर्वाद अपने भक्तों के लिए मोक्ष का द्वार खोल देता है। ऐसी मान्यता है कि एक भक्त को भगवान शिव ने सपने में दर्शन देकर कहा था कि गंगा स्नान के बाद उसे दो शिवलिंग मिलेंगे और जब वो उन दोनों शिवलिंगों को जोड़कर उन्हें स्थापित करेगा तो शिव और शक्ति के दिव्य शिवलिंग की स्थापना होगी और तभी से भगवान शिव यहां मां पार्वती के साथ विराजमान हैं। एक दूसरी मान्यता है कि मां भगवती ने खुद महादेव को यहां स्थापित किया था। सोमवार को चढ़ाए गए जल का पुण्य विशेष फलदायी होता है। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय परिसर में मौजूद काशी विश्वनाथ मंदिर कहने को नया है, लेकिन इस मंदिर का भी महत्व उतना ही है जितना पुराने काशी विश्वनाथ का। नए विश्वनाथ मंदिर के बाबत कहा जाता है कि एक बार पंडित मदन मोहल मालवीय जी ने बाबा विश्वनाथ की उपासना की, तभी शाम के समय उन्हें एक विशालकाय मूर्ति के दर्शन हुए, जिसने उन्हें बाबा विश्वनाथ की स्थापना का आदेश दिया। मालवीय जी ने उस आदेश को भोले बाबा की आज्ञा समझकर मंदिर का निर्माण कार्य आरंभ करवाया। लेकिन बीमारी के चलते वो इसे पूरा न करा सके। तब मालवीय जी की मंशा जानकर उद्योगपति युगल किशोर बिरला ने इस मंदिर के निर्माण कार्य को पूरा करवाया। मंदिर में लगी देवी-देवताओं की भव्य मूर्तियों का दर्शन कर लोग जहां अपने आप को कृतार्थ करते हैं, वहीं मंदिर के आस-पास आम कुंजों की हरियाली एवं मोरों की आवाज से भक्त भावविभोर हो जाते हैं। इस भव्य मंदिर के शिखर की सर्वोच्चता के साथ ही यहां का आध्यात्मिक, धार्मिक, पर्यावरणीय माहौल दुनियाभर के श्रद्धालुओं को आकर्षित करता है। विश्वविद्यालय के प्रांगण में होने के कारण खासकर युवा पीढ़ी के लिए यह मंदिर विशेष आकर्षण का केंद्र बन चुका है।

मां पार्वती संग विराजते है बाबा विश्वनाथ

वैसे तो काशी विश्वनाथ ज्योतिर्लिंग के संबंध में कई पौराणिक कथाएं प्रचलित हैं। एक कथानुसार जब भगवान शंकर पार्वती जी से विवाह करने के बाद कैलाश पर्वत रहने लगे तब पार्वती जी इस बात से नाराज रहने लगीं। उन्होंने अपने मन की इच्छा भगवान शिव के सम्मुख रख दी। अपनी प्रिया की यह बात सुनकर भगवान शिव कैलाश पर्वत को छोड़ कर देवी पार्वती के साथ काशी नगरी में आकर रहने लगे। इस तरह से काशी नगरी में आने के बाद भगवान शिव यहां ज्योतिर्लिंग के रूप में स्थापित हो गए। तभी से काशी नगरी में विश्वनाथ ज्योतिर्लिंग ही भगवान शिव का निवास स्थान बन गया। माना यह भी जाता है कि काशी विश्वनाथ ज्योतिर्लिंग किसी मनुष्य की पूजा, तपस्या से प्रकट नहीं हुआ, बल्कि यहां निराकार परमेश्वर ही शिव बनकर विश्वनाथ के रूप में साक्षात प्रकट हुए।

पांच आरती

बाबा विश्वनाथ की पांच बार आरती होती है। सबसे पहले मंगला आरती भोर में दो बजे से तीन बजे तक होती है। इसे ह्यब्रह्म मुहूर्तह्य की आरती भी कहते हैं। माना जाता है कि इस समय यक्ष, गंदर्भ, नारद, ब्रह्मा, विष्णु सभी देवी-देवता मौजूद रहते हैं। इस दौरान देवगण गायन और वादन भी प्रस्तुत करते हैं। कोई वीणा बजाता है तो कोई राग गाता है। मंगला आरती में बाबा विश्वनाथ से पूरे ब्रह्मांड के कल्याण और मंगल की प्रार्थना की जाती है। बाबा का ये स्वरुप मंगलकारी होता है। मंगला आरती के बाबा पुनः औघड़दानी बनकर महाश्मशान मणिकर्णिका चले जाते हैं। दुसरी आरती को मध्याह्न की भोग आरती होती है, जो दोपहर साढ़े 11 से 12 बजे तक होती है। इस आरती के दौरान बाबा विश्वनाथ को पंचामृत से स्नान कराया जाता है, ताकि श्रृष्टि अन्न, धन्य और परोपकार से फलती-फूलती रहे। इसके बाद भव्य श्रृंगार होता है। उन्हें फल, फूल, मेवा, दही, मिष्ठान, दूध और भांग का भोग लगाया जाता है। भगवान भोग ग्रहण करने के लिए खुद इस आरती में शामिल होते हैं। तीसरी आरती को सप्तऋषि आरती कहते है, यह सांय पौने 7 से साढ़े 7 बजे तक होती है। इस आरती के समय सप्त ऋषि मंडल और सप्त ऋषियों का समूह मौजूद रहता है। चैथी आरती को श्रृंगार आरती कहा जाता है जो रात नौ बजे से 10 बजे तक होती है। इस आरती में बाबा विश्वनाथ राज वेश धारण करते हैं। साथ ही राजा के रूप में आरती में शामिल होते हैं। इसमें राजोपचार पूजन होता है। बाबा विश्वनाथ श्रृष्टि के राजा हैं। उन्हें सोने का मुकुट पहनाया जाता है। बाबा स्वर्ण आभूषण धारण करते हैं। साथ ही हीरा जणित छत्र और चांदी का नाग लगाकर महाराज की तरह अलंकरण होता है। पांचवीं आरती शयन आरती होती है, जो रात साढ़े 10 से 11 बजे तक होती है। बाबा विश्वनाथ सारे संसार के लोकपाल हैं। दुनिया में मनुष्य, प्राणी, पशु-पक्षी सभी को जगाना और सुलाना उन्हीं के हाथ में है। काशी में भक्त महादेव को शयन कराते हैं। इसके लिए वे गान भी करते हैं। शयन आरती में बाबा को सभी के जीवन में सुखमय निद्रा के लिए समर्पित किया जाता है।

“ वैसे तो काशी विश्वनाथ ज्योतिर्लिंग के संबंध में कई पौराणिक कथाएं प्रचलित हैं। एक कथानुसार जब भगवान शंकर पार्वती जी से विवाह करने के बाद कैलाश पर्वत रहने लगे तब पार्वती जी इस बात से नाराज रहने लगीं। उन्होंने अपने मन की इच्छा भगवान शिव के सम्मुख रख दी। अपनी प्रिया की यह बात सुनकर भगवान शिव कैलाश पर्वत को छोड़ कर देवी पार्वती के साथ काशी नगरी में आकर रहने लगे।

‘धर्म का प्रचार’ के नाम पर धर्मांतरण का कारोबार?

हिंदू धर्म के लोगों का इस्लाम धर्म में परिवर्तन कोई पहला मामला नहीं है, बल्कि सालों से यह कारोबार चलता रहा है। इसके लिए बाकायदा ऐसे अवांछनीय तत्वों को कांग्रेस व सपा सहित अन्य गैरभाजपा दलों का परोक्ष रुप से समर्थन सिर्फ इसलिए था कि उनका वोट बैंक तैयार हो रहा था और ये लोग गरीब व लाचार मूक बधिर, महिलाओं और पिछड़े लोगों को निशाना बनाते थे। उन्हें पैसा, नौकरी और शादी कराने का लालच देते थे। इसके लिए बाकायतदा विदेशों से फंडिंग होती थी। यह अलग बात है कि अब हिन्दू समर्थित भाजपा के आने के बाद एक-एक कर इनके कारनामों का खुलासा हो रहा है। सबसे बड़ी बात ये कि ये गैंग देश की राजधानी दिल्ली के जामिया नगर से ऑपरेट होता है। ये वही जामिया नगर है, जहां वर्ष 2008 में बम धमाकों के बाद आतंकवादी छिप हुए थे और मशहूर बाटला हाउस एनकाउंटर हुआ था

सुरेश गांधी

फिरहाल, धर्मांतरण के मामले में गैर-मुस्लिमों को मुस्लिम बनाने के आरोप में मोहम्मद उमर गौतम और जहांगीर कासमी को यूपी एटीएस ने गिरफ्तार किया है। यूपी में चुनावी आहट के बीच धर्म परिवर्तन और लव जेहाद जैसी घटनाएं भावनात्मक तौर पर सूबे के सियासी माहौल की तपिश को बढ़ा दी है। क्योंकि धर्मांतरण जैसे घिनौने कार्य के लिए आईएसआई सहित विदेश से फंडिंग होने की बात भी सामने आयी है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने जांच एजेंसियों को धर्मांतरण मामले की पूरी तह में जाने का निर्देश दिया है। साथ ही उन्होंने आदेश दिया है कि आरोपियों पर गैंगेस्टर और एनएसए के साथ-साथ प्रॉपर्टी जब्त करने की कार्रवाई की जाए। दावा है कि आरोपी उमर गौतम ने करीब एक हजार गैर मुस्लिम लोगों को मुस्लिम धर्म में धर्मांतरित कराया और उनकी मुस्लिमों से शादी कराई है। खास यह है कि जब योगी सख्त हुए तो इन अवांछनीय तत्वों को सहारा देने वाली पार्टियां इनके समर्थन में खुलकर सामने आ गयी है। यही वजह है कि इस मामले पर सियासत भी तेज हो गई है। सत्तापक्ष और विपक्ष के बीच आरोप-प्रत्यारोप शुरू हो गया है।

जबकि उमर गौतम खुद कबूला है कि इस्लामिक दावा सेंटर में इंग्लैंड, सिंगापुर, पोलैंड तक में धर्मांतरण का काम होता है, लोगों के इस्लाम कबूल करने से अल्लाह का काम हो रहा है। सेंटर को अमेरिका, कतर, कुवैत आदि में स्थित गैर सरकारी संगठनों से विदेशी चंदा मिलता है। फातिमा चैरिटेबल फाउंडेशन (दिल्ली), अल हसन एजुकेशन एंड वेलफेयर फाउंडेशन (लखनऊ), मेवात ट्रस्ट फॉर एजुकेशनल वेलफेयर (फरीदाबाद), मरकजुल मारीफ (मुंबई) और ह्यूमन सॉलिडेरिटी फाउंडेशन सहित कई भारत-आधारित एफसीआरए पंजीकृत गैर सरकारी संगठनों के माध्यम से फंड को आईडीसी को दिया जाता है। बताया जा रहा है कि महिला एवं बाल विकास मंत्रालय में अनुवादक के रूपकाम करने वाले इरफान शेख भी इस धर्मांतरण रैकेट में शामिल है। वह आईडीसी को जरूरतमंद मूक-बधिर युवाओं और महिलाओं की पहचान करने में मदद कर रहा था, जिन्हे

> “दावा है कि आरोपी उमर गौतम ने करीब एक हजार गैर मुस्लिम लोगों को मुस्लिम धर्म में धर्मांतरित कराया और उनकी मुस्लिमों से शादी कराई है। खास यह है कि जब योगी सख्त हुए तो इन अवांछनीय तत्वों को सहारा देने वाली पार्टियां इनके समर्थन में खुलकर सामने आ गयी है। यही वजह है कि इस मामले पर सियासत भी तेज हो गई है। सत्तापक्ष और विपक्ष के बीच आरोप-प्रत्यारोप शुरू हो गया है।

आर्थिक मदद देकर धर्मांतरण के लिए कोशिश की जा सके। आईडीसी का कतर स्थित सलाफी उपदेशक डॉ बिलाल फिलिप्स द्वारा स्थापित इस्लामिक ऑनलाइन विश्वविद्यालय के ससाथ संबंध हैं, जो जाकिर नाइक के सहयोगी हैं। उमर गौतम के ग्लोबल पीस सेंटर, दिल्ली के साथ घनिष्ठ संबंध हैं, जो मौलाना कलीम सिद्दीकी द्वारा संचालित है, जो विशेष रूप से मेवात क्षेत्र में धर्मांतरण गतिविधियों में शामिल है। वर्तमान में देश भर में 60 से अधिक दावा संस्थान चलाए जा रहे हैं। खासतौर पर यूपी, दिल्ली, हरियाणा, राजस्थान और महाराष्ट्र में आईडीसी के सेंटर चल रहे हैं।

बड़ी बात ये है कि देश में इसे लेकर कोई कानून नहीं है, लेकिन कानून बनाने को लेकर मांग कई दशकों से उठती रही है। जब भारत में अंग्रेजी सरकार का शासन था, तब कई रजवाड़ों ने धर्म परिवर्तन को लेकर सख्त कानून बना दिए थे, इनमें कोटा, बीकानेर, जोधपुर, रायगढ़, उदयपुर और कालाहांडी राजवाड़ा प्रमुख हैं। हालांकि ब्रिटिश सरकार ने इन कानूनों को कभी नहीं माना। वोट बैंक के चक्कर में कांग्रेस, सपा-बसपा ने भी धर्म परिवर्तन नहीं माना। परिणाम यह रहा कि ये लोग पहली मुलाकात के बाद ही धर्म परिवर्तन के लिए ऐसे लोगों को राजी कर लेते थे, जो गरीब व असहाय होते थे। इसके लिए पहले इन लोगों के अंदर उनके धर्म को लेकर नफरत पैदा की जाती थी और उन्हें बताया जाता था कि उनका धर्म सही नहीं है। जब ये लोग उनका ब्रेन वॉश कर देते थे, तब उन्हें लालच दिया जाता था और कहा जाता था कि इस्लाम धर्म अपनाने से उनकी सारी समस्याएं खत्म हो जाएंगी। पाकिस्तान की ओर से ये एक बड़ा जाल बिछाया गया था। बताते हैं कि इन लोगों का मकसद था कि बड़ी संख्या में लोगों का धर्मांतरण कराया जाए और फिर दंगा भड़काने में इन सभी का इस्तेमाल किया जाए।

जहां तक सियासत का सवाल है तो गाजियाबाद में एक बुजुर्ग की पिटाई को लेकर बीजेपी और विपक्ष के बीच पहले से अंतर्द्वंग चल रहा है। अब नोएडा में धर्मांतरण का मामला सामने आने के बाद भावनात्मक रूप से राजनीतिक तपिश बढ़ती जा रही है। यूपी में महज सात महीने के बाद विधानसभा चुनाव होने हैं। ऐसे में इन दोनों घटनाओं ने सियासी उबाल पैदाकर दिया है, क्योंकि इसमें समर्थन और विरोध करने वाले दोनों ही पक्षों को अपने-अपने सियासी लाभ मिलने की उम्मीद दिख रही है। गाजियाबाद की घटना को लेकर कांग्रेस के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष राहुल गांधी ने ट्वीट कर इसे शर्मनाक बताया था। राहुल गांधी ने ट्वीट कर कहा था कि मैं ये मानने को तैयार नहीं हूं कि श्रीराम के सच्चे भक्त ऐसा कर सकते हैं। ऐसी क्रूरता मानवता से कोसों दूर हैं और ऐसी घटनाएं समाज और धर्म दोनों के लिए शर्मनाक है। राहुल गांधी पर पलटवार करते हुए सीएम योगी आदित्यनाथ ने ट्वीट कर कहा था कि प्रभु श्रीराम की पहली सीख है- सत्य बोलना, जो आपने जीवन में कभी किया नहीं। सीएम योगी ने कहा कि शर्म आनी चाहिए कि पुलिस की ओर से सच्चाई बताए जाने के बाद भी आप समाज में जहर फैलाने में लगे हैं। सत्ता के लालच में मानवता को शर्मसार कर रहे हैं। उन्होंने यह भी कहा कि यूपी की जनता को अपमानित करना, उन्हें बदनाम करना छोड़ दें।

अब नोएडा में धर्मांतरण का मामला सामने आने के बाद योगी सरकार ने सख तेवर अख्तियार कर लिया हैं तो आम आदमी पार्टी के विधायक अमानतउल्ला खान ने इसे बीजेपी का राजनीतिक साजिश करार दिया। अमनातउल्ला खाने ने कहा कि भारतीय संविधान आर्टिकल 25 के तहत सभी को अपने धर्म के प्रचार-प्रसार करने की अनुमति देता है। ऐसे में योगी सरकार ने सिर्फ चुनावी फायदे के लिए दोनों मौलानों को गिरफ्तार किया गया है। साथ ही सपा के प्रवक्ता अनुराग भदौरिया ने कहा कि यूपी की नाकामियों को छिपाने के लिए योगी सरकार इस तरह से मुद्दों को उछाल रही है ताकि लोगों का ध्यान हटाया जा सके। जबकि अखाड़ा परिषद के अध्यक्ष महंत नरेंद्र गिरि ने कहा है कि इन लोगों को मृत्युदंड मिलना चाहिए। क्योंकि इनका मकस गृहयुद्ध की तैयारी था। मतलब साफ है मुस्लिम परस्ती राजनीति का ही तकाजा है कि गाजियाबाद की घटना को भी हिन्दू-मुस्लिम रंग देने की पूरी कोशश की गयी। जबकि 3 जून को गाजियाबाद पुलिस द्वारा दर्ज एफआईआर में लिखा है कि 2 जून को दो संदिग्ध व्यक्ति गाजियाबाद के एक मंदिर में घुस आए। इन लोगों के पास सर्जिकल ब्लेड, धार्मिक पुस्तकें और शीशियों में कुछ तरल पदार्थ था, जो जहर भी हो सकता है। इन लोगों को जब मंदिर में घुसते समय पकड़ा गया तो इन लोगों ने अपना नाम विपुल विजयवर्गीय और काशी गुप्ता बताया, लेकिन बाद में पता चला कि जो व्यक्ति खुद को काशी

“बड़ी बात ये है कि देश में इसे लेकर कोई कानून नहीं है, लेकिन कानून बनाने को लेकर मांग कई दशकों से उठती रही है। जब भारत में अंग्रेजी सरकार का शासन था, तब कई रजवाड़ों ने धर्म परिवर्तन को लेकर सख्त कानून बना दिए थे, इनमें कोटा, बीकानेर, जोधपुर, रायगढ़, उदयपुर और कालाहांडी राजवाड़ा प्रमुख हैं। हालांकि ब्रिटिश सरकार ने इन कानूनों को कभी नहीं माना।

गुप्ता बता रहा है, उसका नाम काशिफ है और विपुल विजयवर्गीय का असली नाम रमजान है। एफआईआर में लिखा है कि ये लोग मंदिर में एक महंत को जान से मारने के लिए आए थे। इस मामले की जांच शुरू की तो वो ऐसे लोगों तक पहुंची, जो पिछले कुछ समय से गैर मुस्लिम समुदाय के लोगों का धर्म परिवर्तन करा कर उन्हें मुस्लिम बना रहे हैं और पुलिस का कहना है कि इन लोगों ने ऐसा सिर्फ एक या दो व्यक्ति के साथ नहीं किया, बल्कि लगभग एक हजार लोगों का धर्म परिवर्तन ये लोग अब तक करा चुके हैं। यानी धर्म परिवर्तन के इस पूरे रैकेट का रिमोट जामिया नगर में था, जहां पीएफआई का दफ्तर है। ये संस्था लोगों का धर्म परिवर्तन कराने का काम करती है। सोचिए देश की राजधानी में ऐसी संस्थाओं के दफ्तर हैं, जिनका काम लोगों का धर्म परिवर्तन कराना है और उमर गौतम यही करता था। पुलिस के मुताबिक, इन लोगों ने नोएडा के सेक्टर 117 में मूक बधिरों के रेजिडेंशियल स्कूल में कई छात्रों को मजबूर किया और इन छात्रों के परिवार को भी इसके बार में नहीं पता चलने दिया। उदाहरण के लिए एक छात्र के परिवार ने कानपुर में अपने बच्चे की गुमशुदगी की रिपोर्ट दर्ज कराई, लेकिन बाद में पता चला कि उसका धर्म परिवर्तन ने लोगों ने करा दिया है। इसी तरह और लोगों को भी निशाना बनाया गया।

जहां तक धर्म परिवर्तन कानून का सवाल है वर्ष 1954 में पहली बार धर्म परिवर्तन से संबंधित बिल देश की संसद में पेश किया गया। इसके तहत ये प्रस्ताव रखा गया था कि धर्म परिवर्तन कराने वाली संस्थाओं को इसके लिए भारत सरकार से मंजूरी लेनी होगी और जिला स्तर पर भी अधिकारियों को जानकारी देनी होगी लेकिन ये बिल पास नहीं हो पाया। इसके 6 वर्ष बाद वर्ष 1960 में भी एक ऐसा ही बिल आया लेकिन ये बिल भी पास नहीं हो पाया और फिर वर्ष 1997 में भी इसे लेकर कानून बनाने की कोशिश हुई, लेकिन कोई कामयाबी नहीं मिली। वर्ष 2015 में संसद में एक बहस के दौरान कानून मंत्रालय ने कहा कि जबरन और धोखाधड़ी से कराए गए धर्म परिवर्तन के मामलों में कोई कानून बनाना संभव नहीं है क्योंकि, कानून व्यवस्था राज्यों का मामला है। यानी केंद्र सरकार ने स्पष्ट किया है कि इसे लेकर राज्य चाहें तो अपना कानून बना सकते हैं। इस समय देश में कुल 28 राज्य और 8 केंद्र शासित प्रदेश हैं, लेकिन इसे लेकर कानून सिर्फ 8 राज्यों में है और शायद यही वजह है कि ऐसे लोग धर्म परिवर्तन की अपनी दुकानें खुलेआम चलाते हैं। देश में धर्म परिवर्तन को लेकर राष्ट्रीय कानून नहीं होने की वजह से इसे लेकर कोई आंकड़ा भी मौजूद नहीं है। लेकिन कुछ राज्यों में इसे लेकर अब जानकारियां जुटाई जा रही हैं।

उदाहरण के लिए वर्ष 2019 में गुजरात सरकार ने बताया कि पिछले पांच वर्षों में 1 हजार 895 लोगों ने धर्म परिवर्तन के लिए अनुमति मांगी थी। ये उन लोगों का आंकड़ा है, जो सरकार के पास पहुंचे, जिन लोगों का लालच देकर धर्म बदला गया या जबरन धर्म परिवर्तन करवाया गया, उनकी कोई संख्या देश में इस समय मौजूद नहीं है और ये एक डराने वाली बात है। वर्ष 2012 में केरल सरकार ने बताया था कि 2006 से 2012 के बीच में वहां 7 हजार 713 लोगों ने अपना धर्म छोड़ कर इस्लाम धर्म को अपना लिया, जिसमें 2 हजार 667 केवल महिलाएं थीं और इनकी उम्र भी 40 वर्ष से कम थी। ऐसा नहीं है कि धर्म परिवर्तन का ये मुद्दा पहली बार सुर्खियों में आया है. भारत में धर्म परिवर्तन का इतिहास बहुत पुराना है। वर्ष 1930 में राजवाड़ों को धर्म परिवर्तन को लेकर इसलिए कानून बनाना पड़ा था क्योंकि, ईसाई मिशनरी भारत में बड़े पैमाने पर हिंदुओं को ईसाई धर्म अपनाने के लिए काम कर रही थीं और इतिहास में और भी पीछे जाएं तो ऐसी घटनाएं मिलती हैं। 19 जनवरी वर्ष 1790 में टीपू सुल्तान ने अपने एक खत में लिखा था कि उन्होंने मालाबार में चार लाख हिंदुओं का धर्म परिवर्तन करा कर उन्हें मुस्लिम बना दिया है। एक और खत में टीपू सुल्तान लिखते था कि कालीकट प्रदेश के सभी हिंदुओं का उन्होंने धर्म परिवर्तन करा दिया है और अब सभी इस्लाम को मानने वाले लोग बचे हैं। मुगलों के समय में भी ऐसे उदाहरण सामने आते हैं।

मुगल शासक अकबर ने अपने एक आदेश में कहा था कि जिन लोगों का जबरन धर्म परिवर्तन हुआ है, ऐसे लोग वापस अपने पुराने धर्म में लौट सकते हैं। इस बात ये ही आप समझ सकते हैं कि उस समय भी हिंदुओं का धर्म जबरन बदला जाता था। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने एक बार कहा था कि मेरे पास कानून बनाने की शक्ति होती तो मैं निश्चित तौर पर धर्म परिवर्तन की सारी गतिविधियों पर रोक लगा देता। यानी महात्मा गांधी लालच देकर और जबरन तरीके से कराए गए धर्म परिवर्तन के खिलाफ थे। भारत में कभी भी आक्रामक धर्म परिवर्तन की परंपरा नहीं थी। हिंदू धर्म में मान्यता है कि ईश्वर तक पहुंचने के अनेकों रास्ते हैं और हर व्यक्ति अपने मुताबिक मोक्ष का रास्ता ढूंढ सकता है। सम्राट अशोक ने भी अपने लौह स्तंभ में धार्मिक सद्भाव का परिचय दिया था और मध्य युग में कबीर और गुरु नानक देवजी ने भी धार्मिक सद्भाव का संदेश लोगों को दिया था। गुरु नानक देवजी के जीवन से संबंधित जन्म साखी में उल्लेख मिलता है कि एक बार मदार्ना ने उनके धर्म के बारे में उनसे पूछा ताकि वो भी उस धर्म को अपना सकें, तब गुरु नानक ने उनसे कहा कि वो एक मुसलमान हैं, तो उन्हें अच्छा मुसलमान बनने की कोशिश करनी चाहिए और एक हिंदू हैं तो अच्छा हिंदू बनने की कोशिश करनी चाहिए न कि धर्म को बदलना चाहिए। लेकिन कुछ लोग मानते हैं कि उनका धर्म ही एक मात्रा सत्य और बाकी सब धर्म अंधविश्वास है। यही वो भावना है, जिससे समाज में द्वेष की भावना जन्म लेती है।

> **"एफआईआर में लिखा है कि ये लोग मंदिर में एक महंत को जान से मारने के लिए आए थे। इस मामले की जांच शुरू की तो वो ऐसे लोगों तक पहुंची, जो पिछले कुछ समय से गैर मुस्लिम समुदाय के लोगों का धर्म परिवर्तन करा कर उन्हें मुस्लिम बना रहे हैं और पुलिस का कहना है कि इन लोगों ने ऐसा सिर्फ एक या दो व्यक्ति के साथ नहीं किया, बल्कि लगभग एक हजार लोगों का धर्म परिवर्तन ये लोग अब तक करा चुके हैं।**

टीका उत्सव का सच..?
भोज पर बुला कर चूल्हा जलाना..!

आनन्द चौधरी/ नई दिल्ली।

न सिर्फ विश्व स्वास्थ्य संगठन बल्कि दुनिया भर के स्वास्थ्य विशेषज्ञ इस बात पर जोर दे रहे हैं कि कोविड महामारी से रोकथाम हेतु टीकाकरण अनिवार्य है। दुनिया के ज्यादातर देशों ने अपने यहां आबादी से कहीं अधिक टीके की व्यवस्था सुनिश्चित की। वर्ष 2020 के अंतिम महीनों में अपने नागरिकों का टीकाकरण शुरू कर दिया।

भारत में 16 जनवरी 2021 से टीकाकरण अभियान की शुरूआत हुई। प्रथम चरण में स्वास्थ्य सेवाओं से जुड़े लोग, फ्रंटलाइन वर्कर और 60 वर्ष से अधिक उम्र के वरिष्ट नागरिकों के लिए कोविशिल्ड और कोवेक्सिन लगाने की घोषणा की गई। भारत के दवा नियामक ने 3 जनवरी, 2021को सीरम इंस्टीट्यूट द्वारा निर्मित ऑक्सफोर्ड उडश्क्ऊ19 वैक्सीन कोविशील्ड और देश में प्रतिबंधित आपातकालीन उपयोग के लिए भारत बायोटेक के स्वदेशी रूप से विकसित कोवैक्सिन को मंजूरी दी, जिससे बड़े पैमाने पर टीकाकरण अभियान का मार्ग प्रशस्त हुआ।

4 जनवरी 2021 को नेशनल मेट्रोलॉजी कॉन्क्लेव में वैज्ञानिकों को संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि कोरोनोवायरस के खिलाफ दुनिया का सबसे बड़ा टीकाकरण अभियान देश में शुरू होने वाला है। उन्होंने कहा कि भारत के दवा नियामक ने प्रतिबंधित आपातकालीन उपयोग के लिए दो टीकों को मंजूरी दी। 'मेड इन इंडिया' टीकों के लिए वैज्ञानिकों और तकनीशियनों की सराहना करते हुए उन्होंने कहा कि इसके लिए देश को अपने वैज्ञानिकों और तकनीशियनों के योगदान पर गर्व है।

टीकाकरण की शुरूआती रफ्तार जागरूकता के अभाव में काफी धीमी गति से चली। 16 जनवरी को शुरू हुए प्रथम चरण के बाद पहली मार्च से स्वास्थ्य कर्मी, अग्रिम पंक्ति के कार्यकर्ता, वरिष्ट नागरिकों के साथ ही 45 वर्ष से अधिक उम्र के सभी बीमार नागरिकों के लिए टीकाकरण शुरू कर दिया गया। और एक मई से 18 वर्ष से अधिक उम्र के सभी नागरिकों के लिए टीकाकरण अभियान शुरू किया गया।

> प्रति हेक्टेयर के हिसाब से सबसे घने पेड़ उत्तरी अमेरिका, स्कैंडेनविया और रूस में हैं। इन इलाकों में करीब 750 बिलियन पेड़ (750,000,000,000) हैं जो वैश्विक स्तर का करीब 24 फीसदी है। दुनिया के जमीनी क्षेत्र में करीब 31 फीसदी क्षेत्र जंगलों के घिरे हुए हैं, लेकिन इनमें तेजी से गिरावट आती जा रही है। 1990 से 2016 के बीच दुनिया से 502,000 स्क्वायर मील (13 लाख स्क्वायर किलोमीटर) जंगल क्षेत्र खत्म हो गए हैं।

टीके की उपलब्धता का संकट।

एक मई से 18 वर्ष से अधिक उम्र के सभी नागरिकों के लिए टीकाकरण अभियान शुरू तो कर दिया गया। लेकिन तमाम राज्य टीके की उपलब्धता पर सवाल उठाते रहे।

दिल्ली, तमिलनाडु, राजस्थान, ओडिशा, पश्चिम बंगाल समेत कई राज्य सरकारों ने वैक्सीन ना मिलने का आरोप लगाया। दिल्ली, महाराष्ट्र, राजस्थान, ओडिशा में तो 18 प्लस के लिए टीकाकरण रोकने की नौबत आ गई और देश में वैक्सीनेशन की रफ्तार धीमी पड़ गई। जब राज्य सरकारों ने वैक्सीन खरीद के लिए ग्लोबल टेंडर निकाले तो विदेशी कंपनियों ने ये कहते हुए इनकार कर दिया कि वो सिर्फ केंद्र को वैक्सीन देंगे। भारत में अभी दो वैक्सीन, कोविशिल्ड और कोवैक्सिन का इस्तेमाल बड़े स्तर पर हो रहा है। शुरूआत में केंद्र सरकार ने इन वैक्सीन को खरीद कर राज्यों को सौंपी, लेकिन जब 18 प्लस के लिए टीकाकरण खोला गया तो राज्यों को खुद वैक्सीन लेने की छूट दी गई। लेकिन कई राज्यों सरकारों ने आरोप लगाया कि वैक्सीन निमार्ताओं से वैक्सीन मिल नहीं रही है, क्योंकि वो केंद्र को प्राथमिकता के तौर पर सप्लाई कर रहे हैं।

सरकार की नई वेक्सिनेशन नीति..!

दरअसल भारत सरकार ने दो महीने में तीन बार अपनी वैक्सीन नीति में बदलाव किया। सरकार ने 21 जून से 18 साल से ऊपर के सभी भारतीयों के लिए राज्यों को मुफ्त वैक्सीन मुहैया कराने की बात कही है। प्रधानमंत्री मोदी ने देश को संबोधित कर वैक्सीन नीति में किए गए इन बदलाव की जानकारी दी थी। उन्होंने बताया था कि देश में निर्मित कुल वैक्सीन के 75 फीसदी हिस्से की खरीद अब केंद्र सरकार करेगी, बाकी 25 फीसदी वैक्सीन की खरीद प्राइवेट सेक्टर कर सकेगा। जबकि अप्रैल तक केंद्र सरकार ही सभी निमार्ताओं से वैक्सीन लेकर राज्यों और प्राइवेट सेक्टर को मुहैया करा रही थी। अप्रैल के अंत में केंद्र ने नीति में बदलाव करते हुए केंद्र और राज्य के लिए आधे-आधे वैक्सीन खरीद की बात कही थी, लेकिन बाद में सुप्रीम कोर्ट में दिए सरकार के हलफनामे के मुताबिक वास्तव में यह फॉमूर्ला केंद्र-राज्य और प्राइवेट सेक्टर के लिए क्रमशः 50-25-25 फीसदी खरीद का था। फिर तीसरी बार नीति में बदलाव के बाद अब वैक्सीन खरीद का फॉमूर्ला केंद्र सरकार और प्राइवेट सेक्टर के लिए 75-25 हो गया है। इससे पहले सरकार ने 1 मई 2021 को भी एक नई टीकाकरण नीति लागू की थी, जिसमें 18 से 44 साल के लोगों के लिए वैक्सीन खरीदने का जिम्मा राज्यों पर डाल दिया गया था। लेकिन वह नीति जल्द ही चौतरफा विवादों में घिर गई। राज्यों को टीके खरीदने में काफी मुश्किलों का सामना करना पड़ रहा था। विपक्षी दलों की सरकारों के साथ ही साथ सुप्रीम कोर्ट ने भी सरकार की नई वैक्सीनेशन पॉलिसी पर कई गंभीर सवाल उठाया। तब केंद्र सरकार को टीकाकरण नीति में फिर से बदलाव का एलान करना पड़ा। नई नीति के अनुसार केंद्र सरकार की तरफ से राज्यों को वैक्सीन की कितनी सप्लाई होगी ये उनकी आबादी, कोरोना इंफेक्शन के फैलाव की स्थिति, टीकाकरण कार्यक्रम की प्रोग्रेस और टीके की बबार्दी जैसी बातों को ध्यान में रखते हुए की जाएगी। राज्य सरकारों को अपनी तरफ से भी प्राथमिकताएं तय करने के लिए कहा गया है।

भविष्य के लिए टीके की उपलब्धता..?

केंद्रीय मंत्री प्रकाश जावड़ेकर ने कहा है कि दिसंबर 2021 तक सभी नागरिकों को टीकाकरण हो जाएगा..? सवाल है कि कैसे होगा..? नीति आयोग के सदस्य (स्वास्थ्य) डॉ. वीके पॉल के अनुसार देश में वैक्सीन का उत्पादन लगातार बढ़ाया जा रहा है। अभी तीन वैक्सीन उपलब्ध है। आगे 4 और वैक्सीन आने वाली हैं। इनमें बायो- ई की वैक्सीन, जायडस की डीएनए पर आधारित वैक्सीन, भारत बायोटेक की नेजल वैक्सीन और जिनेवा की वैक्सीन उपलब्ध होंगी। उन्होंने बताया कि 2021 के आखिर तक देश में वैक्सीन की 200 करोड़ डोज का प्रोडक्शन हो चुका होगा..?

> “ दिल्ली, तमिलनाडु, राजस्थान, ओडिशा, पश्चिम बंगाल समेत कई राज्य सरकारों ने वैक्सीन ना मिलने का आरोप लगाया। दिल्ली, महाराष्ट्र, राजस्थान, ओडिशा में तो 18 प्लस के लिए टीकाकरण रोकने की नौबत आ गई और देश में वैक्सीनेशन की रफ्तार धीमी पड़ गई। जब राज्य सरकारों ने वैक्सीन खरीद के लिए ग्लोबल टेंडर निकाले तो विदेशी कंपनियों ने ये कहते हुए इनकार कर दिया ।

सभी वैक्सीन होंगी मेड इन इंडिया।

डॉ. पाल ने बताया कि सरकार कोविड सुरक्षा स्कीम के तहत जायडस कैडिला, बायो ई और जिनेवा की कोरोना वैक्सीन के देश में मैन्युफैक्चरिंग के लिए फंडिंग कर रही है। इसके अलावा नेशनल लैब्स से उन्हें टेक्निकल सपोर्ट भी दिया जा रहा है। उन्होंने बताया कि भारत बायोटेक की नाक से दी जाने वाली सिंगल डोज वैक्सीन के लिए भी केंद्र सरकार फंडिंग कर रही है और यह दुनिया के लिए गेम चेंजर साबित हो सकती है..? ये सभी वैक्सीन ह्यमेड इन इंडियाह्व होंगी। खबरों के अनुसार विज्ञान, प्रोद्यौगिकी और वन पर्यावरण संबंधित संसद की स्थायी समिति ने इसी साल फरवरी-मार्च महीने की अपनी बैठक में वैक्सीनेशन पर गहन चर्चा की थी। इसके बाद एक रिपोर्ट बनाई थी, जिसे संसद के पटल पर 8 मार्च को रखा गया था। ध्यान देने वाली बात यह है कि 31 सदस्यों वाली इस कमेटी में 14 सदस्य सत्ताधारी दल से हैं।प्रेस ट्रस्ट की एक खबर में कहा गया है कि विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार कोरोना महामारी के बीच अब तक दो सौ करोड़ वैक्सीन के डोज वितरित किए जा चुके हैं। जिनमे सबसे ज्यादा, साठ फीसदी वैक्सीन की खपत भारत, चीन और अमेरिका में हुई है। हल्ड के महासचिव टेड्रोस अदनोम घेबरेसस के वरिष्ठ सलाहकार ब्रूस एल्वार्ड ने एक पत्रकार वार्ता में बताया है कि यह संख्या हमारी उम्मीद के मुताबिक है। संगठन ने कोवैक्स अभियान के तहत 127 देशों को आठ करोड़ वैक्सीन डोज पहुंचाई है। भारत अमेरिका और चीन को दो सौ करोड़ में से मिले साठ फीसदी टीके उनके देश में ही बनाए और वितरित किए गए हैं। ब्रूस एल्वार्ड का कहना है कि भारत में सीरम इंस्टीट्यूट वैक्सीन बनाने वाली दुनिया की सबसे बड़ी कंपनी है। भारत में दूसरी लहर आने के कारण वहां से आपूर्ति प्रभावित हुई है।

टीका उत्सव के बाद की स्थिति..

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 21 जून से देश में सभी लोगों को मुफ़्त वैक्सीन देने की घोषणा की थी। इस अभियान के तहत पहले ही दिन लगभग 88 लाख से अधिक लोगों को टीका लगाया गया, जो अपने आप में एक रिकॉर्ड है। इसके अगले दिन, यानी 22 जून को यह संख्या 54 लाख से ज्यादा था। यानि दूसरे दिन ही लगभग 34 लाख की कमी देखी गई। ऐसे में सवाल उठता है कि क्या 21 जून को उत्सव मनाने के लिए ज्यादा टीके लगाए गए या आंकड़ों में हेरा फेरी की गई..?

भारत में टीकाकरण 16 जनवरी 2021 से शुरू हुआ।

16 जनवरी से लेकर 20 जून तक के आँकड़ों की बात करें, तो अप्रैल के महीने में सबसे ज्यादा तकरीबन 8.81 करोड़ वैक्सीन की डोज लोगों ने लगवाई। इसके बाद मई में रफ़्तार एक बार फिर धीमी पड़ गई। जून में प्रधानमंत्री मोदी ने वैक्सीन पॉलिसी में दोबारा से बदलाव किया और रफ़्तार में थोड़ी तेजी आई। जून के महीने में सरकार के पास लगभग 12 करोड़ वैक्सीन की डोज उपलब्ध थी। पहले 20 दिन में राज्यों ने 6 करोड़ वैक्सीन की डोज लगा दी, फिर 10 दिन के लिए बची 6 करोड़ डोज, जिससे टीका उत्सव को सफल बनाया गया। 21 जून को जो रिकार्ड बनाया गया, उसके बाद से इस संख्या में भारी कमी देखी जा रही है।

अब आगे क्या..?

भारत सरकार की तरफ से जारी आँकड़ों की मानें, तो जुलाई में 15 करोड़ वैक्सीन मिलने वाली है..? भारत में फि लहाल कोविशील्ड और कोवैक्सीन- दो कोरोना वैक्सीन ही लोगों को लगाई जा रही है। स्पुतनिक-वी वैक्सीन को मंजूरी जरूर मिली है। उसकी तीन लाख डोज भारत आ भी चुकी है। लेकिन अभी ट्रायल ही चल रहा है। कोविन पर स्पूतनिक के लिए रजिस्ट्रेशन शुरू नहीं हुआ है। इसके अलावा फाइजर से भी भारत सरकार की बात चल रही है।

स्वास्थ्य मंत्रालय, भारत सरकार के अनुसार अभी तक देश में लगभग 35 करोड़ से अधिक नागरिकों को वैक्सीन का पहला डोज लगाया जा चुका है। तमाम राज्यों में वैक्सीन की कमी के कारण टीकाकरण की रफ्तार धीमी गति से चल रही है। ऐसे में देश की पूरी आबादी को टीके की दोनो खुराक कब तक मिल सकेगा, कहा नहीं जा सकता..?

“ डॉ. पाल ने बताया कि सरकार कोविड सुरक्षा स्कीम के तहत जायडस कैडिला, बायो ई और जिनेवा की कोरोना वैक्सीन के देश में मैन्युफैक्चरिंग के लिए फंडिंग कर रही है। इसके अलावा नेशनल लैब्स से उन्हें टेक्निकल सपोर्ट भी दिया जा रहा है। उन्होंने बताया कि भारत बायोटेक की नाक से दी जाने वाली सिंगल डोज वैक्सीन के लिए भी केंद्र सरकार फंडिंग कर रही है और यह दुनिया के लिए गेम चेंजर साबित हो सकती है..? ये सभी वैक्सीन मेड इन इंडिया होंगी।

उधार के योद्धाओं के भरोसे कैसे लड़ेगी कांग्रेस?

वर्ष 2017 में गुजरात विधानसभा के लिए चुनाव हो रहे थे। कुछ राजनीतिक विश्लेषक इसे कांग्रेस के पक्ष में एक अवसर की तरह देख रहे थे। इसके पीछे दो मूल कारण थे। वर्ष 2000 के बाद पहला अवसर था जब गुजरात में बीजेपी मोदी से अलहदा किसी मुख्यमंत्री के चेहरे पर चुनाव लड़ रही थी। दूसरा कारण हाल के दिनों में गुजरात में उभरा पाटीदार आन्दोलन था। इस दरम्यान जातीय संघर्ष की हवा भी राजनीतिक नारों में गूँजने लगी थी।

कांग्रेस के प्रति उदार भाव रखने वाले बुद्धिजीवियों को उम्मीद थी कि बदले हुए राजनीतिक परिवेश में कांग्रेस गुजरात में बाजी पलट देगी। हालाँकि ऐसा हुआ नहीं, लेकिन उस चुनाव ने कुछ गहरे चिन्ह छोड़े जो कांग्रेस के लिए सबक हो सकते थे और बीजेपी के लिए सतर्क होने का मौका। सत्ता में वापसी के बाद बीजेपी ने पाटीदार आंदोलन तथा जातीय विभाजन की कोशिशों पर पानी डालने में कामयाबी हासिल करते हुए एक स्थायी सरकार दी। किंतु कांग्रेस ने शायद वह सबक अभी तक नहीं लिया। कांग्रेस की बड़ी चूक यह रही कि उसने अवसर का लाभ लेकर गुजरात में अपने संगठन के आधार को मजबूत करने की दूरगामी नीति की बजाय उधार के योद्धाओं के भरोसे मैदान में उतरने का रास्ता अख्तियार कर लिया। राहुल गांधी गुजरात कांग्रेस के नेताओं से ज्यादा आंदोलन के उभार से निकले युवाओं पर भरोसा जता रहे थे। बीच चुनाव ऐसा लगने लगा था कि राहुल गांधी को गुजरात कांग्रेस अध्यक्ष भरत सिंह सोलंकी, कांग्रेस नेता शक्ति सिंह गोहिल और प्रभारी अशोक गहलोत से ज्यादा हार्दिक पटेल, जिग्नेश मेवानी और अल्पेश ठाकोर पर भरोसा है। इन तीन युवाओं के साथ अंदरखाने हो रही बैठकों, चचाओं और सांठगांठ की खबरें उस दौरान मीडिया में आने लगी थीं। पार्टी का संगठन और संगठन के नेता हाशिये पर थे और कांग्रेस की तरफ से सीधा मोर्चा मानो यह तिकड़ी ले रही हो।

टिकट बँटवारे ने काफी कुछ साफ भी कर दिया। जिग्नेश मेवानी निर्दलीय चुनाव लड़े तो कांग्रेस ने उनके खिलाफ अपना उम्मीदवार नहीं उतारा। अल्पेश ठाकोर कांग्रेस के टिकट पर चुनाव लड़े। हार्दिक पटेल चुनाव नहीं लड़े लेकिन कांग्रेस के लिए मीडिया और जनसभाओं में खूब बैटिंग की। इसपर बीजेपी नेताओं ने यहाँ तक कहना शुरू कर दिया था कि कांग्रेस ने अपना चुनाव आउटसोर्स कर लिया है। जो हुआ वह इतिहास था। लेकिन इतिहास की उस चूक का मोल कांग्रेस गुजरात में आज भी चुका रही है।

यह इतिहास की गुजरी बातें थीं। लेकिन वर्तमान में कांग्रेस की रीति-नीति में सबक लेकर सुधार की बजाय गलती को दोहराया ही जा रहा है। अपने राष्ट्रीय अध्यक्ष के चुनाव को लेकर आंतरिक द्वन्द्व से जूझ रही कांग्रेस ने 2022 में होने वाले यूपी चुनाव से पहले वैसी ही गलती दोहराई है। खबरों के मुताबिक कांग्रेस ने मंचीय शायर इमरान प्रतापगढ़ी को कांग्रेस अल्पसंख्यक मोर्चे का राष्ट्रीय अध्यक्ष नियुक्त किया है।

इमरान प्रतापगढ़ी कांग्रेस से जुड़े रहे हैं। मुरादाबाद से पिछला लोकसभा चुनाव भी लड़े लेकिन हार गये। स्टार प्रचारक के रूप में भी कांग्रेस उनकी एक खास समुदाय के बीच लोकप्रियता को भुनाती रही है। लेकिन संगठन को लेकर उनका कांग्रेस में अनुभव न के बराबर है।

उनके नाम के चयन के प्रति कांग्रेस के इस अगाध आकर्षण का एकमात्र जो कारण नजर आता है वह यह है कि इमरान प्रतापगढ़ी अपनी महफिलों, गजलों और शेरो-शायरी में नरेंद्र मोदी और बीजेपी के खिलाफ नफरत की हद तक अलफाज उगलते रहे हैं।

खैर, इमरान प्रतापगढ़ी अल्पसंख्यक मोर्चे के संगठन को किस नीचे तक लेकर जाते हैं, यह देखना शेष है। किंतु यदि सिर्फ. इस आधार पर कांग्रेस ने इमरान प्रतापगढ़ी को एंटी-मोदी तबके के बीच लोकप्रियता के आधार पर अल्पसंख्यक मोर्चे का अध्यक्ष बनाया है तो यह 'आउटसोर्स' पद्धति को दोहराने का यूपी मॉडल साबित हो सकता है।

> कांग्रेस के प्रति उदार भाव रखने वाले बुद्धिजीवियों को उम्मीद थी कि बदले हुए राजनीतिक परिवेश में कांग्रेस गुजरात में बाजी पलट देगी। हालाँकि ऐसा हुआ नहीं, लेकिन उस चुनाव ने कुछ गहरे चिन्ह छोड़े जो कांग्रेस के लिए सबक हो सकते थे और बीजेपी के लिए सतर्क होने का मौका। सत्ता में वापसी के बाद बीजेपी ने पाटीदार आंदोलन तथा जातीय विभाजन की कोशिशों पर पानी डालने में कामयाबी हासिल करते हुए एक स्थायी सरकार दी।

कोरोना की मार : इस दर्द की दवा नहीं

मुंबई में रहने वाली 52 वर्षीय सुधा को कोविड हो गया, क्योंकि वे काम करने लोकल ट्रेन से दूसरी जगह जाती थी। एक दिन उसे बुखार आया, तो दवा खा ली और खुद को क्वारंटाइन कर लिया, लेकिन अगले ही दिन 26 साल के भाई दिनेश को बुखार आ गया। भाई कहीं आताजाता नहीं था। उस का काम लौकडाउन की वजह से छूट गया था। इसलिए भाई के फीवर आते ही सब का आरटीपीसीआर टैस्ट करवाया गया। सभी कोविड पौजिटिव निकलने के बाद उन के फ्लैट को बृहन्मुंबई महानगरपालिका ने सील कर दिया।

2 दिन बाद भाई की तबीयत अचानक बिगड़ी। उसे सांस लेने में तकलीफ होने लगी। सुधा ने एंबुलैंस बुलाने की कोशिश की, कई जगह फोन किए, लेकिन कोई भी अस्पताल ले जाने के लिए तैयार नहीं हुआ। तकरीबन एक घंटे बाद एक एंबुलैंस आई, जिस में भाई को सुधा खुद अस्पताल ले गई। वहां बैड बड़ी मुश्किल से मिला। 2 दिन बाद ही भाई की मौत कार्डिएक अरेस्ट से हो गई। इस दौरान उस के पिता और मां को भी कोविड ने घेर लिया। आसपास के लोगों ने बेटे का अंतिम संस्कार करवाया।

पिता को बेटे की मृत्यु का पता चलते ही हार्टअटैक आ गया। उन्हें भी अस्पताल ले जाया गया, पर उन्हें डाक्टर ने मृत घोषित कर दिया। एक परिवार के 2 व्यक्ति एक दिन में गुजर गए। मां और बेटी अभी ठीक हैं, लेकिन रोरो कर उन का बुरा हाल हो रहा है। दोनों को कमजोरी बहुत है। दरअसल, कमाने वाले व्यक्ति के गुजर जाने से पूरा परिवार मुश्किल में पड़ जाता है। इस परिवार ने पिता और बेटे को खोया है। ऐसा ही कुछ कांदिवली की रहने वाली प्रीति के साथ हुआ। वे रोती हुई कहती हैं कि उन की 53 वर्षीय बहन, बेटा और गर्भवती बहू को कोविड हुआ। बेटा और बहू कुछ ठीक हुए नहीं कि बहन की हालत बिगड़ने लगी।

उन्हें नजदीक के अस्पताल में ले जाया गया। अस्पताल में बेटे को मां के लिए बैड बड़ी मुश्किल से मिला, लेकिन औक्सीजन का इंतजाम करतेकरते मां चल बसी। 2 दिन में बहन ने दम तोड़ दिया। प्रीति ने इस तरह अपनी बहन और एक बेटे ने कमाऊ मां को खोया है। ऐसे न जाने कितने ही परिवार, घर बरबाद हो गए और बच्चे अनाथ हो गए। असल में मुंबई जैसे शहर में इन सभी को बीएमसी के दफ्तर में डैथ सर्टिफिकेट, प्रौपर्टी का नाम अपने नाम करवाने के लिए न जाने कितने चक्कर लगाने पड़ेंगे।

ये किसी को पता नहीं, क्योंकि सरकारी कार्यालयों में कोई काम समय से नहीं होता। हर कोई उस व्यक्ति को एक टेबल से दूसरे टेबल पर भेजता रहता है, दिन के अंत होने तक कोई भी काम का अंजाम व्यक्ति को नहीं मिल पाता। कार्यालयों में घूमने का सिलसिला कब तक जारी रहेगा, यह भी सम झ से परे है। अब जब कोविड की दूसरी, तीसरी, चौथी न जाने कितनी लहरें आएंगी और हर लहर अपने साथ न जाने कितनों को बहा ले जाएगी, कितने लोग इस लौकडाउन यानी भुखमरी से मरेंगे, उन का हिसाब सरकार तो क्या कोई भी रखने में असमर्थ होगा। शायद इसलिए सरकार मैडिकल इंफ्रास्ट्रक्चर, टीकाकरण, औक्सीजन आदि के बारे में न सोच कर ह्यामेक इन इंडियाह्व की धुन में है।

अच्छा ट्रीटमैंट मिल जाता तो बच जाता राहुल वोहरा 35 वर्षीय ऐक्टर और यूट्यूबर राहुल वोहरा की 9 मई को कोरोना की वजह से दिल्ली के अस्पताल में मौत हो गई। राहुल वोहरा ने अंतिम सांस लेने से एक दिन पहले यानी 8 मई को फेसबुक पर लिखा था कि अगर उन्हें अच्छा ट्रीटमैंट मिल जाता, तो वे बच जाते। उन का यह दर्दभरा मैसेज उन की मौत के बाद काफी वायरल हो रहा है।

राहुल वोहरा की पत्नी ज्योति तिवारी ने इलाज में लापरवाही को उस की मौत का जिम्मेदार ठहराया है। ज्योति ने अस्पताल से राहुल का आखिरी वीडियो शेयर किया है, जिस में वे औक्सीजन के बिना हांफते हुए दिख रहे हैं और बता रहे हैं कि कैसे डाक्टर उन्हें खाली औक्सीजन मास्क पहना कर चले गए और कोई उन की पुकार सुनने वाला भी नहीं। मास्क में बारबार पानी आ जाता है। नर्स वगैरह को बुलाने पर वह 2 मिनट की बात कह कर डेढ़दो घंटे में आते हैं।

राहुल का राजीव गांधी सुपर स्पैशलिटी अस्पताल, ताहिरपुर, दिल्ली में इलाज चल रहा था। राहुल और ज्योति की शादी 6 महीने पहले दिसंबर 2020 में हुई थी। ज्योति ने इंस्टाग्राम पर एक नोट शेयर किया, जिस में उन्होंने लिखा कि राहुल बहुत सारे सपने अधूरे छोड़ कर चले गए। उन्हें इंडस्ट्री में अच्छा काम करना था। खुद को साबित करना था, पर वह सबकुछ अधूरा रह जाएगा। इस हत्या के जिम्मेदार वे लोग हैं, जिन्होंने मेरे राहुल को तड़पते हुए देखा और हमें उन की झूठी अपडेट देते रहे।

“ पिता को बेटे की मृत्यु का पता चलते ही हार्टअटैक आ गया। उन्हें भी अस्पताल ले जाया गया, पर उन्हें डाक्टर ने मृत घोषित कर दिया। एक परिवार के 2 व्यक्ति एक दिन में गुजर गए। मां और बेटी अभी ठीक हैं, लेकिन रोरो कर उन का बुरा हाल हो रहा है। दोनों को कमजोरी बहुत है। दरअसल, कमाने वाले व्यक्ति के गुजर जाने से पूरा परिवार मुश्किल में पड़ जाता है। इस परिवार ने पिता और बेटे को खोया है।

कोरोना ने बदल दी 'अंतिम संस्कार' की परिभाषा

हिन्दू धर्म में अंतिम संस्कार का अपना एक अलग ही विधान पुराणजीवियों के द्वारा बताया गया है। इसमें मरने के बाद सबसे पहले यह देखा जाता था कि मरने वाला अच्छे समय में मरा है या नहीं। अगर मरते समय पंचक लगा होता था तो अंतिम क्रिया के पहले पंचक शाति के लिये पूजा होती थी। अंतिम क्रिया में चिता की लकडी आम और चंदन का प्रयोग होता था। घी और गंगाजल का प्रयोग होता था। शव की अंतिम क्रिया से पहले नदी के पानी में नहलाया जाता था।

मरने वाले की आत्मा को शाति मिले इसके लिये गाय का दान और कई तरह के दान पंडित को दिये जाते थे। चिता के शव की राख को ले जाकर गंगा दी में प्रवाहित किया जाता था। क्योकि हिन्दू धर्म में अंतिम क्रिया गंगा के किनारे सबसे श्रेष्ठ मानी जाती है। अब हर शव गंगा के किनारे नहीं जलाया जा सकता इस कारण शव की चिता के अंष को गंगा में प्रवहित करने का चलन था। अंतिम संस्कार के बाद तेरहवी का संस्कार होता था। जिसमें बाल बनवाने से लेकर दावत खिलाने तक के काम होते थे।

ना दान ना संस्कार

कोरोना काल में इस अंतिम संस्कार की परिभाषा बदल गई है। जिन लोगों मौत कोरोना से हो रही है उनके शव को अंतिम संस्कार के लिये घर वालों को नहीं दिया जाता है। यह शव पूरी तरह से पीपी किट में पैक होता है। अस्पताल से शव दाह संस्कार के लिये घाट पर ले जाया जाता है। वहां लकडी की जगह पर

> मरने वाले की आत्मा को शाति मिले इसके लिये गाय का दान और कई तरह के दान पंडित को दिये जाते थे। चिता के शव की राख को ले जाकर गंगा दी में प्रवाहित किया जाता था। क्योकि हिन्दू धर्म में अंतिम क्रिया गंगा के किनारे सबसे श्रेष्ठ मानी जाती है। अब हर शव गंगा के किनारे नहीं जलाया जा सकता इस कारण शव की चिता के अंष को गंगा में प्रवहित करने का चलन था। अंतिम संस्कार के बाद तेरहवी का संस्कार होता था।

बिजली से शव को जलाया जाता है। शव को पीपी किट सहित की जला दिया जाता है। कोरोना से मरने वालों की संख्या बढने के बाद बिजली से जलाने में 3 से 4 घंटे का वक्त लगता है। ऐसे में अब खुले में लकडियों के सहारे ही शवदाह होने लगा है।

इससे शव को जलाने के लिये आम और चंदन तो मिल ही नहीं रहा। जंगल की जलाऊ लकडी वाले पेडो से मिलने वाली लकडी का ही प्रयोग किया जाता है। शव को जलाने के समय किसी भी तरह के अंतिम संस्कार में होने वाली पूजा को नहीं किया जाता है। ना ही घर वालों को कपाल क्रिया करने का मौका मिलता है। शव के जल जाने के बाद जगह को खाली करने के लिये सरकारी जेसीबी मशीन से वहां को साफ कर दिया जाता है। जिससे नये शवों का दाह संस्कार हो सके।

ना घर परिवार ना रिश्तेदार

अंतिम संस्कार की पूरी प्रकिया को देखे तो कोरोना काल में यह पूरी तरह से बदल गई है। पहले जहां अंतिम क्रिया में घर, परिवार, मित्र और नाते रिश्तेदार शामिल होते थे। अब केवल सरकारी मशीनरी ही काम करती है। पंडित, पुजारी और घाट पर काम करने वाले डोम अब इसका हिस्सा नहीं रह गये है। अंतिम संस्कार के बाद चिता की राख को गंगा में प्रवाहित करना मुष्किल हो गया है। क्योकि सामूहिक अंतिम संस्कार में चिता को पहचान कर उसकी राख ले जाना नामुमकिन हो गया है। उसको उपर वहां जाने पर कोरोना फैलने के खतरे को देखते हुये तमाम परिवार वहां जाने से बचते है।

अंतिम संस्कार के बाद होने वाली पूजा, तेरहवीं संस्कार भी केवल दिखावे के लिये रह गये है। तमाम परिवार अखबारों में विज्ञापन देने और षांतिपाठ से ही पूरी तेरहवीं संस्कार को पूरा मान लिया जाता है। कई परिवारों ने अब ह्यजूम एपह्य घर परिवार और दोस्तो को आपस में जोडकर अंतिम संस्कार को पूरा करते है। इस तरह से कोरोना ने पूरे अंतिम संस्कार को बदल दिया है। अंतिम संस्कार को लेकर होने वाले इस बदलाव का विरोध अब कोई वर्ग नहीं कर रहा है। इसे सहज रूप से सभी ने स्वीकार कर लिया है। अब इसका पालन भी लोग करना चाहते है। जिससे किसी और में इस की बीमारी को फैलने से रोका जा सके।

हाशिये पर तेरहवी संस्कार :

देखा जाये तो हिन्दू धर्म में अंतिम संस्कार और तेंरहवी संस्कार को लेकर विरोध शुरू से रहा है। लेकिन पंडे पुजारी हमेशा ही विरोध करने वालों को गलत बताते थे। यही वजह है कि कोरोना से पहले विद्युत शवदाह में अंतिम संस्कार करने वालों को हिन्दू धर्म का विरोधी माना जाता था। लकडियो के जरीये अंतिम संस्कार का भी विरोध होता था। क्योकि शव को जलाने के लिये पेड का काटना पडता था। यह पर्यावरण को नुकसान पहुंचाता था। धर्म के पांखड के चलते लोग लकडियो का प्रयोग बंद ही नहीं करना चाहते थे। आज कोरोना काल में उसी विद्युत शवदाह की तरफ हर कोई जाना चाहता है।

तेरहवी संस्कार भी केवल नाममात्र का बचा है। उसमें भी अब कोई बाध्यता नहीं रह गई है। इसकी सबसे बडी वजह यह है कि अब लोग ऐसे कार्यक्रमो में कम जाना चाहते है। दूसरे सामान्य परिवार इस तरह से खर्च से बचना चाहते थे। मरीज के इलाज के दौरान अस्पताल में ही इतना खर्च हो जाता है कि लोगो के पास पैसे नहीं होते। उनको कर्ज लेकर काम चलाना पडता है। खर्च का बोझ कम करने के लिये ऐसे खचीर्ले संस्कारो को टाल दिया जाता है।

घर वाले भी होते हैं बीमार

कोरोना संक्रमण में परिवार के एक आदमी के बीमार होने से दूसरे लोगों पर भी प्रभाव पडता है। कई मामलों में एक ही घर के कई कई लोग बीमार होते है। कई मामलों में घर के कई सदस्य अस्पताल में होते है। ऐसे में अगर एक व्यक्ति की मौत हो गई तो उसके क्रियाकर्म को देखने वाला भी कोई नहीं रहता है। ऐसे में तेरहवी और बाकी संस्कार की बात ही कठिन होती है। अस्पताल और इलाज में इतना पैसा खर्च हो जाता है कि परिवार की आर्थिक हालत बेहद खराब हो जाती है। जिसकी वजह से हर परिवार किसी तरह से केवल अपने जीवनयापन की तरफ ही ध्यान दे पाता था। ऐसे में तमाम कर्मकांडो को वह छोडना चाहता है। धार्मिक और पुराणजीवियों के दबाव में अभी तक वह रूढियो और रीति रिवाजों को तोडने का साहस नहीं दिखा पा रहा था। कोरोना काल में रिवाज खुद की टूट रहे है और अब इसका विरोध पुराणजीवी और पंडे भी नहीं कर पा रहे है।

“ अंतिम संस्कार की पूरी प्रकिया को देखे तो कोरोना काल में यह पूरी तरह से बदल गई है। पहले जहां अंतिम क्रिया में घर, परिवार, मित्र और नाते रिश्तेदार शामिल होते थे। अब केवल सरकारी मशीनरी ही काम करती है। पंडित, पुजारी और घाट पर काम करने वाले डोम अब इसका हिस्सा नहीं रह गये है। अंतिम संस्कार के बाद चिता की राख को गंगा में प्रवाहित करना मुष्किल हो गया है। क्योकि सामूहिक अंतिम संस्कार में चिता को पहचान कर उसकी राख ले जाना नामुमकिन हो गया है।

पुजारियों को सरकारी दानदक्षिणा क्यों

मध्य प्रदेश में आम लोग जाएं तेल लेने। युवाओं को न नौकरी न बेरोजगारी भत्ता, किसानों को राहत नहीं, कर्मचारियों को एरियर व महंगाई भत्ता नहीं और महिलाओं को सुरक्षा नहीं। लेकिन धर्म की दुकानदारी में बिलकुल भी कमी नहीं, इस के लिए पंडेपुजारियों को सरकारी दानदक्षिणा जारी है।

कोई नहीं पूछता कि युवाओं को बेरोजगारी भत्ता क्यों नहीं दिया जाता, किसानों को राहत और इमदाद खासतौर से सुपात्रों को क्यों वक्त पर नहीं दी जा रही। सरकार जनता का पैसा निकम्मे पंडेपुजारियों पर क्यों लुटा रही है, कर्मचारियों को एरियर और महंगाई भत्ता देने को सरकार के खजाने में पैसा नहीं है लेकिन पैसा उन पुजारियों के लिए ही क्यों है जो कुछ नहीं करते।

अव्वल तो तमाम धर्मग्रंथ इन नसीहतों से भरे पड़े हैं कि ब्राह्मण को दानदक्षिणा देते रहने में ही कल्याण और सार्थकता है लेकिन महाभारत का अनुशासन पर्व तो खासतौर से गढ़ा ही इसीलिए गया है। इस पर्व में भीष्म पितामह और युधिष्ठिर का संवाद है जिस में युधिष्ठिर एक जिज्ञासु की तरह भीष्म से पूछ रहा है कि दान और यज्ञ कर्म इन दोनों में से कौन मृत्यु के पश्चात महान फल देने वाला होता है और ब्राह्मणों को कब और कैसे दान देना चाहिए।

दानधर्म पर्व के अध्याय 61 को पढ़ें तो यह पूरा ब्राह्मणों की दान महिमा से रंगा हुआ है। श्लोक 1 से ले कर श्लोक 38 तक में भीष्म युधिष्ठिर को बता रहे हैं कि :

तुम नियमपूर्वक यज्ञ में सुशील सदाचारी तपस्वी वेदवेत्ता, सब से मैत्री रखने वाले तथा साधु स्वभाव वाले ब्राह्मणों को संतुष्ट करो।

1. यज्ञ करने वाले ब्राह्मणों का सदा सम्मान करो।

2 .जो बहुतों का उपकार करने वाले ब्राह्मणों का पालनपोषण करता है वह उस शुभकर्म के प्रभाव से प्रजापति के समान संतानवान होता है।

3 . युधिष्ठिर, तुम समृद्धिशाली हो इसलिए ब्राह्मणों को गाय, बैल, अन्न, छाता, घोड़े, जुते हुए रथ आदि की सवारियां, घर और शैया आदि वस्तुएं देनी चाहिए।

4. ब्राह्मणों के पास जो वस्तु न हो उसे उन को दान देना और जो हो उस की रक्षा करना भी तुम्हारा नित्य कर्तव्य है। तुम्हारा जीवन उन्हीं की सेवा में लग जाना चाहिए।

5. यदि तुम्हारे राज्य में कोई विद्वान ब्राह्मण भूख से कष्ट पा रहा हो तो तुम्हें भ्रूणहत्या का पाप लगेगा।

6. जिस राजा के राज्य में स्नातक ब्राह्मण भूख से कष्ट पाता है उस के राज्य की उन्नति रुक जाती है।

ये सब व ऐसी कई हाहाकारी डराने वाली बातें सभी धर्मग्रंथों में कही गई हैं जिन्हें पढ़ कर नास्तिक से नास्तिक आदमी को भी एक बार भ्रम हो जाता है कि बात में कोई तो दम होगा। जबकि हकीकत यह है कि ब्राह्मण जैसी श्रेष्ठ जाति को मेहनतमजदूरी जैसा तुच्छ काम न करना पड़े, इसलिए यह साजिश रची गई, जो लोकतंत्र के इस दौर में भी कायम है और जनप्रतिनिधि भी इस का आचरण व पालन कर रहे हैं।

शिवराज सिंह बने युधिष्ठिर

इस हाहाकारी पर्व को मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने न केवल अच्छी तरह घोंट लिया है बल्कि इस पर अमल करना भी शुरू कर दिया है। राज्य के चालू साल के बजट में उन्होंने सभी मठमंदिरों के पुजारियों को 8 करोड़ रुपए की राशि आवंटित की है। यह हालांकि भीष्म ने जो और जितना बताया उस के लिहाज से तो ऊंट के मुंह में जीरा सरीखी है लेकिन मुफ्तखोरी के लिहाज से उन की धर्मराज की इमेज गढ़ने के लिए काफी है। अब उन के राज्य में ब्राह्मण प्रसन्न हैं और उन पर आशीर्वाद बरसा रहे हैं।

यह कोई पहला मौका नहीं है जब शिवराज सिंह पुजारियों पर मेहरबान हुए हों। इस के पहले लौकडाउन के दौरान वे 16 मई, 2020 को 8 करोड़ रुपए की गुजारा राशि दे चुके हैं। दूसरे रोजगारधंधों की तरह कड़की के उन दिनों में पुजारियों को भी कथिततौर पर खानेपीने के लाले पड़े थे, तब शिवराज सिंह को भीष्म

> “मरने वाले की आत्मा को शाति मिले इसके लिये गाय का दान और कई तरह के दान पंडित को दिये जाते थे। चिता के शव की राख को ले जाकर गंगा दी में प्रवाहित किया जाता था। क्योंकि हिन्दू धर्म में अंतिम क्रिया गंगा के किनारे सबसे श्रेष्ठ मानी जाती है। अब हर शव गंगा के किनारे नहीं जलाया जा सकता इस कारण शव की चिता के अंष को गंगा में प्रवहित करने का चलन था। अंतिम संस्कार के बाद तेरहवी का संस्कार होता था।

पितामह के वचन याद आए थे। यह और बात है कि तब राज्य के भूखेप्यासे, मेहनतकश मजदूरों के लिए उन का दिल नहीं पसीजा था जो चिलचिलाती गरमी में नंगे पांव देश के कोनेकोने से भाग कर अपने घरों को लौट रहे थे। इन लोगों का गुनाह इतनाभर था कि वे ब्राह्मण या पुजारी नहीं, बल्कि अधिकांशतया दलित व पिछड़े तबके के थे।

अपने चौथे कार्यकाल के पहले ही बजट में उन्होंने पुजारियों का दिल खुश करते ब्राह्मण श्राप से मुक्ति पा ली है जिस के चलते साल 2019 के विधानसभा चुनाव में उन्हें हार झेलनी पड़ी थी। उस हार के बाद से उन्होंने दानधर्म पर्व को पूरी तरह आत्मसात कर लिया।

यों लगा था ब्राह्मण श्राप

बात मई 2016 की है जब मध्य प्रदेश में भाजपा को सम झ आ गया था कि सत्ताविरोधी लहर के चलते उस की कुरसी खतरे में है। तब दलित वोटों को लुभाने को उस ने एक अनूठा और नए किस्म का शिगूफा छोड़ा था कि वह दलित युवाओं को ट्रेनिंग दे कर पुजारी बनाएगी। इस बाबत हरी झंडी मिलते ही अनुसूचित जाति वित्त एवं विकास निगम ने राज्य सरकार को एक प्रस्ताव भेजा था जिस में कहा गया था कि अनुसूचित जाति की सामाजिक व आर्थिक उन्नति और समरसता के लिए पुरोहित प्रशिक्षण योजना शुरू की जाए।

तब राज्य सरकार की दलील यह थी कि प्रत्येक समाज में धार्मिक अनुष्ठानों और कर्मकांडों के लिए पर्याप्त संख्या में पंडित नहीं मिल पाते। ऐसे में मनमानी दक्षिणा वसूलने व कई जगहों पर जातिगत भेदभावों के मामले सामने आते हैं। तब अनुसूचित जाति कल्याण मंत्री ज्ञान सिंह ने बड़े गर्व से यह ज्ञान बघारा था कि धार्मिक अनुष्ठानों में कुछ विशेष वर्ग (जाहिर है ब्राह्मणों) का एकाधिकार है। अगर अनुसूचित जाति व पिछड़े वर्ग के लोग कर्मकांडों में प्रशिक्षित होंगे तो यह एकाधिकार टूटने लगेगा और दलितों को रोजगार मिलने लगेगा।

उस वक्त ब्राह्मणों ने आसमान सिर पर उठा लिया था और जगहजगह सड़कों पर उतरते इस फैसले का विरोध किया था। एक शंकराचार्य स्वरूपानंद सरस्वती ने इस योजना का विरोध करते हुए सरकार को चेतावनी दी थी कि वह सनातन धर्म की परंपराओं को न तोड़े। कामदगिरी के पीठाधीश्वर राजीव लोचनदास ने कहा था कि मंदिर में पुजारी कौन बनेगा, इस का फैसला सरकार न करे। यह राजनीतिक नहीं, बल्कि सामाजिक व्यवस्था है। सरकार को चाहिए कि वह पुजारी बनाना छोड़ प्रहरी बनाए जिस से लोगों को रोजगार मिल सके।

धर्म के इन दोनों व सरकार के उक्त फैसले से तिलमिलाए कई ठेकेदारों ने सीधेसीधे वर्णव्यवस्था का पाठ पढ़ाते धौंस यह दी थी कि शूद्र को शूद्र ही रहने दो, उसे कोई नाम न दो। बुंदेलखंड ब्राह्मण समाज के अध्यक्ष भरत तिवारी ने तो दुवार्साई रूप दिखाते सरकार को श्राप सा दे दिया था कि सरकार ब्राह्मणों के आशीर्वाद से बनती है और श्राप से गिर जाती है। यही हाल रहा तो 2018 के चुनाव में ब्राह्मण वर्ग भाजपा का श्राद्ध कर देगा।

और ऐसा हुआ भी कि कांग्रेस ने भाजपा से सत्ता छीन ली। हालांकि इस की वजह कांग्रेस की एकजुटता और शिवराज सरकार से आम लोगों की नाराजगी थी लेकिन यह भी सच है कि ब्राह्मणों ने भी भाजपा को वोट नहीं किया था या फिर वे वोट देने बूथ तक गए ही नहीं थे और जो गए थे वे नोटा का बटन दबाने गए थे जिस का कि फतवा भी 25 सितंबर, 2018 को पुजारी महासंघ के अध्यक्ष नरेंद्र दीक्षित ने जारी किया था। इस से आरएसएस और भाजपा के रणनीतिकार थर्रा उठे थे कि दांव तो उलटा पड़ गया। इस के बाद कांग्रेस की फूटमफाट के चलते भाजपा को फिर सत्ता मिली, तो शिवराज सिंह ब्राह्मणों के आगे नतमस्तक हो गए और अब सपने में भी दलितों को पुजारी बनाने का बेहूदा खयाल दिल में नहीं लाते। उन्हें सम झ आ गया है कि क्यों ब्राह्मण को ब्राह्मण कहा जाता है और क्यों भीष्म ने युधिष्ठिर को इस वर्ग को प्रसन्न व संतुष्ट रखने की सलाह दी थी।

नए बजट में पुजारियों को मानदेय देने की घोषणा फैसला कम बल्कि पुराने पापों का प्रायश्चित्त ज्यादा है। अब तकरीबन 25 हजार पुजारी उन पर फूल बरसा रहे हैं जिन्हें 3 से ले कर 6 हजार रुपए तक हर महीने बैठेबिठाए मिलेंगे और नियमित चढ़ावा व दक्षिणा मिलेगी, सो अलग।

कमलनाथ पर नहीं बरसी थी कृपा

15 साल बाद 2018 में कांग्रेस सत्ता में आई और कमलनाथ मुख्यमंत्री बने तो प्रदेश की जनता को लगा था कि अब धार्मिक पाखंडों से मुक्ति मिल जाएगी

और प्रदेश तरक्की के रास्ते चलेगा लेकिन तजरबेकार कमलनाथ आम लोगों की उस उम्मीद व मंशा को सम झ नहीं पाए। उन के कुरसी पर बैठते ही धर्मकर्म का खेल और जोरशोर से चलने लगा। हर कहीं, हर कभी यज्ञहवन पूर्ववत होते रहे। इन में भी मिर्ची यज्ञ शहरशहर हुआ तो लोग चकरा और झल्ला उठे कि आखिर यह हो क्या रहा है। अगर यही सब हमें देखना व भुगतना था तो भाजपा ही क्या बुरी थी।

तमाशा और बात यहीं खत्म नहीं हुई। कमलनाथ ने ब्राह्मणों का दिल, जो द्यआज तक अजेय है, को जीतने के लिए 1 फरवरी, 2019 को घोषणा कर दी कि पुजारियों का मानदेय तीनगुना बढ़ाया जाएगा, इस के अलावा सरकार ऐसे मंदिरों को आर्थिक सहायता देगी जो अपनी भूमि पर गौवंश पालेंगे। इस के कुछ दिनों बाद कमलनाथ भी एक नामी हनुमान मंदिर में एक नामी पंडित के सान्निध्य में समारोहपूर्वक सुंदरकांड और हनुमान चालीसा पढ़ते नजर आए तो ठोकने वालों ने अपना सिर ठोकते सम झ लिया कि अब हो गया विकास। विकास चाहिए, रोजगार चाहिए तो गला फाड़फाड़ कर चिल्लाओ, ह्यको नहीं जानत है जग में कपि, संकट मोचन नाम तिहारो।

जाने क्यों हनुमान ने कमलनाथ पर कृपा नहीं बरसाई, उलटे, बलबुद्धि के इस देवता ने कांग्रेस से उपेक्षित चल रहे दिग्गज नेता ज्योतिरादित्य सिंधिया की बुद्धि इतनी भ्रष्ट कर दी कि वे अपने गुट के 22 विधायकों को ले कर भगवा खेमे में पहुंच गए। नतीजतन, 22 मार्च, 2021 को शिवराज सिंह चौथी बार मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री बन बैठे और ब्राह्मणों को पूर्ववत रेवड़ियां बांटनी शुरू कर दीं। अब किसी को गिलाशिकवा उन से नहीं है। ब्राह्मण खुश हो गया है, यह खबर भीष्म पितामह तक पहुंचा दी गई है। बुद्धिजीवियों के राज्य मध्य प्रदेश में अब कोई नहीं पूछता कि युवाओं को बेरोजगारी भत्ता क्यों नहीं दिया जाता, किसानों, खासतौर से सुपात्रों को राहत और इमदाद क्यों वक्त पर नहीं दी जा रही। सरकार जनता का पैसा निकम्मे पंडेपुजारियों पर क्यों लुटा रही है, कर्मचारियों को एरियर और महंगाई भत्ता देने को सरकार के खजाने में पैसा नहीं है लेकिन पैसा उन पुजारियों के लिए ही क्यों है जो कुछ नहीं करते। संविधान के कौन से अनुच्छेद में लिखा है कि पूजापाठ करने वालों को सरकार अपने खजाने से पैसा देगी। ऐसा कर के क्या वह हजारों पुजारियों को निठल्ला नहीं बना रही, वह भी दूसरे गरीबों का पेट काट कर। सवाल बड़े पैमाने पर पूछा जाना तो बनता है।

“और ऐसा हुआ भी कि कांग्रेस ने भाजपा से सत्ता छीन ली। हालांकि इस की वजह कांग्रेस की एकजुटता और शिवराज सरकार से आम लोगों की नाराजगी थी लेकिन यह भी सच है कि ब्राह्मणों ने भी भाजपा को वोट नहीं किया था या फिर वे वोट देने बूथ तक गए ही नहीं थे और जो गए थे वे नोटा का बटन दबाने गए थे जिस का कि फतवा भी 25 सितंबर, 2018 को पुजारी महासंघ के अध्यक्ष नरेंद्र दीक्षित ने जारी किया था। इस से आरएसएस और भाजपा के रणनीतिकार थर्रा उठे थे ।

राजनीति के केंद्र में अब 'ममता फैक्टर'

पश्चिम बंगाल में भाजपा को मिली करारी हार ने मानो विपक्ष को संजीवनी ला कर दे दी हो। इस चुनाव ने यह दिखा दिया कि यदि सही रणनीति, कौशलता, सू झबू झ व कड़ी मेहनत से चुनाव लड़ा जाए तो भाजपा के धनबल, दमखम, मीडिया और सांप्रदायिक ध्रुवीकरण जैसी चालों को बुरी तरह मात दी जा सकती है। यही कारण है कि विपक्ष के पास अगले चुनावों में ममता फैक्टर ही सब से अधिक काम आने वाला है जिस की शुरूआत यूपी फतह से संभव है।

उत्तर प्रदेश के पंचायत चुनाव और पश्चिम बंगाल के विधानसभा चुनावों में एक समानता रही है कि दोनों ही जगह भाजपा और उस के हिंदुत्व के मुद्दे को जनता ने नकार दिया। भाजपा के आक्रामक प्रचार से दोनों प्रदेशों की जनता प्रभावित नहीं हुई। जनता को अब यह एहसास हो गया है कि भाजपा केवल प्रचार के सहारे चुनाव जीतती है। जनता ने अब विरोधी नेताओं पर भरोसा करना शुरू कर दिया है। बंगाल में ममता बनर्जी में उसे उम्मीद दिखी तो उत्तर प्रदेश में उसे अखिलेश यादव में उम्मीद दिख रही है।

ममता फैक्टर से उत्तर प्रदेश के नेता सीख ले सकते हैं। अगर उत्तर प्रदेश के नेताओं ने बंगाल चुनावों से सीख ली, तो भाजपा के लिए उत्तर प्रदेश विधानसभा का चुनाव जीतना मुश्किल होगा। भारतीय जनता पार्टी से मुकाबला करने के लिए ममता फैक्टर एक उम्मीद बन कर उभरा है। भाजपा को अजेय मान कर सभी नेताओं ने अपने शस्त्र डाल दिए थे जबकि पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ने न केवल भाजपा का मुकाबला किया बल्कि भाजपा की ह्यचतुरर्णी सेनाह्न को धूल चटा दी। राजनीति के जानकार अब मंथन कर रहे हैं कि ममता बनर्जी में क्या खास बात थी कि जिस की वजह से भाजपा को हार का मुंह देखना पड़ा।

पश्चिम बंगाल में जीत के बाद ममता बनर्जी पर पूरे विपक्ष की निगाह है। विपक्ष उन टिप्स को जानना चाहता है जिन से ममता ने भाजपा को हराया। आंकड़ों के आधार पर देखें तो 2021 के पश्चिम बंगाल विधानसभा चुनाव में भाजपा और ममता बनर्जी के बीच मुकाबला बराबरी का था। इस का आकलन 2019 के लोकसभा चुनाव में दोनों ही को मिलने वाले वोट प्रतिशत से किया जा रहा था। लोकसभा चुनाव में टीएमसी यानी तृणमूल कांग्रेस को लोकसभा की 22 सीटें मिली थीं और 43.3 प्रतिशत वोट मिले थे। भाजपा को 18 सीटें और 40.7 प्रतिशत वोट मिले थे।

लोकसभा के परिणाम के आधार पर यह आकलन किया गया था कि विधानसभा में टीएमसी को 164 और भाजपा को 121 सीटों पर बढ़त हासिल होगी। 2016 के विधानसभा चुनाव के आधार को देखें तो टीएमसी को 211 सीटें और 44.9 प्रतिशत वोट मिले थे, जबकि भाजपा को केवल 3 सीटें और 10.2 प्रतिशत वोट मिले थे। उस चुनाव में 32 सीटें और 26.1 प्रतिशत वोट लेफ्ट को मिले थे। 2019 के लोकसभा चुनाव में लेफ्ट को 6.3 प्रतिशत वोट ही हासिल हुए थे। 2016 से 2019 के चुनाव में भाजपा का प्रदर्शन काफी बेहतर था। भाजपा को उम्मीद थी कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के चेहरे, अमित शाह की

> ममता फैक्टर से उत्तर प्रदेश के नेता सीख ले सकते हैं। अगर उत्तर प्रदेश के नेताओं ने बंगाल चुनावों से सीख ली, तो भाजपा के लिए उत्तर प्रदेश विधानसभा का चुनाव जीतना मुश्किल होगा। भारतीय जनता पार्टी से मुकाबला करने के लिए ममता फैक्टर एक उम्मीद बन कर उभरा है। भाजपा को अजेय मान कर सभी नेताओं ने अपने शस्त्र डाल दिए थे जबकि पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ने न केवल भाजपा का मुकाबला किया बल्कि भाजपा की चतुरर्णी सेना को धूल चटा दी।

आक्रामक चुनावप्रचार शैली, आरएसएस और भाजपा के कार्यकताओं का मुकाबला ममता बनर्जी नहीं कर पाएंगी। भाजपा के लिए पश्चिम बंगाल चुनाव जीतना बेहद खास था। ममता बनर्जी अकेली ऐसी नेता थीं जो भाजपा का मुखर विरोध कर रही थीं। पश्चिम बंगाल चुनाव में जीत से भाजपा की ताकत और आत्मविश्वास बढ़ जाता। पश्चिम बंगाल में जीत के लिए भाजपा ने अपनी पूरी ताकत लगा दी।

एक तरह से पूरा मुकाबला खरगोश और कछुए की कहानी सा लग रहा था। अंत में जीत कछुए की ही हुई। विपक्षी एकजुटता जरूरी 2021 के विधानसभा चुनाव में पुराने आकलन फेल हो गए। ममता बनर्जी और टीएमसी को 213 सीटें और 47.9 प्रतिशत वोट मिले। यह प्रदर्शन 2016 और 2019 दोनों से बेहतर था। इस से साफ हो गया कि ममता बनर्जी पर 10 साल के सत्ताविरोधी मतों का कोई प्रभाव नहीं पड़ा। भाजपा को 77 सीटें और 38.1 प्रतिशत वोट मिले जो 2019 के आकलन के हिसाब से कम थे। टीएमसी और भाजपा के बीच सीधे मुकाबले में कांग्रेस और वामदल कहीं नहीं थे। भाजपा ने जिन प्रदेशों में अच्छा प्रदर्शन किया वहां विपक्षी दलों से सीधा मुकाबला नहीं था। भाजपा कांग्रेस के अलावा सीधे मुकाबले में किसी भी दल से जीत नहीं पाती है।

बिहार विधानसभा लोक जनशक्ति पार्टी और दूसरी छोटीछोटी पार्टियों के चुनाव मैदान में उतरने का लाभ भाजपा को हुआ और नुकसान राजद यानी राष्ट्रीय जनता दल को हुआ। बिहार में मुसलिम समाज एकजुट नहीं हो पाया था। ऐसे में भाजपा-जदयू गठबंधन को सरकार में वापस आने का मौका मिल गया था। ममता बनर्जी के मामले में अच्छी बात यह रही कि उन्होंने पूरी लड़ाई सीधी लड़ी। वोटों का बंटवारा नहीं हो सका। सांप्रदायिक धुव्रीकरण को रोकना भाजपा की जीत में धार्मिक ध्रुवीकरण का सब से बड़ा हाथ होता है। पश्चिम बंगाल में भी भाजपा ने ममता बनर्जी पर यह आरोप लगाया कि वहां ह्यजयश्री रामह्ल का नारा लगाना मना है। ममता बनर्जी को ह्यजयश्री रामह्ल का नाम पसंद नहीं है।

भाजपा की योजना थी कि ममता बनर्जी को मुसलिमवादी नेता के रूप में प्रचारित किया जाए जिस से हिंदुओं का ध्रुवीकरण भाजपा के पक्ष में हो सके। पश्चिम बंगाल में जनता एकसाथ मिल कर काम करती रही है। ऐसे में वह हिंदूमुसलिम में बंट नहीं सकी। अगर भाजपा 50 से 60 प्रतिशत हिंदुओं को भी एकजुट कर लेती तो वह चुनाव जीत लेती। अगर भाजपा के खिलाफ चुनाव जीतना है तो वोट का धार्मिक ध्रुवीकरण रोकना होगा। केवल मुसलिम वोट से चुनाव नहीं जीता जा सकता। ममता ने अपनी हर रैली में जनता को यह सम झाने का काम किया कि कुछ लोग बंगाल की जनता को हिंदूमुसलिम में बांटना चाहते हैं पर मैं आप का पूरा समर्थन चाहती हूं। ममता की इस तरह की पहल से वोटों के धार्मिक ध्रुवीकरण के प्रभाव को रोकने में सफलता मिली जो उन की जीत का कारण बना।

अगर हिंदुओं का धार्मिक ध्रुवीकरण हो गया होता और भाजपा को 5 से 10 प्रतिशत वोट ज्यादा मिल जाते और तब ममता बनर्जी हार सकती थीं। सीधी सरल छवि भाजपा का चुनावप्रचार आक्रामक था। बहुत सारे नेता व कार्यकर्ता अहं के साथ प्रचार कर रहे थे। अमित शाह ने ह्य200 पारह्ल का नारा दिया तो नरेंद्र मोदी ने ह्य2 मई दीदी गईह्ल का नारा दिया। भाजपा के नेताओं से बात करते समय साफ लगता था कि मतगणना की कोई जरूरत ही नहीं है। भाजपा चुनाव जीत गई है। भाजपा के घमंड के मुकाबले में ममता बनर्जी ने बहुत ही सम झदारी व सरलता से अपना चुनावप्रचार किया। वे केवल यही कहती रहीं कि पश्चिम बंगाल की जनता को बंटने नहीं देंगे। भाजपा के चुनावप्रचार में दर्जनों हैलिकौप्टर थे, तो ममता बनर्जी के पास एक हैलिकौप्टर था। भाजपा के पास स्टार प्रचारकों की लंबी लिस्ट थी तो ममता बनर्जी अकेला चेहरा थीं।

ममता बनर्जी सूती धोती और हवाई चप्पल में रहीं। यह उन का सदाबहार पहनावा है। वे हर रैली में मास्क का प्रयोग करती दिखती रहीं। भाजपा के नेताओं की बड़ीबड़ी रैलियां होती थीं। नेताओं के लकदक, चमकदार कपड़े होते थे। ऐसे मे जनता को ममता बनर्जी की सादगी और सरलता के साथ सीधी व सरल छवि ने ज्यादा प्रभावित किया। जनता को इस छवि के साथ जुड़ना पसंद आ रहा था। छवि का मुकाबला भी ममता फैक्टर की बड़ी जीत की वजह माना जा रहां है। जनता को दिखावे की जगह पर सरलता रास आती है। उत्तर प्रदेश की बारी पश्चिम बंगाल विधानसभा चुनाव के बाद दूसरा बड़ा चुनावी संग्राम 2022 में उत्तर प्रदेश में होना है। यह भाजपा के लिए सब से बड़ी उम्मीदों वाला प्रदेश है। यहां भाजपा की योगी सरकार सत्ता में है। उत्तर प्रदेश में 2002 के बाद सत्ता पक्ष को दोबारा जीत नहीं मिली है।

पश्चिम बंगाल चुनाव में जिस तरह से ममता बनर्जी ने भाजपा को हराया उस से उत्तर प्रदेश के प्रमुख विपक्षी दल समाजवादी पार्टी के नेता अखिलेश यादव का मनोबल बढ़ा है। अखिलेश यादव और ममता बनर्जी के बीच संबंध बहुत अच्छे हैं। अखिलेश यादव ने ममता के चुनावी प्रचार में हिस्सा लिया था। ऐसे में यह बात साफ है कि उत्तर प्रदेश के चुनाव में ममता बनर्जी का मार्गदर्शन जरूर मिलेगा। अखिलेश यादव ने उत्तर प्रदेश के पंचायत चुनावों में भाजपा को करारी शिकस्त दी है। 3,050 जिला पंचायत सदस्य के पदों में से सब से अधिक पद समाजवादी पार्टी को मिले हैं। यहां भी भाजपा ने सब से ज्यादा चुनावी प्रचार किया पर उस का प्रचार काम नहीं आया। इस की सब से बड़ी वजह यह है कि भाजपा की योगी सरकार का गांव के लोगों में जनाधार बढ़ नहीं पाया है।

गांव के लोग छुट्टा जानवरों, महंगाई, बेरोजगारी से तो परेशान थे ही, कोरोनाकाल में उत्तर प्रदेश की नाकामी ने जनता का सरकार से मोहभंग किया है। चुनावों पर पड़ेगा कोरोना अव्यवस्था का असर 2017 के विधानसभा चुनावों में भाजपा का सब से बड़ा वोटबैंक युवावर्ग था। कोरोना संकट के दौर में युवाओं को सब से बड़ी परेशानी झेलनी पड़ी। उन को अपने मरीजों की देखभाल करनी थी। इन युवाओं ने अपनी आंखों के सामने अपने परिजनों को तड़पते देखा है। वैंटिलेटर, औक्सीजन और अस्पताल की कमी से लोगों की मौत हुई। 4 सालों में प्रचार के बल पर सरकार की चमक दिखाई गई। जब कोरोना संकट में जनता मुश्किल में फंसी तो न अस्पताल मिले न शमशान में जगह खाली मिली।

कोरोनाकाल की अव्यवस्था अगले सभी चुनावों में बड़ी भूमिका अदा करेगी। सभी विधानसभा चुनावों में भाजपा के मुकाबले विपक्ष को संयुक्त हो कर लड़ना पड़ेगा। पश्चिम बंगाल के चुनाव से नेताओं ने यह सबक सीखा है। नेताओं को वोटों का धार्मिक विभाजन रोकना होगा। जनता के बीच सीधा और सरल संवाद स्थापित करना होगा। किसी भी प्रदेश में भाजपा के पास करने के लिए कोई नया काम नहीं है। अयोध्या का मंदिर मुद्दा अब खत्म हो चुका है। सभी राज्य सरकारों के चुनाव फरवरी 2022 तक होंगे। करीब 9 माह का समय है। इस दौर में कोरोना का प्रभाव खत्म होता नजर नहीं आ रहा है। पंचायत चुनावों के नतीजों से साफ है कि जनता भाजपा से नाराज है। खुद भाजपा के नेता गुटबाजी का शिकार हैं। ऐसे में भाजपा की राह आसान नहीं है।

“अगर हिंदुओं का धार्मिक ध्रुवीकरण हो गया होता और भाजपा को 5 से 10 प्रतिशत वोट ज्यादा मिल जाते और तब ममता बनर्जी हार सकती थीं। सीधी सरल छवि भाजपा का चुनावप्रचार आक्रामक था। बहुत सारे नेता व कार्यकर्ता अहं के साथ प्रचार कर रहे थे। अमित शाह ने ह्य200 पारह्ल का नारा दिया तो नरेंद्र मोदी ने ह्य2 मई दीदी गईह्ल का नारा दिया। भाजपा के नेताओं से बात करते समय साफ लगता था कि मतगणना की कोई जरूरत ही नहीं है।

कोविड संकट में शिक्षा

कोविड संकट ने शिक्षा व्यवस्था का बुरा हाल कर दिया है। इसमें प्राथमिक, माध्यमिक और उच्च शिक्षा सभी शामिल है। सबसे अधिक बुरा प्रभाव उच्च शिक्षा पर पड़ रहा है। जहां छात्र अपनी शिक्षा पूरी करके रोजगार की तलाश में निकलते है तो वहां उनको ज्यादातर खाली हाथ रहना पड़ता है। उच्च शिक्षा में आईआईएम, आईआईटी जैसे विश्वविद्यालय औनलाइन शिक्षा का बेहतर उपयोग भले कर रहे हों पर देश में ऐसे कालेज और संस्थान सबसे अधिक हैं जहां औनलाइन शिक्षा सही प्रकार से नहीं हो पा रही है। औनलाइन शिक्षा में नोट्स और असाइनमेंटस का बहुत महत्व होता है। इनको इस तरह से तैयार किया जाता है कि छात्रों को असुविधा ना हो पर ज्यादातर कालेजों में ऐसा माहौल नहीं है।

2020 के बाद यह सोचा जा रहा था कि अगले साल शिक्षा का सत्र सही से चलेगा। 2020 के दिसंबर माह से ही इस बात के प्रयास भी शुरू कर दिए गए थे। 2021 की जनवरी माह में स्कूल और कालेज का खुलना शुरू हुआ। कालेजों के बाद स्कूलों को भी खोल दिया गया। औनलाइन क्लास के बाद औफलाइन परीक्षाएं भी प्लान की जाने लगी। कालेजों में तो फरवरी-मार्च माह में पहले सेमेस्टर की परीक्षाएं होने लगी थी। इसी समय फिर से कोविड संक्रमण का दौर शुरू हो गया। कोविड की दूसरी लहर बहुत तेजी से आगे बढ़ने लगी और पूरे देश को अपनी गिरफ्त में लेने लगी। 2020 में कोविड संक्रमण से देश की अर्थव्यवस्था पर प्रभाव पड़ा था, इस साल जानमाल को बेहद नुकसान होने लगा। छात्रों को बिना परीक्षा के पास कर देने से वह दूसरी कक्षा में पहुंच तो जा रहे पर उनको जानकारी ना के बराबर हो रही है।

कोविड संक्रमण का शिकार होकर लोगों के मरने से परिवार के परिवार तबाही की कगार पर पहुंच गए। देश में मंहगी शिक्षा पहले से ही सामान्य परिवारों को परेशान कर रही थी। दो साल से उपजे कोविड संकट ने जिस तरह से देश के आर्थिक आधार को तोड़ने का काम किया उसका प्रभाव भी शिक्षा पर पड़ा है। स्कूलों में पिछले साल से औनलाइन शिक्षा दी जा रही है। इससे छात्रों को बहुत कुछ समझ नहीं आ रहा है। किताबी जानकारी तो किसी तरह से मिल भी जा रही पर प्रैक्टिकल विषयों की जानकारी एकदम भी नहीं हो रही है। शिक्षाविद रिचा खन्ना कहती है,ह्लऔफलाइन शिक्षा और औनलाइन शिक्षा दोनो में अंतर होता है। जिन विषयों में प्रैक्टिकल का महत्व होता है वहां केवल औनलाइन से काम नहीं चलता है। हमारे देश में औनलाइन शिक्षा का आधार अभी तैयार हो रहा है।ह्व

दुर्घटनाओं में टूटते परिवार :

20 साल की नेहा अपने मातापिता की अकेली संतान थी। उसके पिता रमेश चन्द्र प्राइवेट नौकरी करते थे। इस नौकरी में उनको टूर भी करना पड़ता था। जिसमें उनको महाराष्ट्र आनाजाना पड़ता था। इसी में उनको कोविड का संक्रमण हो गया।जिस के चलते उनको अस्पताल में भर्ती करना पड़ा। जिसमें उनको 20 दिन अस्पताल में रहना पड़ा। इस 20 दिन में इलाज में 11 से 12 लाख रूपया खर्च हो गया। इसके बाद भी रमेशचन्द्र को बचाया नहीं जा सका। नेहा और उसकी मां के सामने सबसे बड़ी परेशानी यह है कि अब उनका घर कैसे चलेगा? नौकरी और बच्चों की पढ़ाई के लिए रमेशचन्द्र ने कई साल पहले अपनी गांव की खेत और मकान बेच का शहर में रहना शुरू किया था।

बेटी नेहा को इंजीनियर बनाने के लिए एडमिशन दिलाया। अचानक कोविड का प्रकोप बढ़ा तो पहले की रूक गई। दूसरे साल की पढ़ाई में रूकावट तो थी इसी बीच पिता के ना रहने के बाद नेहा की पढ़ाई कैसे पूरी होगी यह सवाल सामने खड़ा हो गया। यह कोई नेहा की अकेली परेशानी नहीं है। कई परिवारों के बच्चे इस परेशानी से गुजर रहे हैं। जिनके सामने यह संकट है कि वह अपनी आगे की पढ़ाई कैसे जारी रखेंगे, अभी तो नेहा और उसकी मां इस बारे में कुछ भी सोचने की हालत में नहीं है। नेहा का मन है कि वह किसी भी तरह से अपनी पढ़ाई जारी

“2020 के बाद यह सोचा जा रहा था कि अगले साल शिक्षा का सत्र सही से चलेगा। 2020 के दिसंबर माह से ही इस बात के प्रयास भी शुरू कर दिए गए थे। 2021 की जनवरी माह में स्कूल और कालेज का खुलना शुरू हुआ। कालेजों के बाद स्कूलों को भी खोल दिया गया। औनलाइन क्लास के बाद औफलाइन परीक्षाएं भी प्लान की जाने लगी। कालेजों में तो फरवरी-मार्च माह में पहले सेमेस्टर की परीक्षाएं होने लगी थी।

रख सके। जिससे अपनी पढ़ाई पूरी करके अपनी मां का सहारा बन सके और अपने पिता की तरह घर का आर्थिक बोझ उठा सके।

बेरोजगारी ने बढाई मुश्किलें

कोविड का प्रभाव शिक्षा व्यवस्था पर और भी कई तरह से रहा है। कोविड संकट के दौरान लोगों में बेरोजगारी भी बढ़ रही है। जिन बच्चों ने अपनी शिक्षा पूरी कर ली उनको रोजगार नहीं मिल रहा है। प्राइवेट नौकरी में सेलरी का पैकेज कम हो गया है। डाक्टर, इंजीनियरिंग,ला और एमबीए की पढ़ाई में अब महंगी फीस परिवारों को अदा करनी पड़ती है। कई परिवार कर्ज लेकर बच्चों को पढ़ाते है। उनको यह उम्मीद होती है कि बच्चा जब पढ़ाई करके कालेज से निकलेगा तो उसकी कमाई से पढ़ाई का कर्ज भी पूरा हो सकेगा और घर को मदद भी मिलेगी। कोविड संकट के दौरान पहले साल तालाबंदी होने के बाद प्राइवेट सेक्टर को बहुत नुकसान हआ। देश मंदी के दौर में पहुंच गया। आर्थिक संकट गहराने से नौकरियों का सकट खड़ा हो गया। जिन युवाओं को नौकरियां मिली भी वहां पैकेज कम था।

पढ़ाई और फीस का खर्च कम नहीं हुआ। कालेजों में फीस के साथ ही साथ हौस्टल में रहने और खाने की खर्चा बढ़ गया। पहले नौर्मल होस्टल की फीस 60 से 80 हजार रूपए सालाना थी। जो अब बढ़ कर 80 हजार से 1 लाख तक पहुंच गई है। 2020-2021 में भले ही बच्चों को हौस्टल में रहना ना पड़ा हो पर स्कूलों में हौस्टल के खर्च में किसी तरह की रियायत नहीं दी गई। औनलाइन पढ़ाई हुई और छात्र कालेज नहीं गए पर फीस और हौस्टल में खर्च में राहत नहीं दी गई। समाजसेवी प्रताप चन्द्रा कहते है कि,ह्लशिक्षा पूरी करने के बाद भले ही रोजगार नहीं मिल रहे। बेरोजगारी बढ़ने से फीस देने की दिक्कत आई। लोगों ने बच्चों की पढ़ाई छुड़वाने का काम किया। कम फीस वाले स्कूलों में भर्ती कराया। इसके बाद भी पढ़ाई के बाद रोजगार कहीं दिख नहीं रहा है।

साल दर साल गहराता संकट

कोविड से केवल 2020 के साल में ही दिक्कत नहीं थी, 2021 में भी पढ़ाई का यही हाल देखने को मिल रहा है। जिस तरह से यह कहा जा रहा है कि इस साल के अंत तक कोविड की तीसरी लहर भी आने का अंदेशा दिख रहा है। अनुमान लग रहा है कि तीसरी लहर का प्रभाव छोटे बच्चों पर पड़ेगा। जिससे स्कूल और कालेज सबसे अधिक प्रभावित होंगे। ऐसे में शिक्षा का हाल सुधरता नहीं दिख रहा है। जानकार लोग मान रहे हैं 2024 तक स्कूल और शिक्षा के हालत सुधरने वाले नहीं है। जब तक कोविड को लेकर पूरे देश में वैक्सीन नहीं लग जाएगी और कोविड का प्रभाव कम नहीं हो जाएगा तबतक सुचारू रूप से शिक्षा का यही हाल रहेगा। ऐसे में इस दौरान शिक्षा व्यवस्था औनलाइन पर निर्भर करेगी। अगर शिक्षा व्यवस्था में औनलाइन का प्रभाव असर ऐसे ही बना रहेगा तो स्कूलों पर भी संकट खड़ा हो जाएगा।

एक साल में 2 सेमेस्टर भी अब पूरे नहीं हो पा रहे। जो छात्र नए कोर्स में प्रवेश चाहते हैं समय से सेमेस्टर पूरा ना हो पाने के कारण वह पूरा नहीं हो पाता है। समय पर परीक्षाएं और परीक्षा के परिणाम घोषित ना होने के कारण छात्र और उनके पैरेंटस दोनों ही तनाव में रह रहे हैं।कालेजों के द्वारा परीक्षाओं के नाम पर खानापूर्ति करके छात्र को अगली कक्षा तो में प्रवेश तो दे दिया जा रहा है पर गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का पूरी तरह से अभाव दिखता है। ऐसे में यह छात्र प्रतियोगी परीक्षाओं को कैसे पास कर पाएंगे यह सवाल बना हुआ है। समय पर परीक्षाएं आयोजित ना होने के कारण अंतिम साल के छात्रों पर प्लेसमेंट ना होने का खतरा मंडराता रहता है।छात्रों के इंटर्नशिप और दूसरे कार्यक्रमों पर भी समय पर परीक्षाएं आयोजित ना होने का प्रभाव पड़ता है।

सवार्गीण विकास में बाधा

स्कूल और कालेजों के सुचारूपूर्वक ना खुलने से छात्रो के सर्वांगीण विकास पर असर पड़ता है। खेल, मनोरंजन और डिबेट जैसे कार्यक्रमों के आयोजन से छात्रों का सवार्गीण विकास होता था। परिसर बंद रहने से यह गतिविधियां पूरी तरह से ठप्प पड़ीहैं। आज छात्र कंप्यूटर, लैपटौप और मोबाइल तक सीमित रह जा रहे हैं। घरों में कैद होने की वजह से सामाजिक दूरी बन रही है। ऐसे में छात्र डिप्रेशन जैसी मानसिक बीमारियों के शिकार होते जा रहे हैं। मनोविज्ञानी डाक्टर नेहा आनंद कहती है कि, ह्लछात्रों को ऐसी हालत से बाहर निकालने के लिए कालेज और घरपरिवार को मिल कर सोचना चाहिए। इसके साथ ही साथ मनोविज्ञानियों को भी इस दिशा में सोचविचार करना चाहिए। जिससे वह छात्रों को इस हालत से निकालने में मदद कर सके।

कोविड का सबसे अधिक खराब प्रभाव शिक्षा व्यवस्था पर पड़ रहा है। सरकार, समाज और घरपरिवार को मिलाकर इसका रास्ता निकालना होगा। ऐसे विकल्प तलाशने होंगे जिसमें छात्रों के भविष्य पर कोविड की इस अव्यवस्था का कम से कम प्रभाव पड़ सके। यह समय ऐसा है जब छात्रों का मनोबल बढ़ाया जाना चाहिए। कोविड की समूची व्यवस्था के कारण पूरी दुनिया में शिक्षा व्यवस्था का बुरा हाल है। हमारे देश में छात्रों की संख्या अधिक होने और गरीबी होने के कारण संकट अधिक है। यह संकट आने वाले सालों में एकदम से खत्म नहीं होने वाली है। ऐसे में इसको सामने रखकर शिक्षा व्यवस्था को तैयार करना होगा। तभी इसका मुकाबला किया जा सकता है।

“कोविड से केवल 2020 के साल में ही दिक्कत नहीं थी, 2021 में भी पढ़ाई का यही हाल देखने को मिल रहा है। जिस तरह से यह कहा जा रहा है कि इस साल के अंत तक कोविड की तीसरी लहर भी आने का अंदेशा दिख रहा है। अनुमान लग रहा है कि तीसरी लहर का प्रभाव छोटे बच्चों पर पड़ेगा। जिससे स्कूल और कालेज सबसे अधिक प्रभावित होंगे। ऐसे में शिक्षा का हाल सुधरता नहीं दिख रहा है। जानकार लोग मान रहे हैं 2024 तक स्कूल और शिक्षा के हालत सुधरने वाले नहीं है।

थाली बजाई, दिया जलाया, अब 'यज्ञ' भी

कोरोना की दूसरी लहरसे देश में हाहाकार मचा हुआ है, हर दिन सैकड़ों मोतें सरकारी पन्नों में दर्ज हो रही हैं तो कई हजारोंअनामअसमय शमशान घाटों में जलाई जा रही हैंऔर जिन्हें यहां जगह नहीं मिली उन्हें मां गंगा में बहाया जा रहा है। तभी तो उत्तर प्रदेश से गंगा में बहते 71 से ऊपर लाशें सीधे बिहार जा पहुंची और देश के सिस्टम का दरवाजा खटखटा कर पूछ बैठी कि क्या अभी भी सब चंगा सी?

मां गंगा सब की है, हालाकि सब मां गंगा के नहीं हैं, यहां प्रधानमंत्री भी आते हैं बड़ेबड़े शो होते हैं और वे उन शो में बजने वाले गानों पर थिरकते भी हैं,यहां लाखों भक्त भी आते हैं और कुंभ में डुबकियां मारते हैं, जिन भक्तों का पाप का घड़ा भर जाता है वे यहां अपने पाप बड़ी आसानी से धो जाते हैं, मरने पर तो उन की राख को मांगंगा के सुपुर्द कर दिया जाता है ताकि आत्मा को शांति पहुंच सके। कितना आसान तरीका है न अपराध से मुक्ति का?किन्तु जब सेफिजा बदली, सरकार बदली, हिंदुत्व प्रचंड हुआ तो भक्तों की राख की जगह अब सीधे शोर्टकट तरीके से भक्तों की लाशें ही बहाई जा रही हैं। चलो यह भी ठीक है,शरीर को तो एक न एक दिन दिन मिट्टी होना ही है मरने के बाद किसे पता क्या हुआ, लाश जला दफना या बहा।मेरा दुख बस यह है कि मोदीजी अपने कामों का पूरा श्रेय नहीं लेते हैं, नोटबंदी के समय गंगा में बहने वाले नोंटों का श्रेय तो उन्होंने ले लिया लेकिन मांगंगा मेंबहती लाशों का श्रेय नहीं ले पाए,देश को उन के खिलाफयह नाइंसाफी कतई नहीं सहनी चाहिए। इसलिए इस का कुछ श्रेय तो उन के सुपुर्द किया ही जाना चाहिए।

यह भी ठीक है, मौत के बाद के कर्मकांड वैसे ही गरीबों की जेब पर भारी पड़ते थे सो मोदीजी का यह शोर्टकट तरीका भी देरसवेर भक्तों को पसंद आ ही जाएगा।धर्म से बनी सरकार, धर्म के इर्दगिर्द ही सोचती है और मेरा खयाल है उन का सोचना जायज भी है क्योंकि वह येनकेन प्रकारेण धर्म की पीठ पर सवार हो कर ही तो बनी है और देश की समझदार जनता ने इन्हें जिताया ही धर्म पर है तो

> मां गंगा सब की है, हालाकि सब मां गंगा के नहीं हैं, यहां प्रधानमंत्री भी आते हैं बड़ेबड़े शो होते हैं और वे उन शो में बजने वाले गानों पर थिरकते भी हैं,यहां लाखों भक्त भी आते हैं और कुंभ में डुबकियां मारते हैं, जिन भक्तों का पाप का घड़ा भर जाता है वे यहां अपने पाप बड़ी आसानी से धो जाते हैं, मरने पर तो उन की राख को मांगंगा के सुपुर्द कर दिया जाता है ताकि आत्मा को शांति पहुंच सके।

वह इस तरीके को भी हाथोंहाथ ले ही लेगी। मेरा मानना है कि उन्हें इन बहती लाशों से हैरानी तो बिलकुल भी नहीं होनी चाहिए क्योंकि हम जनता ने ही तो ऐसे प्रकांड धर्मांध नेता चुने हैं जिन का विश्वास विज्ञान, डाक्टरों और दवाइयों पर कम, धर्मकर्म, कर्मकांड, अंधविश्वास पर ज्यादा है।

कोरोना की दूसरी लहर जैसे ही तेज होती जा रही है, नेताओं के धार्मिक प्रपंच भी तेज होते जा रहे हैं। यह एक तरह से मान कर चल सकते हैं की हर एक्शन का रिएक्शन जैसा है। ऐसे ही मध्यप्रदेश में शिवराज सिंह चौहान के कार्यकाल में पर्यटन एवं संस्कृति मंत्री उषा ठाकुर ने कोरोना की तीसरी लहर को हराने के लिए अजीबोंगरीब समाधान दे दिया है।उषा ठाकुर एमपी के मऊ से 2018 में विधानसभा का चुनाव जीती थी।

उषा ठाकुर ने पत्रकारों के साथ बातचीत के दौरान यज्ञ में आहुति देनेको कोरोना के खिलाफ लड़ने में कारगर समाधान बताया। उन्होंने कहा,तीसरी लहर के लिए हम जागृत हैं। तीसरी लहर बच्चों पर असर डालेगी, उसके लिए हम ने तैयारियां शुरू कर दी हैं। मुझे भरोसा है कि इस तीसरीलहर से भी हम निपट लेंगे। आप सब से प्रार्थना करती हूं कि पर्यावरण की शुद्धि के लिए सब एक साथ आहुतियां डालें क्योंकि महामारी के नाशमें अनादि काल से यज्ञ परंपरा को अपनाया गया है। यह यज्ञ चिकित्सा है, धर्मांधता नहीं है। हम सब दोदो आहुतियां डालें और अपने हिस्से का पर्यावरण शुद्ध करें। तीसरी लहर हिंदुस्तान को छू नहीं पाएगी।

चलो इस बयान से यह तो साबित हुआ कि मध्यप्रदेश सरकार कोरोना से लड़ने की तैयारियां कर रही हैं भले उन का हथियार यज्ञ ही सही। देश में उषा ठाकुर जैसे महान विद्वानों की कमी नहीं है, ऐसे प्रकांड और तेजस्वी विद्वान जो वेद पुराणों और धार्मिक ग्रंथों से देश चलाने का हुनर रखते हैं। वे संकराचार्य और मनुओं के घोर भक्त हैं इसलिए उन के विचारों को तहेदिल से फौलो भी करते हैं। यह उन धार्मिक ग्रन्थ में पूरी निष्ठा से रखते हैं जिन में महिलाओं और पिछड़ों का शोषण करने की रीतिनीति लिखी हैं, इसलिए यह तो माना जा ही सकता है कि इन के शासन करने का तरीका बांटने का है जोड़ने का नहीं।

चलो बढ़िया भी है उन्होंने ऐसा कहा वरना देश तो कब से वैक्सीन के आस में बैठा था कि अब लगेगी तब लगेगी, बेचारे लोग क्या जानते थे कि उन की वाट लगेगी। ध्यान रहे इस बयान के बाद अब कोई वैक्सीन की लाइन में नहीं लगेगा, अब सब यज्ञ में आहुति देने का विचार बनाएंगे, कोई अपने मांबाप की आहुति देगा, कोई अपने पति की, कोई पत्नी की तो कोई अपने बच्चों की। वैसे भी इन भले नेताओं के चलते लोग आहुतियां लम्बे समय दे ही रहे हैं, कभी नोटबंदी के नाम पर, कभी जैलबंदी के नाम पर तो कभी देशबंदी के नाम पर।

ऐसा नहीं है कि विद्वान उषा ठाकुर का यह पहलाबयान है, इस से पहले भी इन्होने अपनी तरकश से ऐसे तीर कई बार छोड़े हैं। ताजाताजाहालिया मामला तब बना जब उन्होंने कहा था किगोबर से बने कंडों पर घीं लगा कर किएहवन से घर 12 घंटे तक सैनिटाईज रहता है। वाहङ्क। क्या बात हैङ्क।जब माता उषा ने ऐसा दावा किया तो सैनिटाईजर बनाने वाली कंपनियां सकते में आ गईं। भई आएं भी क्यों न,अब बनाबनाया मार्किट जाने का खतरा तो बना ही रहता है न? और मेरा तो खयाल है कि कुछ समय बाद एकआध कंपनी सेनिटाईजर की जगह गोबर के कंडे बनाने चालू कर भी देगी।

ऐसे ही थोड़ी उषा ठाकुर नवरात्रों और जगरातों में भजन गाया करती थीं, वहां से मिली स्त्री धर्म की शिक्षा वह बखूबी जानती हैं, इसीलिए तो हाल ही में उषा ठाकुर ने महिलाओं को सलीके से रहने का फरमान दे दिया।उत्तराखंड के मुख्यमंत्री तीरथ सिंह ने जैसे ही महिलाओं की जींस को ले कर औछि बात कही तो तीरथ साहब धरा गए और चहूं दिशाओं से खूब फजीहतकटी। लेकिन तब उषा ठाकुर प्रकट हुई और सीएम के समर्थन में कहने लगी की महिलाओं का रिप्ड जींस पहनना अपशकुन है और महिलाओं को मयार्दा में रहना चाहिए। अपशकुन का तो पता नहीं लेकिन विवाद इतना बढ़ गया कि जनाब तीरथ सिंह रावततो मौका देख कर यूटर्न मार लिए क्योंकि साहब खुद आरएसएस की शाखा में हाफ निक्कर पहन टहला करते थे लेकिन बेचारी उषा जी को फंसा गए। अच्छा तीरथ सिंह भी कम तेजस्वी नहीं हैं, जानकारों का मानना है कि कोरोना की दूसरी वेव के जिम्मेदार जितने बंगाल में राम के नारे लगाने वाले हैंउतना ही यह महाशय भी हैं। सुना है जनाब हरिद्वार कुंभ में देश को कोरोना प्रसाद बंटवाने में खासा मदद कर रहे थे।

ऐसा नहीं कि उषा ठाकुर ऐसा माहौल बनाने वाली कोई नई खिलाड़ी हो, वह तो पहुंची हुई खिलाड़ी है, लगता है भाजपा-आरएसएस से पूरा प्रशिक्षण ले कर ही वह ऐसा कहती हैं।पिछले साल अक्टूबर महीने में इन्होने बिना तथ्यों के मदरसों को देश में आतंक का अड्डा बता डाला। उस से एक महीने पहले सितंबर में इन्होने मध्यप्रदेश में आदिवासियों के हित में लड़ने वाली पार्टी जयस को देशद्रोही बता डाला। यह वहीँ नेता हैं जिन्होंने मुस्लिमों को नवरात्रे में गरबा खेलने की पाबन्दी की मांग की थी।ठहरो, उन की लीला यहीं खत्म नहीं होती, ये पक्की खिलाड़ी हैं इसलिए जानती हैं कि लोगों को उन के इन बयानों से मजा आता है, तभी उन्हें जिताते भी हैं।वह इतनी आत्मविश्वासी हैं कि देश को अंग्रेजों की गुलामी से आजादी दिलाने वाले महापुरुष महात्मा गांधी के हत्यारे नाथूराम गोडसे को सच्चा देशभक्त तक बता डाला है। अच्छा, एक बात यह कि उषा ठाकुर और प्रज्ञा ठाकुर कौन किस का गुरु है यह कहना मुश्किल है लेकिन बातव्यवहार और सोचविचार दोनों के लगभग बराबर ही हैं। ठीक गोडसे के सम्बन्ध में यही बात प्रज्ञा ठाकुर भी कह चुकी हैं, अरे वही प्रज्ञा जिन के कैंसर का इलाज वैसे तो एम्स में चला पर बकौल प्रज्ञा गाय के यूरिन पी कर वह ठेक हुई हैं। खैर मूल यह कि, यह बातें कहतेकहते कैसे एक राज्य की संस्कृति मंत्री के पद तक पहुंच गई हैं, और एक संसद बन गई,अब इसे भाजपा आरएसएस का इनाम ही समझो।

उषा ठाकुर से पहले भी देश के कई दूसरे नेता कोरोना को हराने के अपने नुस्खे बता चुके हैं। और उम्मीद है कि ऐसे प्रकांड धर्मांध आगे भी ऐसे ही नुस्खे जारी रखेंगे, लिहाजा कोई मंत्री भाभीजी पापड़बेच रहा है, कोई डार्क चौकोलेट खाने की बात कह रहा है, कोई गायत्री मन्त्र के ऊपर रिसर्च करवा रहा है, कोई नारे लगा कर भगा रहा है, कोई योग कहकह कर अपना माल बेच रहा है तोकोई गोबर का लेप लगाने की बात कर रहा है। गुजरात में तो दोचार खाकी निक्करधारी नमूनेङ्क माफ कीजिएगा, मेरा मतलब महानुभावतो इतने सीरियस हो गए कि वे कोरोना से बचने के लिए गायभेंस के गोबर और पेशाब में लौटपौट ही हो लिए। ऐसा कहीं और हो सकता है भला?ऐसे ही थोड़े देश में हम बढ़ते कोरोना मामले और गिरती अर्थव्यवस्था में नंबर 1 बन चले हैं। यह चमत्कार सिर्फ भारत में ही हो सकता है जहां विज्ञान को मात ऐसे महानुभाव देते हैं जो ठीक से अपनी डिग्री तक नहीं दिखा पाते हैं। क्यों? क्योंकि हम समझदार लोगों ने ऐसे तेजस्वी नेता जो चुने हैं। ऐसा नहीं है यह नेता अपने ज्ञान का पिटारा यूंही खोलते हैं, बल्कि ये पूरे तरीके से सोचविचार कर ऐसा कहते हैं, क्योंकि इन्हें भरोसा है कि यह ऐसे ही तो कहबोल कर चुनाव जीते हैं।इस बात को क्या हमारे देश के प्रधानमंत्री नहीं जानते? बखूभी जानते हैं तभी तो पिछले सालउन्होंने पूरे देश से पहले थालियां बजवाई और फिर दियाटोर्च जलावाया।लगे हाथ भक्ति में हम ने भी तो घरों के कनस्तर फोड़ डाले, हवनयज्ञ, गौमूत्र और मल को कोरोना का इलाज मान कर प्रधानमंत्री की तरह कोरोना को रामभरोसे छोड़ दिया।

मेरा मानना है कि आज के इस ऐतिहासिक हालत के जिम्मेदार नेता नहीं, जनता ही है। जनता ही है जिसे अस्पताल की नहीं बल्कि मंदिर चाहिए था, जनता ही थी जिसे सुनने वाली सरकार नहीं अड़ियल सरकार चाहिए थी,जनता ही है जिसे खाना नहीं भूख चाहिए था, जनता ही है जिसे समाज में प्यार नहीं एकदूसरे से नफरत चाहिए था, जनता ही है जिसे विकास नहीं विनाश चाहिए था। अब जो जनता को चाहिए था वही नेता बखूबी चाहता था।बबूल का पेड़ बोया है तो आम तो मिलेंगे नहीं, हम ही हैं जिन्होंने ऐसे धर्मभीरुओं को देश संभालने को दिया है तो इस के हिस्से के कांटे भी अब हमें ही नसीब होने हैं इसलिए अब अस्पताल, बेड, औक्सीजन इलाज, नौकरी की चिंता छोड़ महायज्ञ की तैयारी कर लो क्योंकि हम यही डिजर्ब करते हैं।

“ ऐसा नहीं कि उषा ठाकुर ऐसा माहौल बनाने वाली कोई नई खिलाड़ी हो, वह तो पहुंची हुई खिलाड़ी है, लगता है भाजपा-आरएसएस से पूरा प्रशिक्षण ले कर ही वह ऐसा कहती हैं।पिछले साल अक्टूबर महीने में इन्होने बिना तथ्यों के मदरसों को देश में आतंक का अड्डा बता डाला। उस से एक महीने पहले सितंबर में इन्होने मध्यप्रदेश में आदिवासियों के हित में लड़ने वाली पार्टी जयस को देशद्रोही बता डाला।

मेष गुरु की कृपा से भाग्य की बृद्धि होगी।कर्म स्थान का शनि मेहनत के बाद ही सफलता देगा।शनिबार की संध्या में लड्डू गरीबों में बांटे।सेहत का ध्यान रखें।भगवान श्री सूर्यनारायण को अर्ध्य प्रदान करें। शुभ अंक 1 और शुभ रंग लाल है।

बृषभ मन खिन्न रहेगा।बहुत मेहनत के बाद सफलता मिलेगी।जीवन में आनंद का वातावरण बनाने के लिए दुर्गासप्तशती का पाठ करें।विद्यार्थी के लिए और प्रतियोगिता परीक्षा के लिए अनुकूल अवसर हैं। शुभ अंक 2 और शुभ रंग सफेद या ऑफ वाइट।

मिथुन स्वास्थ्य का ध्यान रखें।प्रतिष्ठा तो मिलेगी।लेकिन धनागमन में थोड़ी परेशानी होगी।अष्टम शनि के लिए चांदी का टुकड़ा अपने पास रखें।दशम सूर्य आपके जीवन में विशेष कृपा बनाएगा।मा के महालक्ष्मी रूप की पूजा करें। शुभ अंक 3 रंग हरा और लाल।

कर्क सेहत का ध्यान रखना बहुत जरूरी है।घर के स्त्री पक्ष का सेहत चिंता का कारण बनेगा।प्रतियोगिता परीक्षा के लिए अनुकूल समय है।हनुमान जी की आराधना करें।बजरंगबाण का पाठ करें। शुभ अंक 7। शुभ रंग- गुलाबी

सिंह मत्र के वेश में छुपे शत्रु से सावधानी की जरूरत है।श्री लुक्ष्मी नारायण की पूजा से धन लाभ होगा।संध्या प्रहर घी का चतुर्मुख दीपक अपने घर के मुख्यद्वार पर प्रतिदिन जलाए।उत्सव और मांगलिक कार्य की बातें करने का उपयुक्त समय है। शुभ रंग नीला। शुभ अंक 8।

कन्या पंचम शनि करियर के क्षेत्र में अच्छे अवसर देंगे।विद्या व बुद्धि से सफलता प्राप्त होंगे।गुरु के प्रभाव से लीवर या पेट की समस्या रहेगी। महामृत्युंजय मंत्र का जाप या श्रवण करें। शुभ रंग पीला। शुभ अंक 3।

बृश्चिक आपके आराध्य श्री लक्ष्मी नारायण की कृपा से धन आगमन का योग है।भाई के लिए समय अनुकूल नही है।बाएं सुर बाले पीले गणपति का तस्बीर घर में रखें।प्रतिष्ठा व सम्मान का योग है। शुभ रंग सफेद। शुभ अंक 5।

तुला भाग्य का राहु राजनीतिक व सामाजिक क्षेत्र में नए आयाम स्थापित करेंगे।गुरु की कृपा से शत्रु व रोग का नाश होगा।शनि माता के स्वास्थ्य के लिए ठीक नही है।चांदी के पात्र से गाय का कच्चा दूध नदी में बहाएं।अनुकूलता बनी रहेगी। शुभ रंग लाल। शुभ अंक 4।

मकर जिद्द छोड़ना होगा।बाएं हाथ की कलाई में पीला धागा बांधने सेनुक्सान कम होगा।राहु अचानक व विचित्र परिणाम दे सकता है।कालभैरव जी की पूजा करें। शुभ रंग सफेद। शुभ अंक 7।

कुम्भ झूठ से नफरत होगी।झूठे लोगों से सामना होगा।लाभ होंगे लेकिन मन के अनुकूल नही।लेकिन मान सम्मान बढेगा।मंगल कार्य के लिए आगे बढ़े।आवश्यकता को कम करें।चोट चपेट से बचना होगा।हल्दी का गांठ अपने पर्स में रखें।ॐ नमो नारायणाय का जाप करें। शुभ रंग-गुलाबी। शुभ अंक 8।

धनु धन का आगमन होगा।लेकिन सूर्यास्त के बाद दूध व दही का सेवन नही करें।आत्मभिमान से बचना होगा।अहंकार को हावी नही होने दे।हनुमान चालीसा का पाठ करें। शुभ अंक 6। शुभ रंग हरा।

मीन सूर्य की कृपा से पद व प्रतिष्ठा की बृद्धि होगी।गुस्सा पर नियंत्रण रखें।दुश्मन से सचेत जरूरी है।नजर बचना होगा।घर की शांति राहु के कारण नियंत्रण में नही रहेगा। सफेद कपड़े में सिंधा नामक घर के मुख्य द्वार पर बांधे। शुभ रंग -हरा। शुभ अंक 9।

मडुआ की रोटी

सुनीता कौर

सामग्री

- एक कप रागी का आटा
- एक मध्यम प्याज बारीक कटा हुआ
- एक हरी मिर्च बारीक कटी हुई
- 2-3 करी पत्ता बारीक कटा हुआ ड्3 से 4 टेबल स्पून बारीक कटा हुआ
- हरा धनिया
- तेल शैलो फ्राई के लिए
- गुनगुना पानी जरूरत अनुसार ड्नमक स्वाद अनुसार

बनाने की विधि

- एक परात में रागी का आटा, बारीक कटा हुआ प्याज, बारीक कटी हुई हरी मिर्च, बारीक कटा हुआ करी पत्ता, बारीक कटा हुआ हरा धनिया और नमक ले ।
- सभी सामग्री को मिला ले । इस मिश्रण में धीरे-धीरे गुनगुना पानी जरूरत अनुसार डालें और चपाती के लिए थोड़ा ज्यादा नरम और लचीला आटा गूथ लें।
- आटे को ढककर 15 से 20 मिनट के लिए सेट होने के लिए रख दें।
- अब आटे की एक समान लोईयां बना लें।
- बटर पेपर वाली मीनिंग फॉर या केले का पत्ता या प्लास्टिक शीट का एक चौकोर टुकड़ा ले। उसके ऊपर तेल की थोड़ी बूंदें छिलके और एक समान फैला दें।
- इसके ऊपर आटे की लोई रखें,हाथ की उंगली को पानी से भिगो लें और बाद में लोई को जितना हो सके उतना पतला थपथपाए, और रोटी से थोड़ा मोटा रखें।
- थपथपाई रोटी में बीच-बीच में छेद करें इससे भाप आसानी से निकल जाती जाएगी और रोटी भी कुरकुरी बनेगी।
- रोटी को तवा या नॉन स्टिक तवा को मध्यम आंच पर गर्म करें उसके ऊपर पानी की कुछ बूंदें डाले और उसे सूखने तक कुछ सेकंड तक प्रतिक्षा करें। प्रत्येक रोटी बनाने से पहले यह प्रक्रिया दोहराए है।
- अब तवा की सतह पर तेल लगा दे और थपथपाई हुई रोटी को संभाल कर उठाएं और तवे पर डालें इसके पश्चात रोटी के बाहरी तरफ हल्का ऑइल डालें ।
- एक तरफ से चोटी सीखने पर उल्टे की सहायता से छोटी को दूसरी तरफ से सीखने दोनों तरफ से रोटी को ब्राउन होने तक सीखें के बाद तवे से रोटी को उतार लें।
- बनी हुई रोटियों को वॉलपेपर या कपड़े में ढक कर रखें इससे रोटिया ज्यादा देर तक मुलायम बनी रहती हैं।
- अब सर्विस प्लेट में रोटी को निकाले और भांग की चटनी, नारियल की चटनी, सांभर या सब्जी अचार के साथ गरमा गरम परोसें।

पहाड़ी भाँग की चटनी

चटनी का नाम सुनते ही आम की चटनी याद आती है लेकिन उत्तराखंड में भाँग की चटनी भी बनाई जाती है उत्तराखंड के लोग भांग के बीजों से चटनी बनाते हैं।

- न्यूट्रिशन फैक्टर
- 57 कैलोरी / चम्मच
- न्यूट्रिशन फैट / चम्मच

सामग्री

- भांग के बीज 50 ग्राम
- हरी मिर्च 1
- नींबू का रस 4 छोटे चम्मच
- हरा धनिया (कटा हुआ) 3 छोटे चम्मच
- हरा पुदीना 3 छोटी चम्मच
- नमक 1/2 चम्मच
- साबुत लाल मिर्च 2

ऐसे बनाएं

- भांग के बीज को भूलकर अलग रखें अब साबुत लाल मिर्च और जीरा भी भूलने
- अब भुने हुए भांग लाल में जीरे को पीस लें
- अब इसमें पुदीना, धनिया, हरी मिर्च मिला ले ।पीस जाने के बाद इसमें नमक और और नींबू का रस मिलाएं
- अब आपकी भांग की चटनी बनकर तैयार है आप इसे चपाती, परांठे, नान या चावल किसी के भी साथ परोस सकते हैं।

मुझे भारत में बने टीकों पर भरोसा है : विद्या बालन

बॉलीवुड अभिनेत्री विद्या बालन, जिन्हें वर्तमान में अमित मसुरकर की 'शेरनी' में उनकी भूमिका के लिए सराहा जा रहा है, ने स्वीकार किया कि कोरोनावायरस महामारी ने हमारे स्वास्थ्य कर्मियों पर बहुत अधिक दबाव और तनाव डाला है। विद्याा ने आईएएनएस लाइफ को बताया, इसके बावजूद, वे लगातार काम करना जारी रखते हैं, हमें सबसे अच्छी देखभाल देते हैं - एक वास्तविकता जिसे हम अक्सर तब तक नहीं देखते जब तक कि हम किसी अस्पताल या स्वास्थ्य सुविधा में नहीं जाते। लोकप्रिय अभिनेत्री ने देश के सभी डॉक्टरों और स्वास्थ्य कर्मियों के समर्थन में अपनी आवाज देने के लिए विक्स के साथ हाथ मिलाया है। ब्रांड ने अपने हैशटैग टच ऑफ केयर अभियान के माध्यम से, हाल ही में स्वर्गीय ज्ञानेश्वर भोसले की निस्वार्थ देखभाल की प्रेरक यात्रा पर एक दिल को छू लेने वाली फिल्म लॉन्च की।

भोसले ने यह सुनिश्चित करने में कोई कसर नहीं छोड़ी कि महामारी के दौरान कई कम भाग्यशाली बच्चों को जीवन रक्षक चिकित्सा सहायता मिले। एक डॉक्टर जिसने कोविड -19 से अपनी जान गंवा दी, भोसले अपने पीछे अपनी पत्नी, बच्चों और अपना खुद का बाल चिकित्सा अस्पताल बनाने के अपने सपना छोड़ गए हैं।

फिल्म भोसले और उनके जैसे सैकड़ों डॉक्टरों को श्रद्धांजलि देती है जिन्होंने महामारी के दौरान अपनी जान गंवाई और जरूरतमंद कई लोगों को अपना 'टच ऑफ केयर' दिया।

विद्या ने साझा किया, मैं भोसले की पत्नी और परिवार को उनके निस्वार्थ काम का समर्थन करने के लिए सलाम करता हूं! उन्होंने हमें दिखाया कि कैसे देखभाल का एक सरल कार्य उन लोगों के जीवन को बदल सकता है, जिन्हें इसकी आवश्यकता है। अपनी अविश्वसनीय भावना के साथ, भोसले ने महामारी के दौरान दिन-रात काम किया, और कई अन्य डॉक्टरों और स्वास्थ्य कर्मियों की तरह, हमें भी जल्द ही छोड़कर चले गए। मैं कामना करता हूं कि श्रीमती भोसले श्री भोसले के सपने को साकार करेंगी।

आईएएनएस लाइफ से बात करते हुए, विद्या भारतीयों को नोवेल कोरोनावायरस के खिलाफ टीका लगवाने की वकालत करती हैं, ताकि हम सभी अपने स्वास्थ्य देखभाल प्रणालियों और श्रमिकों पर बोझ को कम करने के लिए अपनी ओर से कुछ कर सकें।

विद्या ने कहा, मुझे भारत में बने टीकों पर भरोसा है, और सभी से सामाजिक दूरी बनाए रखने और नियमित रूप से हाथ धोने का आग्रह करती हूं। मुझे उम्मीद है कि हमारे पूरे देश को टीका लग जाएगा। जल्द ही और हम इस वायरस से जोश के साथ लड़ने में सक्षम होंगे।

के.बी.पी.एल

देश का डीजल

प्रदूषण मुक्त

सस्ता दाम

माइलेज ज्यादा

KRRISHAY BIOFUELS

(Registered by Govt. of India)

(AN ISO 9001:2015) CERTIFIED COMPANY)
(AN ISO 14001:2015) CERTIFIED COMPANY)
(AN ISO 45001:2018) CERTIFIED COMPANY)

बिहार, झारखण्ड, पश्चिम बंगाल में प्रखंड स्तर पर पम्प खोलने की योजना

Corporate Office :

318, Maharaja Kameshwar Complex, Fraser Road
Infront Budh Smriti Park, Patna-800001
Website : www.krrishaybiofuels.com
Email : krrishaybiofuels@gmail.com
Mob. No. : 7541086226, 9709707583

FORD HOSPITAL, PATNA

A NABH Certified Multi Super-Speciality Hospital

PATNA

A 105-Bedded Hospital Run by Three Eminent Doctors of Bihar

उत्कृष्ठ एवं अपनत्व की अनुभूति

Dr. Santosh Kr.

Dr. B. B. Bharti

Dr. Arun Kumar

PATIENT SAFETY & QUALITY OF CARE
NABH
PRE ACCREDITED

Best Promising Multi Speciality Hospital 2018 Bihar.

हृदय रोग चिकित्सा के लिए बेहतरीन टीम

2nd Multi Speciality NABH Certified Hospital of Bihar

फोर्ड हॉस्पीटल में उपलब्ध सेवाएं

क्लीनिकल सर्विसेस

- कार्डियोलॉजी
- क्रिटीकल केयर
- न्यूरोलॉजी
- स्पाईन सर्जरी
- नेफ्रोलॉजी एवं डायलेसिस
- ऑर्थोपेडिक एवं ट्रॉमा
- ओब्स एवं गॉबनेकोलौजी
- पेडिएट्रिक्स
- पेडिएट्रिक सर्जरी
- साइचिरेट्री एवं साइकोलॉजी
- रेस्पिरेट्री मेडिसिन
- यूरोलॉजी
- सर्जिकल ऑन्कोलौजी

Empaneelled with CGHS, ECR, CISF, NTPS, Airport Authority, Power Grid & other Leading PSUs, Bank, Corp. & TPS

New Bypass (NH-30) Khemnichak, Ramkrishna Nagar, Patna- 27
Helpline ; 9304851985, 9102698977, 9386392845, Ph.: 9798215884/85/86
E-mail : fordhospital@gmail.com web. : www.fordhospital.org